31 अक्टूबर, 1997 - प्रवेशांक 10 रूपये

राष्ट्रीय विचार पत्रिका

क्या सरदार पटेल भारत विभाजन के लिए उत्तरदायी रहे हैं ?

'50 Years of Independence'

हिन्दी साहित्य में दलित चेतना

महिला राज में महिलाएं त्रस्त

राष्ट्रीय विचार मंच, पटना

राष्ट्रीय विचार मंच की कार्यकारिणी के निर्वाचित पदाधिकारी एवं सदस्यवृन्द

क्र.सं.	नाम	पदनाम	पद	पता	दूरभाष
1.	सर्वश्री जियालाल आर्य	भा.प्र.से.	अध्यक्ष	25, बेली रोड, पटना-1	282030
2.	बालेश्वर दास	भा.प्र.से.	उपाध्यक्ष	रोड नं.23, श्रीकृष्णनगर, पटना-1	234372
3.	डा. एस. एफ. रब	मुख्य पुस्तकाध्यक्ष	उपाध्यक्ष	ए.एन. सिन्हा इंस्टीच्यूट, पटना-1	232415
4.	सिद्धेश्वर	समाज सेवी	महासचिव	'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1	228519
5.	मनोज कुमार	वरीय लेखा परीक्षक	सं. सचिव	10 डी, आकाशवाणी कॉलोनी,पटना-1	233189
6.	संजय कुमार मंगलम्	सामाजिक कार्यकर्ता	सं. सचिव	चाँदमारी रोड, पटना-20	368618 (PP)
7.	शिवकुमार सिंह	निदेशक	सं. सचिव	ग्राफटेक कम्पयुटर, रोड नं.1,पोस्टलपार्क, पटना	
8.	रवीन्द्र प्रसाद यादव	अधिवक्ता	सं. सचिव	बापू पथ, न्यू पुरन्दरपुर, पटना-1	
9.	श्रीमती मंजु मलिक 'मनु'	संस्कृतिकर्मी	सं. सचिव	दल्लूचक, खगौल, पटना	427156
10.	रामप्रताप सिंह	पूर्व प्रधान सहायक	कोषाध्यक्ष	सरस्वती सदन, जयप्रकाश नगर, पटना-1	
11.	निरंजन कुमार सिन्हा	अधिवक्ता	संगठन सचिव	गुरूसहाय लॉज, नाला रोड,पटना-3	655550
12.	विशुनदेव प्रसाद	पूर्व लेखाकार	कार्या.सचिव	छपरा कॉलोनी, पटना-1	
13.	गोपी वल्लभ **सहाय**	कवि	सदस्य	रोड नं.14, क्वार्टर नं.8, गर्दनीबाग, पटना	251684
14.	राय़ प्रभाकर प्रसाद	साहित्कार	सदस्य	8 बी., शांति विहार, बेली रोड,पटना-14	284080
15.	प्रो. युवराजदेव प्रसाद	निदेशक	सदस्य	ए.एन. सिन्हा इंस्टीच्यूट, पटना-1	652865
16.	जनक प्र. सिंह	पूर्व वरीय सचिव	सदस्य	छात्रसंघ लेन, मीठापुर, पटना-1	228441
17.	बच्चू नारायण	पूर्व अनुभाग अधिकारी	सदस्य	मगध कॉलोनी, कुर्जी, पटना-10	261607
18.	सतीश सिंह	अधिवक्ता	सदस्य	प्रकाश टॉकिज के पीछे,फुलवारीशरीफ,पटना	251263
19.	रवीन्द्र कु. सिन्हा	प्रशा. पदाधिकारी	सदस्य	आाई. ओ.सी.गेट, सिपारा, ढेलवाँ, पटना-1	221591
20.	राजकुमार प्रेमी	अनुभाग अधिकारी	सदस्य	रमना रोड,पटना-4	
21.	प्रो. अभिमन्यु प्र. मौर्य	संपादक	सदस्य	रामलखन रोड, पुराना जक्कनपुर, पटना-1	221405
22.	प्रो. रामपदारथ सिंह	प्राध्यापक	सदस्य	संदलपुर, शनिचरा स्थान,पटना-6	
23.	राकेश शांतिप्रिय	यांत्रिक अभियन्ता	सदस्य	पटेल कॉलोनी, शनिचरा स्थान, पटना-6	657185
24.	नसीम अहमद	सामाजिक कार्यकर्त्ता	सदस्य	बी-8, रिभरभियू कॉलोनी, आलमगंज, पटना	665455
25.	बिपिन बिहारी कुमार	कस्टम इन्सपेक्टर	सदस्य	138,रोड नं.-23 श्री कृष्णनगर, पटना-1	235494
26.	लक्ष्मीनारायण झा	कार्यपालक पदा.	सदस्य	'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1	228519
27.	मृत्युंजय कुमार	युवानेता	सदस्य	गुरूसहाय लॉज, नाला रोड, पटना-3	664927
28.	श्रीमती शशि	लेखिका	सदस्य	'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1	228519
29.	अनिल कुमार 'उद्योगी'	सामाजिक कार्यकर्त्ता	सदस्य	बैंक मैन्स कॉलोनी, चित्रगुप्त नगर, पटना-20	367944
30.	राजेश पासवान	टेकनिसियन	सदस्य	पुरन्दरपुर, पटना-1	
31.	अरूण कु. गौतम	गीतकार	सदस्य	ग्रा.-पत्रां.-अराप, भाया-बिक्रम, पटना	

पत्रिका परामर्शी

प्रो० रामबुझावन सिंह - बाकर गंज बजाजा, पटना-3, दूरभाष - 664362

मो० अयुब खाँ - 42, फ्रेजर रोड, पटना-1, दूरभाष-231708

कविवर गोपी वल्लभ सहाय - 8/14, गर्दनीबाग, पटना-2, दूरभाष-251684

बांके नन्दन प्रसाद सिन्हा - 8 एम/58, बहादुरपुर हाऊसिंग कॉलोनी, पटना-2

डा० साधु शरण - गीतिका, रोड नं.2, केसरी नगर, पटना-23, दूरभाष-287204

राष्ट्रीय विचार
पत्रिका

राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित मंच का वैचारिक मुख्य-पत्र

वर्ष 1997-प्रवेशांक-31 अक्टूबर,1997

पत्रिका परिवार

संरक्षक :
मान्य. न्यायाधीश श्री बनवारी लाल यादव
पद्मश्री डा. श्याम सिंह शशि
श्री जियालाल आर्य, भा.प्र.से.

प्रधान संपादक :
सिद्धेश्वर

प्रबंध संपादक :
डा. एस. एफ. रब

संपादक :
डा. हीरालाल सहनी

सह संपादक :
कामेश्वर मानव

संपादन सहायक :
मनोज कुमार, शिवकुमार सिंह

संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय :
'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना - 800 001

विज्ञापन व प्रसार प्रबंधक :
राम प्रताप सिंह

सहायक प्रबंधक :
अरूण कुमार गौतम

साज-सज्जा :
सुतेन्द्र कुमार, एन. रहमान

कार्यालय सहायक :
विशुनदेव प्रसाद, दिलिप कुमार

मूल्य : एक प्रति 10 रूपये

आजीवन सदस्य : एक हजार रूपये

प्रकाशक :
राष्ट्रीय विचार मंच
'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-800 001
दूरभाष : 228519

कम्पोजिंग :
कोरल कम्प्यूटर प्रिन्ट
फ्रेजर रोड, पटना, फोन : 231708

मुद्रक :
वैशाली प्रिन्टर्स
श्रीकृष्णपुरी, पटना, फोन : 220568

अन्दर के पन्नों पर

संपादकीय 2

राजनीतिक नजरिया 3-8
- क्या सरदार पटेल भारत-विभाजन के उत्तरदायी रहे हैं ? – डा. राठौर
- लोकतंत्र के बनते-बिगड़ते चेहरे – डा. नारायण दास
- भारतीय राजनीति में जातिवाद – प्रो. मुनेश्वर यादव
- आज की राजनीति - एक समस्या और समाधान – नंदकिशोर राय
- बसपा-भाजपा गठबंधन की कचउमर निकल गयी

समाज जगत 9-10
- समाज के उन्नयन में हमारा उत्तरदायित्व – प्रो. रामबुझावन सिंह
- पिछड़े मुस्लिम की व्यथा-कथा – डा. एस.एफ.रब.

राष्ट्र 11-14
- राष्ट्रीय नवजागरण के रा. कवि मैथिली शरण गुप्त – डा. खुशी लाल मंडल
- राष्ट्र के प्रति छात्रों का कर्तव्य – गंगा प्र. 'गंगेश'
- केन्द्रीय पांचवे वेतन आयोग की सिफारिशे लागू
- राष्ट्रीय भावना का उद्भव, विकास एवं पतन – डा. हरिहर नाथ प्रसाद
- पर्यावरण संरक्षण : हम सबका कर्तव्य – शिवाजी पासवान

समाचार 16-18
- महारानी एलिजाबेथ की भारत-यात्रा
- बिहार में नून से सस्ता खून : नीतीश
- सी.बी.आई अदालत में लालू प्र. की पेशी
- सरकार के कुछ विवेकहीन निर्णय
- अरुंधती की कलम से देश गौरवान्वित
- चंदन तस्कर वीरप्पन को क्या माफी दी जायेगी ?
- मध्य प्रदेश में भारत का वार्षिकोत्सव

बिहार पर विशेष 19-23
- स्वतंत्रता की स्वर्ण जयंती : बिहार कहाँ खड़ा है ?
- महिला राज्य में महिलाएँ त्रस्त
- वैशाली गणतंत्र के उल्लेखनीय पहलू – विपीन विपलवी
- बिहार के जन जाति विरहोर – जानकी प्र. केवट
- सचिवालय कर्मियों का आंदोलन
- स्वतंत्रता संग्राम में भोजपुर की भूमिका – हृषिकेश पाठक

हास-परिहास/अपने आस-पास 24

विचार 25
- समता पार्टी के समक्ष एक सवाल
- चाचा भतीजे की दोस्ती किस करवट लेगी ?

साहित्य जगत 26-32
- 'रेणु' की कथाओं में आंतरिक लयात्मक्ता – डा. रवींद्र उपाध्याय
- हिन्दी साहित्य में दलित चेतना – डा. ब्रहमदेव प्रसाद कार्यी
- दलित साहित्य का सच – सिद्धेश्वर
- संस्कृत शब्द का रहस्यार्थ – जागेश्वर महतो

काव्यांजलि 34-37
- नालंदा, दलित मानवता, वात्सल्य, चेतावनी, तू मेरी भाषा हो, रहस्योद्घाटन, रैली, गजल, श्रम की पूजा, यादगार, गीत, नेह टँगती, गजल

कला-संस्कृति 39
- मिथिला की लोक कलाएँ – जितेन्द्र कारजी

नारी जगत 40
- महिलाओं में नशा प्रवृति – अरविंद कुमार मंडल

न्याय जगत 41-42
- स्वतंत्र भारत की न्याय पालिका – कामेश्वर मानव

विज्ञान प्रगति 43
- हृदय वाल्व के संकरेपन को दूर करने की नयी विधि, हृदय रोग के उपचार में नये अनुसंधान

सेहत सलाह 44
- शिवाम्बू चिकित्सा-पद्धति – डा. रामव्रत प्रसाद

गतिविधियाँ 45-47
- मंच के क्रिया कलाप पर एक नजर – मनोज कुमार

निधन / श्रद्धांजलि 48

संस्मरण 49
- स्वभाव के निश्छल कवि तोमर – सिद्धेश्वर

उपभोक्ता मंच 50
- उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम की उपादेयता – सुधीर रंजन

समीक्षा 51-53
- काव्य संग्रह "प्रहरी", "भाषा-भारती", "यादें", "साठी"

फिल्म 55
- भारतीय सिनेमा पथ-भ्रष्ट – कपिलदेव राय 'प्रभाकर'

लेखक-विचारों से पत्रिका-परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं

संपादकीय

राष्ट्रीय विचार मंच का मुख्य पत्र ' राष्ट्रीय विचार' पत्रिका के प्रवेशांक आप सुजान पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें बेहद प्रसन्नता हो रही है । ऐसे दौर में जब एक-से-एक हिन्दी पत्रिकाओं के प्रकाशन बन्द होने पर लोग चिन्तित हैं मंच ने इस पत्रिका का प्रकाशन कर अपने साहस का परिचय दिया है । स्पष्ट है कि इसने अपने सदस्यों एवं सुधी पाठकों के सहयोग के सहारे ही यह कदम बढ़ाया है ।

पत्रिका ने साफ-साफ और निर्भिकता से कहने का संकल्प लिया है । देश और समाज के उत्थान के लिए खरी से खरी तथा सही बातें कहने में यह पत्रिका कोई कोताही नहीं करेगी, इस बात का भरोसा हम आपको दिलाते हैं क्योंकि हमारा विश्वास है कि प्रजातन्त्र का भविष्य तभी उज्ज्वल होगा जब पत्र-पत्रिकाएं निष्पक्ष, निडर और मजबूत हों ।

राष्ट्रीय मुख्य धारा से जो लोग अपने आपको अलग-थलग महसूस कर रहे हैं अथवा आजादी की आधी शताब्दी बीत जाने के बाद भी जिनकी झोपड़ियों में विकास की किरणें अभी तक नहीं जा पाई हैं उनमें चेतना जागृत करने तथा आम जन-मानस को उद्वेलित करने का हर संभव प्रयास पत्रिका करना चाहती है जिसके लिए पाठकों एव रचनाकारों का सहयोग अपेक्षित है । समाज की रूढ़ियों एवं अन्धविश्वासों पर हमला करने, राजनैतिक दलों एवं उनके नेताओं की पोले खोलने तथा समाज विरोधी तत्वों एवं देशद्रोही ताकतों के खिलाफ आवाज उठाने में यह पत्रिका कंजूसी नहीं करेगी, यह आश्वासन तो हम आपको दे ही सकते हैं ।

मंच की ऐसी धारणा है कि यह पत्रिका जीते-जागते जन की गरीबी, गैर-बराबरी, शोषण और संघर्ष, दु:ख-दर्द और दमन के विरूद्ध आम आदमी को वाणी दे, आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के सामूहिक नरसंहार, औरतों की हत्या एवं बलात्कार आदि इसके लेखक की पीड़ा बने । यह कहने की आवश्यकता नहीं कि असली भारत गावों-देहातों में बसा है अतएव वहाँ की जनता को जगाने के लिए अन्ध कार में प्रकाश की हल्की-सी किरण, इस पत्रिका के माध्यम से वहाँ जाय । इसमें भी सदस्यों की जिम्मेदारी सर्वोपरि है ।

आप इस बात से सहमत होंगे कि आज हमारे सामने वैचारिक संकट अपने-असली रूप में सारे नकाब झाड़कर खड़ा है । वैचारिक संकट का सबसे दरिद्र और दयनीय प्रदर्शन संस्कृति और साहित्य के ताबेदारों द्वारा ही किया जाता रहा है । मौलिक चिंतन की अनुपस्थिति और बड़े सामाजिक आन्दोलन के न होने के पीछे संभवत: धर्म-प्राण संस्कृति है, जो भाग्य, भगवान, अवतारों में लौ लगाना सिखाती है । सभी वर्गों और वर्णों में इसके संस्कार समा गए हैं । फलस्वरूप सामाजिक गतिशीलता कुचल दी गयी है । प्रयास यह होगा कि वैचारिक धरातल पर झकझोरने और आन्दोलन की मानसिकता तैयार करने में यह पत्रिका अहम्‌ भूमिका निभाएगी । देश के संचालकों में 'सूखे बाढ़ में अग्नि की तरह सोयी 'सुप्त चेतना को विचारों के माध्यम से जागृत करने और संघर्ष तथा रचना की दिशा में मोड़ने का कार्य यह पत्रिका कर सकती है क्योंकि यह मंच एक समग्र साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं राजनीतिक मुद्दों पर आधारित है । इसलिए प्रबुद्ध जनों को नकली बौद्धिक कुहासे वाले खोल से बाहर लाकर, उनके सोचने का अन्दाज बदलकर यह पत्रिका वैचारिक क्रांति ला सकती है ।

लौह पुरूष सरदार वल्लभ भाई पटेल के 122वें जयंती-समारोह के पुनीत अवसर पर प्रकाशित इस पत्रिका के प्रवेशांक को जब हम आपके सामने प्रस्तुत कर रहे हैं पूरा राष्ट्र अपनी आजादी की स्वर्ण जयंती मना रहा है जो किसी भी राष्ट्र के लिए गौरव की बात है । इस संदर्भ को अपने इस अंक में हमने रेखांकित करने का प्रयास किया है । आजादी के इसी संदर्भ को और प्रतिनिधित्व देने के लिए काव्यांजलि एवं अन्य आलेखों के स्तम्भ में कई रचनाकारों की राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित रचनाएं शामिल की गई हैं ।

उच्चतम न्यायालय के वरीय अधि वक्ता एवं मंच के संपोषक सदस्य तथा पत्रिका के संरक्षक माननीय न्यायाधीश श्री बनवारी लाल यादव की प्रेरणा से प्रकाशित इस पत्रिका को अमली जामा पहनाने में इस बार मेरी अस्वस्थता भी बाधक रही है । बड़ी जल्दी में इस पत्रिका को हर सूरत में निकालने के लिए अपने पेट की पीत-थैली में पड़े अनगिनत पत्थरों का ऑपरेशन करवाकर बाहर निकालना भी आवश्यक था । इसके अतिरिक्त साधनों की कमी भी हमारी एक सीमा बन गयी । यह तो कहिए कि इस पहाड़ को उठाने के लिए पर्याप्त उर्जा स्रोत की कमी के बावजूद पत्रिका के सभी सहयोगियों में सर्वश्री डा. हीरा लाल सहनी, कामेश्वर मानव, रामप्रताप सिंह, मनोज कुमार, डा. एस.एफ.रब, डा. साधुशरण, लक्ष्मी नारायण झा, रंजन अरूण कुमार गौतम, शिवकुमार तथा दिलीप ने रात-दिन एक करके इसे मूर्त रूप दिया । मंच की ओर से मैं इन सबों के प्रति कृतज्ञ हूँ । इनके अतिरिक्त रचनाकारों, विज्ञापन दाताओं, सदस्यों एवं शुभचिन्तकों की सक्रिय भागीदारी रही, हम उनके आभारी हैं ।

❑ सिद्धेश्वर

क्या सरदार पटेल "भारत-विभाजन" के लिए उत्तर दायी रहे हैं ?

❑ डा. जगदीश सिंह राठौर

(भारतीय स्वतन्त्रता-संग्राम के शिखर सेनानी मौलाना अबुल कुलाम आजाद की सुप्रसिद्ध पुस्तक 'इन्डिया विन्स फ्रीडम' के उन तीस पृष्ठों में, जो उनकी इच्छानुसार उनके निधन के तीस वर्ष बाद वर्ष 1996 में खुले थे, भारत-विभाजन को लेकर लौह पुरूष सरदार पटेल के संबंध में जो भ्रान्तियाँ उत्पन्न हुई उसका खुलासा किया है डा० जगदीश सिंह राठौर ने अपने विब्दतापूर्ण इस आलेख में । उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिला स्थित एक स्नातकोत्तर महाविद्यालय के समाजशास्त्र विभागाध्यक्ष डा० राठौर ने तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में लौहपुरूष पर लगाए गए आक्षेप को पूर्णत: निराधार, भ्रामक एवं असत्य प्रमाणित किया है जिसे आप सुजान एवं संवेदनशील पाठकों तक पहुंचाना मंच के पत्रिका-परिवार ने सभीचीन समझा है और वह भी सरदार पटेल की 122वीं जयंती के इस पुनीत अवसर पर–प्र० संपादक)

गुजरात में एक किसान परिवार में जन्में, भारतीय संस्कृति के साकार प्रतीक, लौह पुरूष सरदार वल्लभभाई पटेल अपने व्यक्तित्व में दुर्जय इच्छाशक्ति, अदम्य आशावादिता, नि:सीम आदर्शनिष्ठा, उत्कट साहस, असाधारण स्पष्टवादिता, चारित्रिक दृढ़ता, नीति कौशलता, अहंकार हीनता, बौद्धिक दिग्गजता, अविश्रान्त राष्ट्रकर्मिता आदि अद्वितीय गुणों को समेटे हुए भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान एक शीर्षस्थ सेनानी के रूप में भारतीय राजनीति के क्षितिज पर छाए रहे और आज भी भारतीय मानस पटल पर उनकी अमिट छाप अंकित है ।

यह तथ्य ज्ञातव्य है कि उनके समकालीन राजनेता मौलाना अबुल कलाम आजाद ने अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक "इंडिया विन्स फ्रीडम" के उन तीस पृष्ठों में, जो तीस वर्ष पश्चात अब खुले हैं, यह रहस्य उदघाटित किया है कि सरदार पटेल "भारत-विभाजन" के लिये उत्तरदायी रहे हैं । इस प्रसंग पर सांगोपागं विचार करना आवश्यक प्रतीत होता है।

ध्यातव्य है कि अंतरिम सरकार के गठन के समय जब मुस्लिम लीग ने सरकार में सम्मिलित होने का निर्णय लिया, लार्ड वेवल का सुझाव था कि मुस्लिम लीग को पूर्ण सहमति के आधार पर कोई महत्वपूर्ण विभाग सौंपा जाय क्योंकि कैवनेट मिशन योजना के अंतर्गत यह तय हुआ था कि शान्ति व्यवस्था बनाये रखने का दायित्व प्रत्येक प्रांतीय सरकार का होगा । इस प्रकार जहां मुस्लिम बहुसंख्यक होंगे वे हिन्दू अल्पसंख्यकों को और जहां हिन्दू बहुसंख्यक होंगे वे मुस्लिम अल्पसंख्यकों की सुरक्षा के लिये बचनबद्ध होंगे । इसी सन्दर्भ में लार्ड वेवल ने सुझाव दिया था कि लीग को गृह विभाग सौंप दिया जाये । मौलाना आजाद केवल के दृष्टिकोण के कठोर समर्थक थे । अत: मौलाना आजाद कहते हैं कि जब उन्होंने तत्कालीन गृहमंत्री सरदार पटेल के समक्ष गृहमंत्रालय मुस्लिम लीग को सौपने का सुझाव रखा तो सरदार पटेल ने अपनी हठधर्मिता के कारण इसे सफल नहीं होने दिया । मौलाना आजाद लिखते हैं कि सरदार पटेल ने यहां तक कह दिया कि "वह गृहमंत्रालय त्यागने की अपेक्षा सरकार ही त्याग देंगे" । अत: रफी अहमद किदवई के सुझाव, जिसका सरदार पटेल ने समर्थन किया था, पर मुस्लिम लीग को वित मंत्रालय देने का तानावाना बुना गया जो कालान्तर में भारत विभाजन का कारण बना । इस प्रकार मौलाना आजाद की दृष्टि में सरदार पटेल भारत के विभाजन के लिए उत्तरदायी है । उन्होने यहां तक लिखा हैं कि "मुझे इस बात से आश्चर्य हुआ कि पटेल अब द्विराष्ट्र- सिंद्धात के मुहम्मद अली जिन्ना की तुलना में कही अधिक पक्के समर्थक बन गये हैं । जिन्ना ने विभाजन का झंडा भले ही उठाया हो लेकिन अब उसे लेकर पटेल ही चल रहे थे । उनके शब्दों में "लार्ड माउण्ट बेटन के विभाजन के सुझाव से पहले ही सरदार पटेल के मस्तिष्क में विभाजन का विचार था ।वास्तव में माउण्टबेटन के प्रस्ताव से सरदार पटेल विभाजन के पचास प्रतिशत पक्षधर थे क्योंकि उन्हें यह विश्वास हो गया था कि वह मुस्लिम लीग के साथ काम नहीं कर सकते । उन्होने स्पष्ट रूप से कहा भी था कि वह भारत का एक ही हिस्सा लेने को तैयार हैं वशर्ते कि उन्हें मुस्लिम लीग से छुटकारा मिल जाये । इसीलिये यह कहना अनुचित नहीं होगा कि सरदार वल्लभ भाई पटेल भारत में विभाजन की आधारशिला रखने वाले थे ।

मौलाना आजाद जैसे राष्ट्र भक्त द्वारा सरदार पटेल पर लगाये गये ऐसे आक्षेप पढ़कर निश्चय ही दु:ख और आश्चर्य होता हैं क्योंकि निम्नलिखित तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में वे पूर्णत: निराधार, भ्रामक एवं असत्य प्रतीत होते हैं । **प्रथम:** - अंतरिम सरकार में मुस्लिम लीग के साथ विभागों के आबंटन से सम्बद्ध सम्पूर्ण प्रकरण पर दृष्टिपात करने से स्पष्टत: प्रकट होता है कि सरदार पटेल जैसा व्यक्ति किसी विशेष मंत्रालय के लिये हठ नहीं कर सकता । जिस व्यक्ति ने प्रधानमंत्री पद हेतु अपने पक्ष में कांग्रेस का बहुमत होने के बावजूद गांधीजी की इच्छा से, बड़ी सरलता से, पदमोह त्याग कर नेहरू जी के नेतृत्व में राजसत्ता में भागीदारी गृहण कर ली हो : एक अन्य अवसर पर दिसम्बर 1936 में कांग्रेस के फैजापुर (महाराष्ट्र) अधिवेशन में अध्यक्ष पद हेतु अपना नाम आने पर गांधीजी के अनुरोध पर अपना नाम वापिस लेकर पंडित नेहरू और अपने (सरदार पटेल) बीच मतभेद अधिक हो जाने पर 30 जनवरी 1948 को गांधी जी से मंत्रिमंडल से त्याग पत्र देने की अनुमति मांगी हो, जिसे गांधी जी ने नेहरू और पटेल दोनों को मंत्रीमंडल में रहना आवश्यक समझकर टाल दिया हो - वह व्यक्ति एक विशेष मंत्रालय के लिये हठ करेगा, यह सुसंगत प्रतीत नहीं होता ।

द्वितीय -स्वयं मौलाना आजाद ने एक स्थान पर स्वीकार किया है कि यदि उन्होंने पंडित जवाहर लाल नेहरू के स्थान पर सरदार पटेल को कांग्रेस अध्यक्ष बनाया होता तो संभवतः सरदार पटेल विभाजन को रोक सकने में समर्थ होते । उनके अपने शब्दों में, मेरी दूसरी गलती यह थी कि जब मैंने अध्यक्ष पद हेतु समर्थन नही किया यद्यपि हम दोनों के बीच अनेक मुद्दों पर विभेद थे तथापि मुझे पूर्ण विश्वास है कि यदि वह मेरे उत्तराधिकारी बने होते तो कैबनेट मिशन योजना सफलतापूर्वक कार्यान्वित होती। वह जवाहर लाल जैसी गलती कभी नहीं करते जिसके कारण जिन्ना को इस योजना को तहस-नहस करने का अवसर मिला । जब मैं यह सोचता हूं तो स्वयं को क्षमा नही कर पाता - कि यदि मैंने यह गलतियों नही की होती तो विगत दस वर्षों का इतिहास कुछ और ही होता ।

तृतीय-जैसा कि मौलाना आजाद लिखते हैं कि रफी अहमद किदवई के चातुर्यपूर्ण इस प्रस्ताव का सरदार पटेल ने समर्थन किया कि वित्त मन्त्रालय मुस्लिम लीग को दे दिया जाये क्योंकि वित्त महत्वपूर्ण होने के साथ साथ तकनीकी भी हैं और मुस्लिम लीग के पास उसे संभालने के लिये कोई योग्य व्यक्ति नहीं है अतः लीग इसे स्वीकार नहीं करेगी । वास्तव में मौलाना आजाद का यह आरोप भी तर्कसंगत प्रतीत नहीं होता । यह हो सकता है कि सरदार पटेल रफी अहमद किदवई के प्रस्ताव के समर्थक रहे हों किंतु वह इस यथार्थ से कदापि अनभिज्ञ नही हो सकते कि 651 वर्ष तक भारत पर सफलातपूर्वक शासन करने वाले मुसलमानों मे वित्तीय एवं प्रशासनिक क्षमता का अभाव है ।

चतुर्थ-इस सम्पूर्ण प्रकरण में मौलाना आजाद भ्रान्तिग्रस्त प्रतीत होते हैं जैसा कि पंडित जवाहरलाल नेहरू ने एक बार 27 मार्च 1959 को लोकसभा में मौलाना आजाद की इस बात का अपने भाषण में खण्डन करते हुए स्वीकार किया था कि कुछ घटनाओं के वृतान्त तथ्यात्मक नहीं हैं और मौलाना आजाद मात्र अपनी स्मृति से ही काम ले रहे थे ।

पंचम-मौलाना आजाद द्वारा सरदार पटेल को भारत विभाजन का ध्वजवाहक बताना भी तथ्यात्मक एवं तर्कसंगत नही है । सत्य तो यह है कि वह विभाजन के लिये तभी तैयार हुए थे जब और कोई मार्ग शेष रह नहीं गया था। उन्होंने जी०एस० बोजमैन को लिखे अपने पत्र में स्पष्टतः उल्लेख किया हैं कि "भारत विभाजन को हम सभी घृणा करते हैं लेकिन इसके अतिरिक्त और कोई मार्ग शेष नहीं था।

षष्ट-जिस राष्ट्र भक्त ने देश की एकता एवं अखण्डता की रक्षा के लिये 550से अधिक देसी रियासतों को भारतीय संघ में विलयन करने का अविस्मरणीय कार्य पूर्ण किया हो उसे देश के विभाजन के लिये आरोपित करना तर्क की कसौटी पर सत्य नही माना जा सकता ।

सप्तम-प्रख्यात **पत्रकार राजमोहन गांधी** ने इस पूरे प्रसंग को अनावृत करते हुए खुलकर कहा हैं कि, "यह कथानक पूर्णतः मनगढंत हैं। यह अभिलेखनीय तथ्य है कि पटेल नेहरू और स्वयं आजाद माउण्ट बेटन के भारत आगमन से पूर्व ही अपने को विभाजन के लिये तैयार कर चुके थे । माउण्ट बेटन 22 मार्च की दोपहर बाद नई दिल्ली पहुंचे जबकि 8 मार्च को आचार्य जे०पी० कृपलानी की अध्यक्षता में कांग्रेस कार्यसमिति की नई दिल्ली में सम्पन्न हुई बैठकं में पंजाब के विभाजन का प्रस्तााव पारित किया जा चुका था । कार्य समिति की इसी बैठक में बंगाल के विभाजन को स्वीकार करने के साथ सम्पूर्ण भारत के विभाजन को भी स्वीकार करने की बात की गई थी । आठ मार्च की इस बैठक में नेहरू और पटेल के साथ मौलाना आजाद जो स्वयं भी उपस्थित थे, ने असहमति में कोई आवाज नहीं उठाई, जबकि उनका उत्तरदायित्व सरदार पटेल से कहीं अधिक था क्योंकि वह स्वयं कांग्रेस के विगत सात वर्षो से अध्यक्ष एवं नीति-निर्धारक बने हुये थे । 26 अप्रैल 1946 को उन्होने ही कांग्रेस अध्यक्ष का पद पंडित नेहरू को सौंपने की कांग्रेस जनों से अपील की और उन्हें ही सौंपा था । यही नहीं अपितु 14 जून 1946 को यह मामला अखिल भारतीय कांग्रेस के समक्ष प्रस्तुत किया गया और 29 के विरूद्व 153 सदस्यों ने विभाजन के पक्ष में मतदान किया तथा 36 सदस्य तटस्थ रहे साथ ही गांधी जी ने भी इसे स्वीकार कर लिया । स्पष्ट है कि एकमात्र पटेल पर विभाजन का उत्तरदायित्व आरोपित करना तथ्यों के विपरीत एवं नितांत अन्याय है । राजमोहन गांधी यहां तक लिखते हैं कि 4 मार्च को जिन्ना के एक निकटस्थ मित्र कंजी द्वारिकादास को लिखे अपने पत्र में पटेल ने विभाजन पर अपनी नाराजगी प्रकट की हैं और स्पष्टतया कहा है कि यदि लीग पाकिस्तान का हठ करती हैं तो इसका विकल्प केवल पंजाब और बंगाल का विभाजन होगा वह किसी भी तरह पंजाब और बंगाल को समग्र रूप में प्राप्त नहीं कर सकते । "इससे स्पष्ट होता हैं कि सरदार पटेल एक-एक इंच भारत के लिये लड़ते रहे । इसके साथ-साथ वह सरदार पटेल ही थे जिन्होने विभाजन को हृदय से स्वीकार नहीं किया था और हृदय में अखण्ड भारत का स्वप्न संजोए थे । उन्होंने विभाजन के बाद भी कहा था कि "आज नही तो कल हम पुनः एक होंगें । बोजमैनको लिखे अपने पत्र में भी उन्होने यह उद्‌गार व्यक्त किए थे कि,"हम आशा करते हैं कि एक दिन पाकिस्तान पुनः आकर हमसे मिल जायेगा । "उल्लेखनीय हैं कि सरदार पटेल के इस वक्तव्य से पाकिस्तानी राजनेताओं में बड़ी खलबली मची थी । पाकिस्तान के पूर्व राष्ट्राध्यक्ष फील्ड मार्शल मोहम्मद अयूब खां ने अपने ग्रंथ "फ्रेन्ड्स नाट मास्टर्स" में इसे भारतीय विस्तारवाद की सम्पुष्टि के रूप में उद्धृत किया है । जबकि यह सरदार पटेल जैसे राष्ट्रभक्त की अन्तर्आत्मा की बहुमूल्य आवाज थी जो भारत को सदैव अखण्ड रूप में देखना चाहता था ।

उपर्युक्त पूर्ण विश्लेषण के प्रकाश में यह निष्कर्ष ज्ञापित किया जा सकता है कि मौलाना आजाद द्वारा लौह पुरूष सरदार वल्लभ भाई पटेल पर लगाया भारत-विभाजन के उत्तरदायित्व का आक्षेप पूर्णतः असत्य, भ्रामक, अतार्किक एवं तथ्यों से परे है । सरदार पटेल एक पवित्र एवं निष्ठावान देशभक्त तथा निर्भय एवं अविश्रान्त राष्ट्रकर्मी थे । लोकमान्य तिलक की भांति भारत का सप्राण, सशक्त तथा सुदृढ़ बनाना ही उनके जीवन का ध्येय एवं धर्म था। पंडित गोविन्द वल्लभ पन्त के शब्दों में, भारत की स्वाधीनता और सम्पन्नता के अतिरिक्त उनका कोई लक्ष्य नही था । वह नवीन भारत के निर्माण में अपनी एक अमिट छाप छोड़ गये हैं।

संपर्क : समाजशास्त्र विभागाध्यक्ष,
गुलाब सिंह हिन्दू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चान्दपूर - स्याऊ, बिजनौर, उत्तर प्रदेश

राजनीतिक नजरिया

लोकतंत्र के बनते-बिगड़ते चेहरे

❑ डा. नारायण दास

लोक का अर्थ है जनसाधारण । तंत्र का अर्थ-व्यवस्था या कार्य-पद्धति । लोकतंत्र जनसाधारण के द्वारा निर्मित व्यवस्था है ।

आज देश की दशा ऐसी है कि जनमानस से समाज सेवा, देशभक्ति और प्रबल राष्ट्रीय भावना विलुप्त सी हो गयी । धन के लिए ईमान तक लोग बेचने लगे तो देश में सही और ईमानदार मतदाता कहाँ से आयेंगे । हाँ इस देश के युवा वर्ग चाहे तो सुधार की बातें हो सकती हैं । उनका कर्तव्य है कि लोगों के बीच मानवता और नैतिकता का प्रचार करें । प्रशासन से निवेदन करें कि मतदान की प्रक्रिया में परिवर्तन लाने की जरूरत है ।

इस देश की मतदान प्रक्रिया अंग्रेजी शासन पर आधारित है । परन्तु वह अनुशासन बद्ध देश के लिए ही उपयुक्त है ।

आज से करीब चार सौ साल पहले ब्रिटेन के एक प्रकाण्ड विद्वान ग्राह्म का कहना था कि किसी डेमोक्रेसी शासन-युक्त देश में, वर्तमान मतदान प्रक्रिया गलत होगी क्योंकि इसमें वैभवशाली और शक्तिशाली लोग धन खर्च करके, पोस्टर या पैम्पलेट के द्वारा, विज्ञापन के द्वारा, शक्ति प्रदर्शन के द्वारा, जन-मत को अपनी ओर खींच लेंगे । जीत उन्हीं की होगी । निम्न श्रेणी के और निर्धन परन्तु योग्य लोग मतदान के माध्यम से जीत नहीं पायेंगे ।

1947 ई. में जब भारत अंग्रेजी शासन से मुक्त होकर स्वतंत्र हुआ तो राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की प्रबल इच्छा थी कि इस देश की शासन व्यवस्था लोकतंत्र पर ही आधारित हो । क्योंकि इस देश के नागरिक भिन्न-भिन्न विचार, धर्म और जाति के हैं । इसलिए वे मिली जुली संस्कृति, धर्म, जाति, भाषा और रस्म-रिवाज से बने भारतीयों को समन्वित विचार धारा से आबद्ध एक विकसित शक्तिशाली अखण्ड राष्ट्र के नागरिक के रूप मे देखना चाहते थे । परन्तु उनके उद्देश्य और निश्छल भावना को लोग समझ नहीं सके और भ्रमवाद के कुचक्र में उनकी हत्या कर दी गई ।

इसके बाद लोकनायक जयप्रकाश नारायण लोकतंत्र की लालसा को जीवन्तता प्रदान करने के लिए प्रयत्नशील हुए और कुछ हद तक सफल भी रहे परन्तु इसके पूर्व ही नेहरूजी के शासन काल में चीन और भारत के साथ युद्ध हुआ जिसमें चीन के सीमा विवाद और कश्मीर की समस्या को लेकर इस देश के नागरिकों को सोचने के लिए बाध्य होना पड़ा । बाद में इन्दिरा गाँधी प्रधानमंत्री हुईं । ये सशक्त शासिका थीं । इनके शासनकाल में लोगों की भावनाओं में विकृतियाँ आने लगीं । शासन सत्ता से सम्बन्धित परम्परावाद की चर्चा होने लगी । विदेशियों को अवसर मिला । उनके बहकावे में आकर अलगाववाद की नीति अपनाकर पंजाब में आतंकवादी पैदा हुए । उनके द्वारा लोगों की हत्याएँ होने लगीं । अमृतसर गुरूद्वारा उनके केन्द्र समझे जाने लगा । परिणाम स्वरूप दमनकारी रूख अपनाकर इन्दिरा जी को वहाँ गोली चलवानी पड़ी ।

इसी समय से यत्र-तत्र विद्रोहियों का जमाव होने लगा । असम और दक्षिण भारत (तमिल) में उग्रवादियों के भयंकर रूप दीखने लगे ।

यह कांग्रेस शासनकाल का समय था । सामन्ती विचार जोर पकड़ रहे थे और वामपंथी विचारधारा फैल रही थी । इस विषम परिस्थिति में ही कर्पूरी ठाकुर का बिहार के मुख्यमंत्री के रूप में पदार्पण हुआ जिन्होंने जनसाधारण में जागृति का बिगुल फूँका । निम्न श्रेणी के लोगों में कुछ जागृति आई । लोकतंत्र के प्रति लोग आशान्वित हुए । परन्तु बैकवर्ड- फारवर्ड की हलचल ने यहाँ कुछ भावनात्मक विकृतियाँ पैदा करने लगीं । इसी समय मँहगाई भी जोर पकड़ने लगी थी । लोगों में आक्रोश व्यापने लगा । तब लोक जीवन में आस्था और विश्वास पैदा करने के लिए पंचायत राज को सशक्त बनाने की प्रक्रिया चली तब तक लोगों में अर्थ लोलुपसा की भावना प्रबल होने लगी थी । मुखिया-सरपंच के चुनावी दौड़ में बेईमानी और खून-खराबी आने लगी । कितने मुखिया के उम्मीदवारों की हत्याएँ हुई । इसी अर्थ लोलुपता में शासन की गद्दी हथियाने के लिए लोग लालायित होने लगे ।

राजनैतिक संस्थाएँ पैदा हुईं, लोकदल, भारतीय जनता पार्टी, जनता दल, समता पार्टी, बहुजन समाज पार्टी इत्यादि । सभी लोग लोकतंत्र को भूलकर अपने-अपने पार्टी-तंत्र की ओर देखने लगे । कोई किसी की बात सूनने को तैयार नहीं । अपनी-अपनी डफली अपने-अपने राग लोग अलापने लगे ।

लोग शासन-सत्ता को सम्पत्ति या वैभव समझने लगे और उसकी प्राप्ति के लिए शक्ति का प्रदर्शन करने लगे । 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' वाली बात चरितार्थ होने लगी । मत-पेटी और मतदान-पत्रों की लूट होने लगी । सही मतदान प्रायः लुप्त सा होने लगा । इसके चलते कितनी हत्याएँ हुईं । ऐश्वर्य और शक्तिवाले की जीत होने लगी । लोकमत और लोकतंत्र रसातल की ओर चले गये ।

अर्थ युग प्रबल और सशक्त हुआ । इसी आपाधापी में निर्धन, अछूत वर्ग और आदिवासी उत्पीड़ित होने लगे । शक्ति वाले आतंक मचाने लगे । झारखंड मोर्चा के उग्रवाद, असम के बोडो उग्रवाद, पंजाब के आतंकवाद राज्य शासन और जनता को आतंकित करने लगे । इस दशा में लोकतंत्र की बात कौन करे ?

अतः यदि लोग लोकतंत्र को जीवित और शक्तिशाली बनाना चाहते हैं तो उपरोक्त बातों को हृदयगंम करना पड़ेगा तभी लोकहित की सही बातें हो पायेंगी । देश और राष्ट्र में तभी सुख और शान्ति की किरणें दीख पड़ेंगी ।

सम्पर्क : बंगाली टोला, वार्ड नं.-2, समस्तीपुर

भारतीय राजनीति में जातिवाद

❑ प्रो. मुनेश्वर यादव

(जातिवाद का जहर समाज के लोगों को एक दूसरे के विरूद्ध इस तरह खड़ा कर देते हैं कि उनमें किसी प्रकार के सार्थक संवाद की संभावना नहीं रह पाती। हॉलाकि यह भी सच है कि देश में कोई भी जाति ऐसी नहीं है जिसके नेता अपनी जाति के सभी सदस्यों का समर्थन पाकर राजनीतिक सत्ता प्राप्त कर लें। फिर भी जातियों के एक समूह और दूसरे समूहों के बीच प्रतिद्वंदिता अपनी चरम सीमा पर है। राजनैतिक दलों द्वारा निर्मित निश्चय ही यह एक भयानक स्थिति है जिसकी ओर संकेत करते हुए आर.के. कॉलेज, मधुबनी के राजनीति विज्ञान के प्रो. मुनेश्वर यादव ने प्रबुद्धजनों से हस्तक्षेप करने की अपेक्षा की है प्रस्तुत आलेख में–प्र. संपादक)

राजनीति आजकल एक व्यवसाय बन गई है। राजनेताओं की नजरों से लोक-कल्याण की भावना पूर्णत: विलुप्त हो गई है, राजनीति के इस गंदे खेल में तथाकथित स्वार्थी नेताओं ने नैतिकता की सारी सीमाओं को लाँघ कर देश की अस्मिता को बेच दिया है। अधिकांश शरीफ लोगों ने स्वयं को राजनीति से किनारा कर लिया है। क्षुद्र मानसिकता वाले स्वार्थी लोगों का आज वर्चस्व है। नैतिक-मूल्यों का पूरा ह्रास हो गया है। राजनीति का पूर्णतः अपराधीकरण हो चुका है।

वर्तमान भारतीय राजनीति जातिवाद से बूरी तरह त्रस्त है। आज जातिवादी राजनीति का आलम यह है कि लगभग सभी दल जातिगत समीकरणों के आधार पर अपना दलीय प्रत्याशी तय करते हैं। कर्तव्य-बोध, दलीय-निष्ठा, देश-प्रेम, दल की सेवा, कार्य-कुशलता, अनुभव आदि बातें जातीय गणित के आगे गौण पड़ गई हैं। राष्ट्रीय राजनैतिक दल जातिवाद के पोषक और प्रश्रयदाता हैं, भाजपा ब्राह्मणों, बनियों और शहरी लोगों की पार्टी मानी जाती है, बसपा और सपा को दलितों, शोषितों और मुसलमानों की पार्टी मानी गई है, समता पार्टी कुर्मी जाति की पार्टी मानी जाती है, राजद, जनता दल पिछड़ी जातियों, मुसलमानों और यादवों एवं राजपूतों की पार्टी होने का दावा करती है तो कांग्रेस तुष्टिकरण की नीति अपनाकर एक साथ सभी जातियों के समर्थन का दम्भ भर रही है।

आज तमिलनाडू में 69% और कर्नाटक में 73% आरक्षण के प्रावधान को संविधान की नौंवी अनुसूची में डालकर सर्वोच्च न्यायालय के हस्तक्षेप की सीमा रेखा से बाहर रखे जाने का प्रयास किया गया है। आज लगभग सभी दल अन्तर्कलह से ग्रस्त हैं।

31 अगस्त, 1995 को पंजाब के मुख्यमंत्री सरदार बेअंत सिंह की बम-विस्फोट में हत्या भारतीय राजनीति के निराशाजनक परिदृश्य का ज्वलंत उदाहरण है। प्रो. मोरिस का कथन निराशाजनक भारतीय राजनीति का निस्कर्ष प्रस्तुत करता है–भाषावाद और क्षेत्रवाद राष्ट्रीय एकता से संबंधित समस्त समस्याओं का मूल है। फलतः जातिवाद की नकारात्मक एवं पृथकतावादी प्रवृति भारतीय राजनीति के लिए कोढ़ साबित हुई। आज भारतीय नेताओं ने राजनीति और सत्ता को पारिवारिक जागीर समझकर अपने प्रभावों का खुला दुरूपयोग किया है। अनेक राजनेता ऐसे हैं जो अपने बेटे-बेटियों, दामादों, पत्नी एवं अन्य निकटतम रिश्तेदारों के बीच लोकसभा और विधान सभा के चुनावों में उम्मीदवारों को रेवड़ियों की तरह बाँटते हैं। इस तरह भाई-भतीजावाद को खुला प्रश्रय दिया जाता है।

वर्तमान भारतीय राजनीति के स्तर का पता इससे भली-भाँति चल जाता है। आज भारतीय राजनीति परिदृश्य में सर्वमान्य राष्ट्रीय नेतृत्व का संकट है। हमारी राजनीतिक व्यवस्था में सिर्फ जातीय, वर्गीय, साम्प्रदायिक, दलीय, प्रान्तीय और स्वार्थी नेतृत्व की बहुतायत है। कोई सर्वमान्य नेतृत्व नहीं है। जातियता को बढ़ावा देकर, साम्प्रदायिक उन्मादों को भड़काकर, जातीय और साम्प्रदायिक दंगे करवाकर, नरसंहार की सहायता लेकर कुर्सी पाना आज भारतीय राजनीति का कड़वा सच है। इस घृणित कार्य में तो लगभग सभी दल समान रूप से दोषी हैं? आम जनता भी दोषी है जो इन स्वार्थी और ठगों के बहकावे में आ जाती है। अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षा की स्वार्थपूर्ति हेतु सभी नेता असामाजिक तत्वों का उपयोग करते हैं और गैर-कानूनी हरकतें करते हैं। आज जातिवाद राष्ट्रवाद को खा गया है। राजनीति में जाति व जाति में राजनीति अनिवार्य विषय है। हम भावनात्मक एकता के आधार पर राष्ट्रीय चिंतन करके जातिवाद को खत्म करें और अपने सुन्दर विचार से जातीय राजनीति को समाप्त कर सकते हैं।

संपर्क : आर.के. कॉलेज, मधुबनी

आज की राजनीति : एक समस्या और समाधान

❑ नन्द किशोर राय

प्राचीन समय में सत्ता जहाँ एक जगह केन्द्रित रहती थी वहीं आज सत्ता के विकेन्द्रीकरण पर जोड़ दिया गया है। सत्ता के विकेन्द्रित हो जाने से राजनीतिक सोच और उसके स्तर में अन्तर आ जाना स्वभाविक ही है। अलबत्ता, आमलोगों के लिए राजनीति जितना सहज और ग्राहय हो गया है उतनी ही इनमें पेचीदगियाँ और विसंगतियाँ भी पैदा हुई हैं। आज की राजनीति पूर्णरूप से सिद्धान्तहीन सत्ता की राजनीति हो गई है। पद लोलुपता और सत्ता-सुख के कारण राजनीतिज्ञों का नैतिक पतन हो गया है और वे येन-केन-प्रकारेण सत्ता बने रहने के लिए कोई भी हथकंडा अपनाने से नहीं चूकते हैं। अत: यही कारण है कि आज की परिस्थिति में कोई भी शिक्षित और बुद्धिजीवी अपने आपको राजनीति से जोड़ने में कतराते हैं और, जो किसी प्रकार राजनीति रूपी इस कीचड़ में फँस गये हैं वे अपने को राजनीतिज्ञ कहलाने में भी शर्म महसूस करते हैं। आज से कुछ दशक पूर्व राजनीति के इस गलियारे में असामाजिक तत्वों का जो प्रवेश हुआ था वही आज उन लोगों पर भी भारी पड़ने लगा है जो पद और सत्ता के दौर में उन्हीं लोगों के सहारे आगे बढ़े थे। आज की राजनीति समस्याओं के जंजाल में इस तरह फँस चुकी है कि लाख प्रयास के बावजूद अपने को उबारने में सक्षम नहीं है। अब प्रश्न उठता है कि आखिर ये कौन सी समस्याएँ हैं जो चाहकर भी हमारा पीछा नहीं छोड़ती है ? आईए अब इन समस्याओं की ओर भी एक नजर डालें –

समस्याऐं :

1. विधानसभा में बैठे जनप्रतिनिधि अपने विवेकाधिकार की अपेक्षा दलीय फरमान को अधिक महत्व देते हैं।

2. इसमें राजनीतिक दलों द्वारा सत्ता में बने रहने के लिए नापाक ताल-मेल की जाती है जो अन्तत: सरकार और राष्ट्र दोनों के लिए घातक साबित होती है।

3. सभी राजनीतिक दलों में अपराधी प्रवृति वाले व्यक्तियों का समावेश है।

4. जात-पात की राजनीति भी आज एक विकराल समस्या का रूप ले चुकी है। जात के नाम पर राजनेता अपनी रोटी सेकने से नहीं चूकते हैं परन्तु इसका खामियाजा समाज को भुगतना पड़ता है।

5. धर्म के नाम पर लोगों की भावना को भड़काकर वोट की राजनीति लोकतंत्र के लिए घून के समान है।

6. अलग राज्य या अलग राष्ट्र की मांग चारों तरफ जोड़ पकड़ने लगी है जो अन्तत: संपूर्ण राष्ट्र के लिए खतरनाक साबित हो सकती है।

7. अशिक्षित होने के कारण जनता में जहाँ उपयुक्त प्रतिनिधि चूनने की क्षमता नहीं होती है वहीं गरीबी के बोझ से दबी जनता अपना अमूल्य वोट मात्र चन्द रूपयों के लोभ में गँवा देती है।

उपर्युक्त समस्याओं पर दृष्टिपात करने से ऐसा प्रतीत होता है कि समय रहते यदि हम इन समस्याओं के प्रति सचेत न हो जाते हैं तो इससे न केवल हमारा भविष्य अन्धकारमय हो जायगा बल्कि राष्ट्रीय गौरव भी कलंकित होगा। अब प्रश्न उठता है कि इन समस्याओं का निदान कैसे हो ? आईए अब इन समस्याओं के निदान पर भी विचार करें :

समाधान :

1. जनता को पूर्ण शिक्षित करके उसे अपने कर्तव्यों से अवगत कराया जाय ताकि वह अपने विवेक के आधार पर उपयुक्त प्रतिनिधि का चुनाव करें।

2. अर्थ-तंत्र को चुस्त-दुरूस्त करके लोगों के आर्थिक स्तर को सुधारा जाय जिससे वह अपने को दबाव रहित महसूस करें।

3. चुनाव में हो रहे भारी खर्च पर नियंत्रण रखा जाय। इस सम्बन्धमें चुनाव आयोग का प्रयास एक स्वागत योग्य कदम है।

4. जात-पात की राजनीति पर लगाम लगाया जाय और आवश्यकता पड़ने पर दलों की मान्यता समाप्त की जाय।

5. धर्म के नाम पर लोगों को बाँटने वालों पर कठोर कार्रवाई हो। यहाँ "सर्व धर्म सम्भाव" के सिद्धान्त को अपनाना ज्यादा श्रेयस्कर होगा।

6. सम्पूर्ण देश के लिए एक कानून और एक नियम बनाया जाय। इस परिप्रेक्ष्य में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा "समान नागरिक संहिता" अपनाने का सुझाव देना एक ऐतिहासिक कदम है।

7. नागरिकों को अपने गौरवपूर्ण इतिहास से अवगत कराकर उनमें राष्ट्रीयता की भावना जगायी जाय। इससे क्षेत्रीयता की भावना पर बहुत हद तक नियंत्रण पाया जा सकता है।

8. राजनीतिक दलों द्वारा अपराधी छवि वाले व्यक्तियों को टिकट देने से नकारा जाय।

9. तोड़-जोड़ की राजनीति करने वाले अवसरवादी राजनैतिक दलों और राजनीतिज्ञों को पूर्णत: नकार दिया जाय।

उपर्युक्त समस्याओं के अलावे और भी कई ऐसी समस्याएँ हैं जो सुरसा के मुँह की भाँति विकराल रूप धारण किये हुए हैं। समय रहते इससे छुटकारा न पाया गया तो समाज और राष्ट्र का क्या हश्र होगा यह तो आने वाला भविष्य ही बताएगा।

संपर्क : मारवाड़ी महाविद्यालय, दरभंगा-1

उत्तर प्रदेश

बसपा-भाजपा गठबंधन की कचउमर निकल गयी

मात्र 29 पहले उत्तर प्रदेश में भाजपा की साझा सरकार से बसपा ने गठबंधन तोड़ते हुए अपना समर्थन वापस लेकर उसकी कचउमर निकाल दी । इसके परिणाम स्वरूप प्रायः सभी दलों में भारी भगदड़ मच गई है तथा सबों में रस्साकसी हुई । यह राजनीतिक अधोगति तथा अवसरवादिता का विचित्र नमूना है ।

सच कहा जाय तो बसपा-भाजपा का आपसी तालमेल ही सिद्धान्त विहिन था । दो छोर पर खड़े दोनों दलों ने कुर्सी पर बने रहने के लिए यों कहिए कि राष्ट्रपति शासन से बचने के लिए सारी नैतिकताओं एवं मर्यादाओं को ताक पर रख दिया था । आखिर लगभग गत एक साल से दोनों दलों की आँख-मिचौनी खेल को आम जनता समझ रही थी । इसलिए लोगों ने इस गठबंधन को अप्रत्याशित नहीं माना । पर इतना जरूर है जिस प्रकार छह माह तक सब कुछ सहकर तथा सुश्री मायावती के तमाम सियासी नाज-नखरों के धीर-गंभीर भाव को झेलकर भी भाजपा दलित वर्ग को महज खुश करने की नियत से अपने हिन्दुत्व के मुलाधार को कमजोर किया । इससे भाजपा की जितनी छवि धूमिल हुई उससे कहीं अधिक बसपा की विश्वसनीयता खतरे में पड़ी है, वह अब पूरी तरह बेनकाब हो चुकी है जिसका खामियाजा उसे भुगतना पड़ेगा । बसपा की इस बेबुनियाद हरकत से न केवल दलित वर्ग का अपितुः पूरे आवाम का विश्वास उस पर से उठ गया है । अपने विधायकों को बंधक बनाकर रखने की

कांशीराम और मायावती की पुरानी प्रवृति से सभी लोग अवगत हैं । इन दोनों के तानाशाही व अपमानजनक रवैये से क्षुब्ध होकर बसपा सुप्रीमो कांशीराम के राजनैतिक सलाहकार चौधरी नरेन्द्र सिंह ने अपने पद से त्याग पत्र दे दिया । दरअसल भाजपा-बसपा गठबंधन ही अपवित्र था । पिछले एक साल से उत्तर प्रदेश में सत्ता की मनमानी, अकर्मण्यता, भ्रष्टाचार, जातियता का नंगा नाच जिस प्रकार हो रहा है उससे वहाँ की जनता काफी परेशान है । ऐसे अवसरवादी गठबंधन तथा दल-बदल से पूरे प्रदेश को नुकसान हो रहा है ।

आज देर से मिली खबर के अनुसार कांग्रेस अध्यक्ष श्री सीताराम केसरी के समक्ष घुटना टेकते हुए केन्द्र की संयुक्त मोरचा सरकार ने उत्तर प्रदेश में कल्याण सिंह की सरकार को बर्खास्त कर राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया था किन्तु राष्ट्रपति के ऐतिहासिक हस्तक्षेप और तगड़े आन्तरिक विरोध के समक्ष नतमस्तक होते हुए केंद्रीय मंत्रीमण्डल ने महज 24 घंटे के भीतर उ.प्र. में पुनः राष्ट्रपति शासन वापस लेकर कल्याण सिंह को मुख्यमंत्री पद पर बने रहने देने का फैसला किया । इससे केन्द्र सरकार के साथ केसरी, कांशीराम, मायावती तथा मुलायम कई के चेहरे बेनकाब हुए ।

भारतीय राजनीति में अवसरवाद अब एक ऐसी अवधारणा बन चुकी है कि जिसका दर्जा अन्य सभी अवधारणाओं से ऊपर है । उत्तर प्रदेश में इसके पूर्व भी बसपा-भाजपा गठजोड़ से मुलायम सरकार का पतन हुआ था । बसपा-भाजपा के वसूल न केवल एक दूसरे से मेल नहीं खाते, वरन् अतिवादी ढंग से परस्पर विरोधी भी हैं । बसपा ऐसे सामाजिक परिवर्तन की पक्षधर है जिसमें वर्तमान हिन्दू व्यवस्था को सिर के बल खड़ा करने की बेचैनी प्रमुख है और भाजपा ऐसी सामाजिक समरसता चाहती है जिससे यह सनातन व्यवस्था जैसे चलती आयी है वैसे न सिर्फ चलती रहे बल्कि और भी मजबूत होती चले । इतने अन्तर्विरोध के बावजूद ऐसे गठबंधन को समझौतावादी संस्कृति या अवसरवाद नहीं तो और क्या कहेंगे ?

उत्तर प्रदेश के इस घटनाक्रम के आधार पर इतना तो निश्चित तौर पर कहा जा सकता है कि आज सिद्धान्त और नैतिकता की राजनीति रह नहीं गयी है । अब मात्र सुविधा और सत्ता की राजनीति हो रही है । अगर ऐसा नहीं होता तो नैतिकता की ढोल पीटने वाली भाजपा ने बसपा से हाथ नहीं मिलाया होता । वैचारिक धरातल के दो विपरीत ध्रुवों पर खड़ी भाजपा-बसपा का गठबंधन इस कथन को ही चरितार्थ करता था कि राजनीति में आदर्शों और सिद्धान्तों की बात बेमानी है ।

रा. वि. संवाददाता, उ.प्र.

समाज के उन्नयन में हमारा उत्तरदायित्व

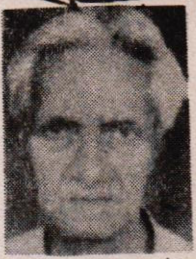

❑ प्रो. राम बुझावन

मनुष्य ही क्या, सभी प्राणियों का अपना अपना समाज होता है । यह और बात है कि उनके अपने अपने ढंग और रहन-सहन के अपने अपने तौर तरीके होते हैं। इसीलिए समाज के अलग -अलग नाम भी पड़ गए हैं- यथा, झुण्ड, भीड़, जमात ,पांत, दल आदि । पशु-पक्षी प्रायः झुण्ड और भीड़ में रहते तो सभी साथ है। पर उनके उद्येश्य एक-सा नहीं होते । जैसे मेले में लोगों की भीड़ तो रहती है पर उनके उद्येश्य भिन्न भिन्न होते हैं। कोई कुछ खरीदता है, तो कोई कुछ । इस उद्येश्य की पूर्ति में प्रायः परस्पर टकराव भी हो जाता है, दूसरों को रौंद भी दिया जाता है। जैसे पशु-पक्षी भोजनादि के लिए गुत्थम-गुत्थी कर लेते हैं । आदमियों की भी पहले ऐसी ही आदतें थीं । वह उनका आदिम युग था ।

आज वह विकास के कई युगों को पार कर वैज्ञानिक युग में यहाँ तक पहुँच चुका है कि चांद पर तो उसने चरण रख ही दिए , उसके आगे अंतरीक्ष में भी यह संतरण कर रहा है और उसे चरितार्थ कर रहा है, उसके सितारों को आगे जहां और भी है। उसका **दिमाग बहुत ऊँचे उठ रहा है, दिल उतना ही पीछे छुटता जा रहा है दिमाग की दुनिया बहुत कुछ अकेलेपन की दुनियाँ होती है, दिल की दुनिया समाज ही होती है, बहुतायत की होती है, जो प्रायः औसत दर्जे की होती है। इसी औसत दर्जे की दुनिया को समाज के उन्नयन में हमें अपना उत्तरदायित्व निभाना है** । इसी समाज का उन्नयन हमारा लक्ष्य है, जिसके लिए धर्म, संप्रदाय, साहित्य, राजनीति आदि सभी साधन-स्वरूप लगे हुए हैं। संक्षेप में, समाज साध्य है, शेष सब कुछ साधन । यह और बात है कि कभी कोई साधन बहुत प्रमुख बन जाता है-इतना प्रमुख, कि उसे ही इस साध्य मान लेते हैं । आज की हमारी समस्याओं की जड़ में हमारी ही भूल है, भ्रम है । आज कोई न कोई साधन ही साध्य बन गया है, और साध्य गौण । इन साधनों में सबसे प्रमुख और शक्तिशाली राजनीति है तथा दूसरा स्थान धर्म का है । आज राजनीति और धर्म को ही हमने सब कुछ मान लिया है । कभी राजनीति को आगे कर धर्म को भला बुरा कहने लगते हैं, कभी धर्म को ही माथे पर चढ़ाकर राजनीति को गालियां देने लगते हैं । आज राजनीति और धर्म-संप्रदाय आपस में जूती-पैजार कर रहे हैं, जिससे समाज लहू लुहान हो रहा है । कुछ चतुर चालाक लोग दोनों ही साधना एक साथ कर रहे हैं । राजनीति के शिखर पुरूष होकर भी धर्म तथाकथित पंडे पुजारियों के पैर पखार रहे हैं । आज कबीर होते, तो शायद यही कहते-अरे इन दो उन राह न पायो । पर कबीर की इस चेतावनी पर कौन कान देता है-कबिरा कहता है सच, मगर सुनता है कौन ।

समाज के उन्नयन में अपनी भूमिका निश्चित करने के क्रम में हमें सबसे पहले यह तय कर लेना होगा कि इसके लिए जो साधन हम अपनाने जा रहे हैं, वह कैसा हो । हमारे साध्य और साधन कैसे हों । इस प्रश्न का समाधान हमारे ज्ञानी पुरखों ने दो तरह से करने के सुझाव दिये हैं अपने युग के सबसे बड़े कूटनीतिज्ञ से चाणक्य की नीति थी हम सिर्फ सिद्धि देखते हैं, साधन चाहे जो भी, और जैसा भी हो । सारी दुनिया ने देखा कि इस नीति पर चल कर चाणक्य ने उतने बड़े साम्राज्य का निर्माण कर दिया था, जितना बड़ा आज हैं भी नहीं । प्रायः हजार वर्षों तक हम गुलाम रहे, जिस कलंक से मुक्त होने के लिए इस युग के एक महापुरूष ने यह नीति अपनायी कि साध्य की पवित्रता के समान ही हमारे साधन भी पवित्र हों । सोलहों आने इसी नीति से तो नहीं, पर बहुत कुछ इसी नीति के सहारे हम आजाद हुए । हमारे सामने प्रश्न है कि अपने समाज-निर्माण के लिए आज हम कौन सी नीति अपनाएं ? किसकी नीति पर गर्व करें, किसकी नीति पर शर्म करें ? इसका चुनाव तो हमें ही करना है ।

समाज के रोगों को दूर करने के लिए आज कई मसीहा हमारे सामने हैं । कुछ तो ऐसे मसीहा हैं, जो अपनी बीमारी का इलाज खुद अस्पतालों में करवा रहे हैं । उन मसीहाओं को हम बाहर से ढांढ़स दिला रहे हैं-हमारे मसीहा, मत घबराना-तेरे पीछे सारा जमाना । हमें तो इन ढाढ़स दिलाने वालों के इस नारे में जैसे सुनायी पड़ जाता है-चढ़ जा बेटे सूली पर, भगवान तेरा भला करेंगे । कोई उन्हें उगते हुए सूरज कह अस्ताचल की ओर धकेले लिए जा रहा है, तो कोई उस के लिए आत्मदाह करने को तैयार हो रहा है । इन आत्मदाहियों में मरदों से ज्यादा औरतें चिता पर चढ़ जाने को तैयार हैं । क्यों नहीं, जौहर व्रत इन्हीं का तो पावन अनुष्ठान है ।

यह मसीहाई दल आज सामाजिक न्याय के लिए सबसे ज्यादा बेचैन है । खैर, इसने इतना तो माना कि अबतक सामाजिक अन्याय बहुत हुआ, अब उसके बदले सामाजिक न्याय हो । इसके लिए ये राजनीति का नवतर लेकर निकल पड़े हैं उन्हीं सामाजिक शोषितों एवं दलितों के लिए कुछ संगठन बन्दूक की नलियों से कारगर इलाज निकाल रहे हैं । मरीज समाज चित पड़ा लेटा हुआ है, जिसके चारो ओर समाजिक मसीहा अपने अपने नुस्खों के साथ खड़े हैं । कोई भी नुस्खा अभी तक तो कारगर साबित नहीं हुआ है । लगता है, मरीज के पोस्ट मार्टम के बाद ही रोग का सही पता इस मसीहों को लगेगा, जिसके बाद निदान का रास्ता निकलेगा । अभी तो 'दर्द बढ़ता गया ज्यों ज्यों दया की' के दौर से हम गुजर रहे हैं-इस इंतजार में, कि 'दर्द का हद से गुजरना है दवा हो जाना ।' समाज अभी बड़ी बुरी तरह से रोग-ग्रस्त है । वह रोग है भ्रष्टाचार, जो अब कैंसर बनता जा रहा है । इसके सबसे बड़े मसीहा प्रधानमंत्री तक इससे छुटकारे के लिए चिन्तित हैं, जिनकी आस्तीन में ही भ्रष्टाचार के काले सांप कम नहीं पल रहे हैं । आस्तीन के सापों से आज तक कोई बच भी पाया है क्या ? दूसरे मसीहा गृहमंत्री गुप्त तक फतवा दे चुके हैं कि आज इस देश में यदि कोई विकास करना चाहता है, तो उसे किसी न किसी रूप में भ्रष्टाचार अपनाना ही पड़ेगा । आचार्य विनोबा तो बहुत पहले ही इस सर्वव्यापक भ्रष्टाचार को शिष्टाचार घोषित कर गए हैं । इन सभी महापुरूषों के रहते मैं भला समाज के उन्नयन में अपने उत्तरदायित्व की क्या बात करूँ ? छोटा मुंह बड़ी बात ।

संपर्क : बाकरगंज बजाजा, पटना

पिछड़े मुस्लिम की व्यथा कथा

❑ डा. सैयद फ़जल रब

अनुग्रह नारायण सिंह समाज अध्ययन संस्थान, पटना के पूर्व प्रोफेसर अलि अशरफ ने बिहार के मुस्लिम इलिट के सम्बन्ध में एक महत्वपूर्ण सर्वेक्षण किया था जो अब तक पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो चुकी है। जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली के प्रो. ऐजाज ने भी बिहार के मुसलमानों के सम्बन्ध में एक पुस्तक लिखी है जिसमें उन्होंने मुसलमानों की शैक्षणिक एवं सामाजिक समस्याओं का विश्लेषण प्रस्तुत किया है। अभी हाल में कलकत्ता के एक प्रसिद्ध समाजशास्त्री डा. एम. के.ऐ. सिद्दीकी, की एक पुस्तक प्रकाशित हुई जिसमें भागलपुर के कुछ गांवों के मुसलमानों की एक तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है जो अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण है। यद्यपि बिहार के मुसलमानों के सम्बन्ध में जो कुछ भी अध्ययन किए गए हैं उनमें से तो कुछ प्रकाशित हो चुके हैं और कुछ प्रकाशन की प्रक्रिया में है। इस विषय पर जिन शोधकर्त्ताओंने शोध किया है उनमें डा. जियाउद्दीन अहमद, डा. मुसि रजा, डा. सरफराज अहमद, डा. श्रीमती तलत अशरफी, डा. नूतन सिन्हा आदि कुछ प्रमुख हैं।

विभिन्न आयोगों के रिपोर्टों में (विशेष रूप से मुंगेरी लाल, मण्डल आयोग के रिपोर्ट में) बिहार की कुछ पिछड़ी मुस्लिम बिरादरियों की चर्चा की गई है परन्तु इन बिरादरियों के सम्बन्ध में कोई विस्तृत व्यौरा प्रस्तुत नहीं किया गया है।

1991 ई. में राज्य सरकार के निर्देश पर अनुग्रह नारायण सिंह समाज अध्ययन संस्थान ने "राईन बिरादरी" के सम्बन्ध में एक प्राथमिक रिपोर्ट प्रस्तुत किया था जिसमें इस बिरादरी की शैक्षणिक, आर्थिक एवं सामाजिक जीवन के अनेक पहलूओं का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया था।

प्रो. जाबिर हुसैन की संक्षिप्त पुस्तिका बिहार की "पसमान्दा मुस्लिम आबादियों" एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रयत्न है जो न सिर्फ हमें इनके बारे में सोचने पर विवश करती है बल्कि हमें उनके सम्बन्ध में अधिक से अधिक जानकारी ग्रहण करने को प्रेरित भी करती है। उनसे उनकी गहन सामाजिक चेतना एवं बौद्धिक चिंतन का पता चलता है। भारतीय मुसलमानों का समुदाय भी अन्य देशवासियों की तरह विभिन्न खण्डों में विभाजित है जिसे हम बिरादरियों के नाम से जानते हैं। वर्गों और बिरादरियों में बंटा मुस्लिम समुदाय अपने अस्तित्व पहचान एवं प्रगति के संघर्ष में संघर्षशील है। कभी उसकी चाल तेज तो कभी मन्द है लेकिन क्या सारी बिरादरियाँ इस संघर्षपूर्ण यात्रा में एक साथ हैं? बिल्कुल नहीं और शायद यह सम्भव भी नहीं। क्योंकि अधिकांश बिरादरियाँ इस कदर पिछड़ी हुई है कि न तो इन्हें अपनी दिशा का पता है और नहीं कोई उनका मार्गदर्शक है जो उनकी सही मंजिल का पता दे।

लेखक के शब्दों में "दरअसल मुस्लिम अकलियति आबादियों के मसाएल से तकरीबन दो ढ़ाई के फिक्री नजरयाती, और अम्ली रिश्तों का तअस्सुराती बुनियाद है। लेखक ने जिस आठ पिछड़ी मुस्लिम बिरादरियों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया है उनके नाम इस प्रकार है :

(1) कुल्जैटया (2) शेरशाह आबादी (3) शीशगर (4) सिलाई कामगार (5) बुनकर (6) राईन (7) गद्दी (8) मंसूरी।

मुसलमानों की ये वे पिछड़ी बिरादरियाँ हैं जो स्वतंत्र भारत में पिछले 50 वर्षों से निर्धनता, निरक्षरता और मायूसी का जीवन व्यतीत कर रही हैं। उनपर कोई ध्यान देने वाला नहीं है। अगर उनकी कोई संस्था है भी तो उनके कार्यकर्त्ता अपनी राजनीतिक एवं सामाजिक अस्तित्व को बनाए रखने के लिए सम्बन्धित पिछड़ी जातियों का केवल शोषण ही करती है।

प्रो. जाबिर हुसैन ने अपनी इस पुस्तिका में विभिन्न मुस्लिम बिरादरियों के सम्बन्ध में अपने विचार को इस तरह प्रस्तुत किया है जिससे न केवल उनकी समस्याओं का ज्ञान होता है बल्कि जो अपने आप में विचारणीय भी है।

उदाहरणत: (1) मुसलमानों की पेशाकर बिरादरियों की शैक्षणिक स्तर बहुत ही निम्न है कयोंकि उनकी अधकांश संख्या निरक्षरता की शिकार है। (2) मुसलमानों की इन बिरादरियों की आर्थिक दशा इतनी पिछड़ी है कि वह जनजातियों एवं अन्य अत्यंत पिछड़ी जाति के लोगों से भी अधिक दयनीय है।

(3) मुसलमानों की विभिन्न बिरादरियों को भारतीय सामाजिक व्यवस्था के बुरे प्रभावों के कारण हिन्दुओं की तरह कठोर जात-पात के दायरों में कैद कर दिया गया है और यही भेद-भाव उस सम्बन्धित बिरादरी की सामाजिक पहचान बन गई है।

(4) मुसलमानों की इन पिछड़ी बिरादरियों का शोषण स्वयं उनके संस्थाओं द्वारा होता रहा है जो उनके हितों के संरक्षण का दावा करती है।

(5) मुसलमानों की अधिकांश निर्धन बिरादरियों की निशानदेही करके उन्हें अत्यन्त पिछड़े वर्गों की सूची में सम्मिलित करने की आवश्यकता है ताकि रोजगार और अन्य क्षेत्रों में निर्धारित नियमों के अन्तर्गत सुविधाएं मिल सके।

(6) इस बात का भी मूल्यांकन किया जाना चाहिए कि हमने स्वतंत्रता के विगत 50 वर्षों की अवधि में राष्ट्रीय संसाधनों का कितना प्रतिशत देश की अन्य जनसंख्या की तुलना में मुस्लिम समुदाय के पिछड़े वर्गों की उन्नति में लगाया है।

उपरोक्त बातें अत्यंत विचारणीय है। विशेष रूप से उन व्यक्तियों के लिए जो मुसलमानों के नेतृत्व का दावा करते हैं और उनकी प्रगति एवं खुशहाली का दम भरते हैं। बातें उनके लिए भी विचारणीय है जो अपने आपको बुद्धीजीवी मानते और सामाजिक अध्ययन के क्षेत्र में संलग्न हैं। ये बातें उनलोगों के लिए भी महत्वपूर्ण हैं जो स्वयंसेवी संस्थाएँ चलाते हैं और गरीबी एवं पिछड़ेपन के विरूद्ध लड़ाईयाँ लड़ने का हौसला रखते हैं क्योंकि इस संक्षिप्त पुस्तिका में एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण प्रश्न उठाया गया है जो मुस्लिम समुदाय के लिए विचारणीय है। लेखक के शब्दों में-"सवाल यह है कि हम मुस्लिम समाज के इन पसमान्दा तबकों को रोजगार के सीमित अवसरों और सामाजिक रस्साकशी के खूटों से बांध कर कबतक कामयाब हो सकेंगे। क्या ऐसा करके हम मुस्लिम समाज के पसमान्दा तबकों के प्रति अपनी बसीतर जिम्मेदारियों और फराएज से बरी हो सकेंगे?

संपर्क : अनुग्रह नारायण सिंह समाज अध्ययण संस्थान, पटना-1

राष्ट्रीय नवजागरण के कवि : मैथिलीशरण गुप्त

❑ डा. खुशी लाल मंडल

भारत की सांस्कृतिक चेतना के उन्नायक, पुनरूत्थान वादी चेतना के संवाहक, भारतीय संस्कृति के प्राचीन और नवीन आदर्शों के समन्वयक, लोकमत के निर्माण के लिए नूतन प्रणाली से विस्तीर्ण एवं प्रशस्त राष्ट्रीय मार्ग के निर्माता, भारतीय राष्ट्रीयता के प्रबल समर्थक, भारतीय नारीत्व के आदर्श के प्रतिष्ठापक, विश्वबन्धु बापू के मानवतावादी दर्शन के सफल व्याख्याता राष्ट्रीय नव-जागरण के वरदपुत्र, हिन्दी साहित्य के विकास श्रृंखला की प्रधान कड़ी, हिन्दी साहित्य के विकास की माला का प्रधान प्रसून, जातीय और सामाजिक बहुआयामी पीड़ा को बोध कराने वाला सद्देश्य कवि गुप्त ने मानवीय मूल्यों का मूल्यांकन जिस ईमानदारी एवं सच्चाई से किया है वैसा शायद ही किसी ने हिन्दी साहित्य में किया है ।

मैथिली शरण गुप्त के भाव पक्ष के लिए दो प्रधान- स्तंभ हैं–राष्ट्रीयता और सांस्कृतिकता । गुप्त जी खड़ी बोली काव्य-चटसार के सीधे-सादे प्राथमिक गुरू हैं । आज हिन्दी का एक भी कवि ऐसा नहीं है जिसने उनसे ही काव्य का ककहरा सीखा हो ।

गुप्त जी तत्कालीन भारतीय राजनीति, सामाजिक व्यवस्था को बदलकर एक शोषण रहित व्यवस्था की स्थापना में आस्था रखते थे । भारत भारती के अतीत, वर्तमान भविष्यत खण्डों से इसी बात की सूचना मिलती है । उनका युग पराधीन भारत को स्वाधीन बनाने के पौरूष की मांग कर रहा था । अपनी सांस्कृतिक भूमि पर स्वाधीनता का वह स्वर्णिम स्वप्न गुप्त जी बुनते रहे जो सर्वभूत कल्याण की कामना में निरत रहा । वह स्वप्न उन्हीं के जीवन में साकार भी हो गया ।

गुप्त जी दिक काल और जाति के आपसी प्रभावों को भली भांति पहचानते थे, ग्राम-नगर की स्थितियों, जरूरतों और भारतीय समाज की मनोदशाओं को भी निकट से जानते थे । भारतीय संस्कृति के संश्लिष्ट-प्रवाह अभिजात्य एवं लोकधर्मों के परस्पर तनावों से भी भिन्न थे ।

सन् 1962 में प्रकाशित 'भारतभारती' पराधीनता के दुःखद दिनों में भी पुत्र गर्ता बनकर जन-जन के कंठ में समा गई थी । उनके व्यक्तित्व की बहुचर्चित विशेषता-राष्ट्रीयता का राग-इस रचना के अक्षर-अक्षर में वेदमंत्रों की तरह गुजांयमान है । कृषि प्रधान देश में भारत में कृषकों की दयनीय दशा पर कवि का अन्तर्मन व्यथित है । किसानों को भी प्रेरणा दिये हैं ।

गुप्त जी की स्थायी कीर्ति का मूलाधार उनका विशाल प्रबंध काव्य 'साकेत' है । अपनी इस रचना के लिए एक ओर तो कवि युगों से लोकमानस में सुप्रतिष्ठित रामकथा को चुना किन्तु दूसरी ओर उसकी मूल प्रेरणा इस रचना के पीछे उपेक्षित उर्मिला की अथाह वेदना और असाधारण धैर्य को अंकित करने की है । गुप्त जी मानवीय संबंधों के प्रभावशाली चित्रकार हैं । राष्ट्रीय नव जागरण में गुप्त जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है । उनका त्याग सराहनीय है । राष्ट्र के प्रति वे चिंतनशील कवि रहे हैं ।

संपर्क : आर.के. कॉलेज, मधुबनी

राष्ट्र के प्रति छात्रों का कर्त्तव्य

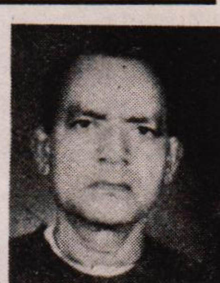

❑ गंगा प्रसाद 'गंगेश'

युगों पूर्व हमारे देश के मनीषियों ने जब-जब मानव जीवन की अवस्थाओं की व्याख्या की तो उसके साथ-साथ वे उनके धर्म और कर्त्तव्य का भी विश्लेषण और विवेचन किया था । महान दूरदर्शी युग द्रष्टाओं ने विद्यार्थी शब्द में निहित गुणों की व्याख्या इस प्रकार की है–

काक चेष्टा, बको ध्यानम्,
स्वान निद्रा तथैव च

अल्पहारी, गृहत्यागी पंच विद्यार्थी लक्षणंम् कितना महान आदर्श है । क्या इस प्रकार के आदर्श युग या काल की सीमाओं में बंधे रह सकते हैं ? कदापि नहीं !

किन्तु आज की परिस्थिति भिन्न हैं, शिक्षा स्वरूप भिन्न है । तो विद्यार्थी किस प्राचीन आदर्शो का पालन कर सकता है । आज व्यक्ति-व्यक्ति का संबंध राजनीति से किसी रूप में अवश्य है । सबके माथे पर राजनीति एक सनक के रूप में सवार है ।

विद्यार्थी का प्रजातंत्र से बहुत गहरा संबंध है । प्रजातंत्र एक ऐसी व्यवस्था है जो जनता की जनता के लिए और जनता के द्वारा सरकार बनाई जाती है । प्रजातंत्र में देश के लोगों, विद्यार्थियों को अपने विचारव्यक्त करने की पूरी छूट है क्योंकि यह सरकार जनता के हित के लिए ही होती है विद्यार्थी प्रजातंत्र के अधिकारों के भागी होते हुए भी देश के भविष्य के जिम्मेवार भी हैं उन पर राष्ट्र का उज्ज्वल भविष्य निर्भर करता है ।

देश की अनुशासन व्यवस्था को बनाए रखने में विद्यार्थियों की महत्वपूर्ण भूमिका है । उनके जीवन में ही अनुशासन का बड़ा महत्व है । विद्यार्थी जीवन राष्ट्र के विशाल निर्माण की नींव है । इस नींव को अनुशासन के माध्यम से ही सुदृढ़ बनाया जा सकता है । अनुशासनहीनता जनतंत्र में महान खतरा का भोंपू हैं । जिम्मेवारी से भागना कायरता और अकर्मण्यता का द्योतक है । राष्ट्र के निर्माण में विद्यार्थी का योगदान है और रहेगा । आज विद्यार्थी दिशाहीन हो रहे हैं, सही नेतृत्व का अभाव है । विद्यार्थियों में राष्ट्रीय विचार से भावनाओं का भोजन करायें, जिससे छात्र राष्ट्रीय हो सकें ।

संपर्क : श्री शंकर उच्च विद्यालय, बेगुसराय

केन्द्रीय पांचवें वेतन आयोग की सिफारिशें लागू

केन्द्र सरकार ने अपने कर्मचारियों के पांचवें वेतन आयोग की सिफारिशों को संयुक्त सलाहकार मशीनरी (जे.सी.एम) के साथ 11 सितम्बर को हुए समझौते के अनुसार लागू करने के बारे में केन्द्रीय मंत्रीमंडल की स्वीकृति के उपरान्त 3 अक्टुबर, 1997 की रात अधिसूचना जारी कर दी । इसके मुताबिक केन्द्रीय गुप 'ए' सेवाओं के वेतनमान में कोई संशोधन नहीं किया गया है । नया वेतनमान 1.1.96 से लागू होगा ।

केन्द्रीय वेतनमान : एक नजर में

ग्रेड एस-1	रू. 2550-55-2660-60-3200
ग्रेड एस-2	रू. 2610-60-3150-65-3440
ग्रेड एस-3	रू. 2650-65-3300-70-4000
ग्रेड एस-4	रू. 2750-70-3800-75-4400
ग्रेड एस-5	रू. 3050-75-3950-80-4590
ग्रेड एस-6	रू. 3200-85-4900
ग्रेड एस-7	रू. 4000-100-6000
ग्रेड एस-8	रू. 4500-125-7000
ग्रेड एस-9	रू. 5000-150-8000
ग्रेड एस-10	रू. 5500-175-9000
ग्रेड एस-11	रू. 6500-200-6900
ग्रेड एस-12	रू. 6500-200-10500
ग्रेड एस-13	रू. 7450-225-11500
ग्रेड एस-14	रू. 7500-250-12000
ग्रेड एस-15	रू. 8000-275-13500
ग्रेड एस-16	रू. 9000-275 फिक्सड
ग्रेड एस-17	रू. 9000-275-9550
ग्रेड एस-18	रू. 10000-325-10975
ग्रेड एस-19	रू. 10000-325-15200
ग्रेड एस-20	रू. 10650-325-15850
ग्रेड एस-21	रू. 12000-375-16500
ग्रेड एस-22	रू. 12750-375-16500
ग्रेड एस-23	रू. 12000-375-18000
ग्रेड एस-24	रू. 14300-400-18300
ग्रेड एस-25	रू. 15100-400-18300
ग्रेड एस-26	रू. 16400-450-20,000
ग्रेड एस-27	रू. 16400-450-20,900
ग्रेड एस-28	रू. 14300-450-22400
ग्रेड एस-29	रू. 18400-500-22400
ग्रेड एस-30	रू. 22400-525-24500
ग्रेड एस-31	रू. 22400-600-26000
ग्रेड एस-32	रू. 24050-650-26000
ग्रेड एस-33	रू. 26000-फीक्सड
ग्रेड एस-34	रू. 30,000-फीक्सड

आवास किराया भत्ता

शहरों की श्रेणियाँ	मकान किराया भत्ता की दरें
ए-1 श्रेणी	वास्तविक मूल वेतन का 30%
ए, बी-1 और बी-2	वास्तविक मूल वेतन का 15%
सी श्रेणी	वास्तविक मूल वेतन का 7.5%
अवर्गीकृत	वास्तविक मूल वेतन का 5%

वेतन निर्धारण का फार्मूला : केन्द्रीय अधिकारियों एवं कर्मचारियों के नये वेतनमान में वेतन के निर्धारण का फार्मूला इस प्रकार है –

पुराने मूल वेतन के साथ एक सौ अड़तालीस प्रतिशत या 1.1.96 को देय महंगाई भत्ते तथा अंतरिम राहत की प्रथम किस्म की सौ रूपये की राशि एवं पुराने मूल वेतन के दस प्रतिशत अन्तरिम राहत की दूसरी किस्त और पुराने मूल वेतन में 40% प्रतिशत की वृद्धि करके होगा । इसके कूल योग की रकम को नये वेतनमान में वेतन वृद्धि के साथ फीट किया जायेगा ।

केन्द्र सरकार के सिविल कर्मचारियों और अखिल भारतीय सेवाओं के कर्मचारियों के संशोधित वेतनमान 1 जनवरी 1996 से लागू होगा । महंगाई भत्ते को छोड़कर शेष सभी संशोधित भत्ते 1 अगस्त 1997 से प्रभावी होंगे ।

बकाया राशि का भुगतान : बकाया राशि यदि 5 हजार रूपये से कम है तो उसका भुगतान कर दिया जायेगा अगर बकाया राशि 5 हजार रूपये से अधिक है तो भुगतान दो किस्तों में किया जायेगा । पहली किस्त में 5 हजार रूपये के साथ बकाये राशि का आधा इसी वित्तीय वर्ष में कर दिया जायेगा और आधा वित्तीय वर्ष 1997-98 में किया जायेगा ।

चिकित्सकों को प्रैक्टीस बंदी भत्ता : डाक्टरों को आय के स्तर के अनुसार दिया जाने वाला प्रैक्टीस बंदी भत्ता समाप्त कर उन्हें मूल वेतन का 25 प्रतिशत प्रैक्टीश बंदी भत्ता इस शर्त के साथ सामान्य रूप से दिया जायेगा कि वेतन या प्रैक्टीस भत्ते का कूल जोड़ 29,500 से अधिक नहीं हो ।

नये वेतनमान में महंगाई भत्ते : नये वेतनमान में महंगाई भत्ते की राशि कर्मचारियों को देने के लिए महंगाई में बढ़े हुए सूचकांक के लिए शत प्रतिशत न्यूट्रलाइजेशन होगा । इसके अनुसार 1 जुलाई 96 तथा 1 जनवरी 97 से मूल वेतन का 4 प्रतिशत तथा 1.7.97 से 5% यानी कूल मिलाकर 13% 1.7.97 से महंगाई भत्ते की राशि मिलेंगी ।

यातायात भत्ता : महानगर में विभिन्न वेतन स्तर के अनुसार प्रतिमाह 400 सौ रूपये से 800 रूपसे तक तथा अन्य शहरों में 75 रूपये से 400 रूपये की राशि मिलेगी ।

पेंशन : 1.1.96 से सेवानिवृत कर्मचारियों को पेंशन की वेतनमान राशि पर 40% की वृद्धि की जायेगी तथा उसे महंगाई भत्ते 1.7.96-1.1.97 तथा 1.7.97 से क्रमश: 4,4, एवं 5% की दर से मिलेगीं । 1.1.96 से पूर्व सेवा निवृत होने वाले कर्मचारियों का पेंशन 1.1.96 को नोशनल निर्धारित चेतन का 50% पेंशन मिलेगा । पेंशन का कम्यूटेशन 33% के बजाय 40% किया जा सकेगा ।

उपादान : उपादान की अधिकतम राशि 1½ लाख रूपये से बढ़ाकर 2½ लाख रूपये कर दी गयी है ।

पारिवारिक पेंशन : पारिवारिक पेंशन सभी वर्गके कर्मचारियों के लिए सेवा निवृत के वक्त के मूल वेतन का 30% की दर से दिया जायेगा । और यह राशि कम से कम 1250 होगी ।

कार्यालय संवाददाता

राष्ट्रीय भावना का उद्भव, विकास और पतन

❑ डा. हरिहर नाथ प्रसाद

उद्भव : जब हम किसी राज्य की कल्पना करते हैं तो हम उसके मूल तत्व जनसंख्या, भू-भाग, सरकार और उसकी सम्प्रभुता को इनकार नहीं कर सकते हैं । पाँचवा तत्व किसी राज्य के आम नागरिकों की सोच है, जिसे व्यापक रूप में राष्ट्रीयता के रूप में जाना जाता है । उल्लेखनीय है कि ईसा पूर्व छठी शताब्दी के भारत में दो प्रकार के राज्य थे जिसे राजतंत्रीय और गणतंत्रीय स्वरूप में माना जाता था । देश में उस समय कोई ऐसा शक्तिशाली विशाल साम्राज्य नहीं था, जो संपूर्ण भारत को एक राजनैतिक सूत्र में बाँध केन्द्र से भारत का संपूर्ण शासन चला सके ।

विकास : भारत में अंग्रेजी राज्य के साथ ही उसका विरोध भी शुरू हुआ था । असंतोष का भयंकर विद्रोह 1857 में हुआ था, जिसे कुछ लोग सिपाही विद्रोह मानते हैं । वस्तुत: यह एक संपूर्ण राष्ट्रीय आंदोलन था, जिसे स्वतंत्रता संग्राम कहना उचित होगा । असंतोष की ज्वाला जलती रही ओर पाश्चात्य शिक्षा के प्रसार और राजनैतिक एकता के कारण देश में राष्ट्रीय भावना को बल मिला । काल क्रम में राजनैतिक एकता, अंग्रेजी शिक्षण का प्रचार, धार्मिक और सामाजिक आंदोलन, भारतीयों के प्रति अंग्रेजों के भेदभाव की नीति, बेकारी और गरीबी तथा समाचार पत्र एवं साहित्यक रचनाओं में भारतीय राष्ट्रीय भावना जागरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया । उल्लेखनीय है देश बिना भेद के एक सूत्र में बंध गया था किंतु 1932 ई. में ब्रिटिश प्रधान मंत्री मैक डोनॉल्ड ने एक चाल चली जिसे 'साम्प्रदायिक पंचाट' कहते हैं। इसमें मुसलमानों की तरह हरिजनों के लिए पृथक निर्वाचन प्रणाली के व्यवहार की घोषणा की गई, यह घोषणा राष्ट्रीय भावना में विष का काम किया । 1938 में यह देश की राष्ट्रीय भावना को काफी प्रभावित किया, जिससे साम्प्रदायिक वैमनस्य एवं पृथकतावादी भावना को काफी बल मिला । हिन्दू और मुसलमान दो अलग-अलग राष्ट्र की कल्पना की गई और जुलाई 1947 ई. में भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम पारित किया गया जिसके अनुसार भारत और पाकिस्तान दो स्वतंत्र राज्य बने ! 26 नवम्बर 1949 ई. में भारत में एक संपूर्ण प्रभुत्व संपन्न समाजवादी मंच निरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गण राज्य की स्थापना की गई । समस्त नागरिकों सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक, न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता का संकल्प लिया गया । किंतु यह सब संकल्प मात्र रह गया ।

पतन: स्वतंत्रता के बाद साम्प्रदायिकता एवं भ्रष्टाचार को काफी बढ़ावा मिला। आपराधिक तत्व देश के राष्ट्रवादी तत्वों पर हावी हो गए और राष्ट्रीय भावना को काफी आघात पहुँचा और वे अपने को अलग-अलग महसूस कर रहे हैं । देश के राजनेताओं, कर्मचारियों तथा व्यापारियों ने सरकारी खजाना को वेरहमी से लूट लिया, जो कई घोटालों के अवलोकन से स्पष्ट होता है, जैसे नागरवाल कांड (1971), ए.डी. डब्बलू सब मरीन डील (1981), अतुले केश (1982), बोफर्स डील (1987), सेक्युरीटी घोटाला (1992), सुगर स्कैक (1944), हवाला केश (1996), पशुपालन घोटाला (1996) आदि प्रमुख हैं ।

देश के प्राय: अधिकतर राजनेता एवं प्रशासनिक स्तर के पदाधिकारीगण भ्रष्टाचार में लिप्त हैं और सरकारी खजाना लूटने के सिवा देश में प्रगति के लिए उनका कोई कार्यक्रम नहीं है । विवेक के अभाव में कुछ नागरिक एक दूसरे की जान लेने पर तुले हैं और बिहार में अकेले "प्राईवेट आर्मी" है ।

अंत में यह स्पष्ट करना उचित होगा कि देश में 1857 में जो राष्ट्रीय भावना का उद्भव हुआ था, विकास की स्थिति पहुँचने के पहले ही अधोगति की अवस्था में है और देश का अपराधीकरण हो गया है । संसार के भ्रष्टाचार के देशों में इसकी भी गिनती हो गया है । राष्ट्रवादी विचार रखने वाले तमाम प्रबुद्ध वर्ग का दायित्व है कि इस पहलू पर मनन चिंतन कर एक मंच से राष्ट्रीय भावना हेतु मार्गदर्शन करें ।

संपर्क : शिवपथ, चाँदपुर वेला, पटना-1,
दूरभाष : 227453

agriculture centre

Deals in : ALL VEGETABLE SEEDS & PESTICIDES

Jamal Road, Patna-1,

Ph. : 235835 (Off.)
223736

Ph. : 06132-23031 (Res)
22450

पर्यावरण संरक्षण : हम सबका कर्तव्य

❑ शिवाजी पासवान

सम्प्रति न तो साँस लेने के लिए शुद्ध हवा है, न पीने को स्वच्छ जल, यहाँ तक कि मिट्टी भी विषैले रसायनों के कारण निरापद नहीं रही। ऐसी स्थिति में ध्यान अनायास प्राकृतिक वातावरण की ओर खिंच जाता है। अब तक वन्य प्रान्तर ही ऐसे क्षेत्र थे, जिन्हें इन सब से अछूता कहा जा सकता था; पर पर्यटकों की बढ़ती भीड़ ने इन्हें कहीं का न रखा। वन-पर्वत सभी धीरे-धीरे इसकी चपेट में आ रहे हैं।

हिमालय को 'देवात्मा' कहा गया है। इसके दो कारण है। वहाँ का वातावरण इतना शान्त, मनोहारी और रमणक है कि जाकर फिर जनसंकुल वातावर में लौटने की इच्छा नहीं होती। यह स्थूल वातावरण की चर्चा हुई। वहाँ का सूक्ष्म वातावरण इतना प्राण वान, प्रखर और ऊर्जा से ओत-प्रोत है कि दृश्य-अदृश्य का यह अद्भुत समन्वय उसे ऐसी दिव्यता प्रदान करता है, जिसे 'देवात्मा' कहना ही उचित होगा। सूक्ष्म शरीरधारी तपस्वियों और स्थूल देहधारी योगियों की उपस्थिति के कारण भी वह 'देवात्मा' कहलाने योग्य हैं। दुनिया की सबसे ऊँची चोटी 'एवरेस्ट' यहीं है। कुछ साहसी पर्वतारोही उस पर चढ़ने का लोभ संवरण नहीं कर सके। सन् 1953 में न्यूजीलैंड के एडमंड हिलेरी और गोरखा तेनजिंग नोरगे ने सर्वप्रथम उस सर्वोच्च शिखर पर चढ़कर अपनी विजय-पताका फहरायी इसके बाद ऐसे अभियानों की बाढ़ सी आ गयी। हर वर्ष कई दल आरोहण के लिए प्रस्थान करते और सफल-असफल होकर लौट आते है। जिसमें से अनेक इस प्रयास में कालकवलित भी हो जाते हैं।

यहाँ से हिमालय की दुर्दशा की शुरूआत हुई। इनदिनों आदमी की मानसिकता ऐसी बन गयी है कि वह कहीं भी जाता या रहता है, वहाँ के पर्यावरण से छेड़-छाड़ अवश्य करता है। यही इस पर्वतराज के साथ हुआ। जब पर्वतारोहण बड़े पैमाने पर आरंभ हुआ, तो पर्यावरण नष्ट होने लगा।

हम सबका कर्तव्य है कि हम पर्यावरण का संरक्षण करें। अधिक जागरूकता हवा, पानी, मिट्टी की सुरक्षा के प्रति बरती जाने की आवश्यकता है तभी हम सही अर्थों में उस स्थिति को उपलब्ध कर सकेंगे, जिसे समय स्वस्थता की संज्ञा दी जा सके।

मनुष्य और पर्यावरण का परस्पर गहरा संबंध है। पर्यावरण यदि प्रदूषित हुआ, तो व्यक्ति अस्वस्थ होंगे और जनस्वास्थ्य को शत-प्रतिशत उपलब्ध कर सकना किसी भी प्रकार संभव न हो सकेगा। इसके विपरीत वह यदि सुरक्षित और संरक्षित रहा, तो संपूर्ण स्वस्थता के लिए आकाश-पाताल के कुलाबे मिलाने की जरूरत न पड़ेगी और थोड़े से प्रयास से ही वांछित लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकेगा।

सम्पर्क : नवटोलिया, लहेरियासराय, दरभंगा

बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण पर्षद्

BIHAR

बेल्ट्रॉन भवन, शास्त्रीनगर, पटना-23, दूरभाष : 281776/281250/282265/फैक्स : 0612-281050

एक परिचय

बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण पर्षद् की स्थापना नवम्बर, 1974 को भारतीय संसद द्वारा पारित जल (प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण) अधिनियम, 1974 में किये गये प्रावधानके अनुरूप की गयी है। राज्य पर्षद् के वित्तीय सुदृढ़ीकरण हेतु संसद द्वारा जल (प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण) सेस अधिनियम, 1977 पारित किया गया ताकि पर्षद अपने दायित्वों को सफलतापूर्वक सम्पादित कर सके।

मई, 1981 से राज्य प्रदूषण नियंत्रण पर्षद् को वायु (प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण) अधिनियम, 1981 की धाराओं के अन्तर्गत वायु प्रदूषण नियंत्रण की अतिरिक्त जिम्मेवारी सौंपी गई। जल एवं वायु अधिनियम की धाराओं को सख्ती से लागू करने हेतु बनाये गये पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, 1986 से संबंधित कतिपय कार्यों का भार भी राज्य पर्षद को सौंपा गया है।

बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण पर्षद् उपरोक्त अधिनियम के अन्तर्गत किये गये प्रावधानों को राज्य की सीमा में लागू कराती है। यह पर्षद् एक नियामक निकाय है, जो तकनीकी एवं वैज्ञानिक संस्था की तरह कार्य करती है।

बिहार राज्य प्रदूाण नियंत्रण पर्षद् द्वारा सम्पादित कार्यों का मुख्य उद्देश्य जल एवं वायु के प्राकृतिक गुणों को बनाये रखना एवं इस प्रकार पर्यावरण संरक्षण में सहयोग करना है।

इस हेतु प्रर्षद् द्वारा किये गये कार्यों में से कुछ प्रमुख उपलब्धियाँ निम्न प्रकार हैं :

1. अनुसंधान, विकास एवं प्रशिक्षण कोषांग की स्थापना।
2. केन्द्रीय प्रयोगशाला में जल वहिस्त्राव के नमूने को संरक्षित रखने हेतु शीत प्रकोष्ठ की स्थापना।
3. वाहन उत्सर्जन जाँच केन्द्र की स्थापना।
4. इन्वायरमेन्ट बुलेटिन का प्रकाशन।
5. आधुकितम पुस्तकालय की स्थापना।
6. उद्योगों के उपचार संयंत्र के औचक निरीक्षण हेतु टास्क फोर्स कमिटी का गठन।
7. संचार तंत्र का सुदृढ़ीकरण।
8. ध्वनि प्रदूषण का सर्वेक्षण।
9. केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण पर्षद् द्वारा पर्षद् के प्रशिक्षण कोषांग को "इस्ट्र्न जोन ट्रेनिंग सेन्टर" घोषित किया जाना।

शिवम् प्लान्टेशन (प्रा.) लि.

पर्यावरण एवं समृद्धि की दिशा में कार्यरत
एक मात्र अग्रणी एवं विश्वसनीय कम्पनी

मात्र 2000 रू. का
निवेश 10 वर्षों में ही 28 हजार रू.

अन्य आकर्षण

1. पहले से लगा हुआ प्लाईवुड लकड़ी के वृक्ष का मालिकाना हक ।
2. वृक्षारोपण स्थल भ्रमण की मुफ्त सुविधा ।
3. 25 हजार का मुफ्त दुर्घटना बीमा ।
4. वृक्ष भी बीमाकृत ।

तो आइये आज ही निवेश कर बिटिया की हो शादी, या उच्च शिक्षा का अरमान या हो अपना एक मकान का सपना पूरा करें ।

वृक्षारोपण स्थल - सिवान, पटना एवं पूर्णिया जिला
(इस कम्पनी के निवेशक मंडल मे लोग आपके ही बीच के हैं ।)

प्रिय निवेशक,

इस स्मारिका के प्रकाशन के अवसर पर सरदार पटेल साहब के बारे में कुछ भी कहना बहुत थोड़ा है ।

शिवम् प्लान्टेशन वृक्ष लगाकर समृद्धि से जोड़ते हुए पर्यावरण का भी कार्य कर रही है, वह भी आपके राज्य में ।

उदाहरण स्वरूप टाटा कम्पनी ट्रक बेचती है जिससे क्रयकर्ता तथा विक्रयकर्ता को लाभ है परन्तु वृक्ष लेने वाले अर्थात् क्रयकर्ता एवं कम्पनी के साथ-साथ आम जनता, दलित से विकसित जनता को मुफ्त में आक्सीजन देने तथा पर्यावरण का कार्य हो रहा है ।

आशा है वृक्ष लगाकर अथवा लगवाकर अपने राष्ट्रीय कर्तव्य को पूरा करने में इस कम्पनी की योजनाएँ सहायक सिद्ध होगी ।

एम. सिंहा
प्रबंध निदेशक

सम्पर्क करें

कम्पनी कार्यालय : शिवा भवन, तिलक नगर, कंकड़बाग, पटना-20, फोन : 368655
जोनल कार्यालय : फोन : 222354

महारानी ऐलिजाबेथ की भारत यात्रा

जलियांवाला बाग नरसंहार कांड फिर खबर में

ब्रिटेन की महारानी ऐलिजाबेथ द्वितीय तथा उनके पति डयूफ ऑफ एडिनबरा प्रिंस फिलिप की भारत यात्रा को लेकर जालियांवाला बाग नरसंहार कांड फिर एक बार खबर में आ गया । शाही दम्पति की भात यात्रा प्रारम्भ होने के पूर्व ही यह विवादास्पद इसलिए हो गई क्योंकि अमृतसर भ्रमण के क्रम में महारानी को जालियां बाग में शहीद स्थल पर उन्हें पुष्पांजलि करना था और कांड में मारे गए लोगों के परिजनों की मांग थी कि माहरानी उस कांड के लिए क्षमा याचना करें ।

विदित हो कि 13 अप्रैल, 1919 में स्वतन्त्रता संग्राम के नेताओं के भाषण सुनने के लिए जालियांवाला बाग में इक्कठी भीड़ के निहत्थे लोगों पर ब्रिटिश शासन के जनरल डायर के आदेश पर सैनिकों ने अन्धाधूंध गोलियों की बौछार की जिसके परिणामस्वरूप इस कांड में लगभग 400 लोगों की तत्काल मृत्यु हो गयी थी तथा 1000 लोग घायल हो गए थे ।

उहापोह की स्थिति में तथा कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच शाही दम्पति की यात्रा 12 अक्टूबर, 97 को प्रारम्भ हुई । 71 वर्षीय महारानी ऐलिजाबेथ द्वितीय और 76 वर्षीय प्रिन्स फिलिप ने भारत के राष्ट्रपति तथा प्रधानमंत्री से भेंट की तथा नई दिल्ली में आयोजित इन्डो-ब्रिटिश प्रदर्शनी का उद्घाटन किया ।

इस बीच शहीद भगत सिंह के भान्जे जगमोहन सिंह अपने अनेकों साथियों के साथ महारानी से 1919 के जलियांवाला बाग हत्याकांड के लिए माफी मंगवाने के सवाल पर दिल्ली के राजघाट पर छह घंटे के लिए धरने पर भी बैठे । इसके पीछे उनकी धारणा यही थी कि उस जघन्य हत्याकांड के लिए ब्रिटेन की ओर से महारानी क्षमा याचना कर ब्रिटिश शासन के पापों का प्रायश्चित करें । परन्तु माफी मांगने के बजाय जलियांवाला बाग के शहीद स्थल पर पुष्पांजलि भेंट करना महारानी ने उचित समझा और उसी के अनुरूप शाही दम्पत्ति ने वहाँ स्वतन्त्रता की ज्योति पर श्रद्धा सुमन अर्पित करके न केवल इस घटना के प्रति अफसोस जाहिर किया बल्कि ज्योति के सामने एक मिनट का मौन रख शहीदों के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की ।

जिस देश की जनता के रग-रग में 'अतिथि देवो भव' समाया हुआ हो, वहाँ अपने अतिथि से जोर जबरदस्ती से माफी मंगवाकर पाप का प्रायश्चित कराया जाय, कुछ अटपटा सा अवश्य लगा । प्रश्न यह उठता है कि महारानी के माफी मांगने से क्या अमर शहीद जिंदा हो जाते या फिर जोर जबरदस्ती से माफी मंगवाने से उन शहीदों की आत्मा को कष्ट नहीं पहुँचता ? अच्छा यही हुआ कि दोनों देशों के बीच शांति और सद्भावना बनाए रखने के लिए ऐतिहासिक भूलों के गड़े मुर्दे उखाड़कर माफी मांगने जैसे विचार को त्याग दिया गया । अन्यथा आज पूरे भारत में आजादी के बाद से आज तक अत्याचारी एवं दुराचारी राजनेताओं की शह पर आए दिन हजारों बेगुनाहों की जानें जा रही हैं, उसके लिए क्या वे माफी मांगने को तैयार हैं ?

रा.वि. प्रतिनिधि

बिहार में नून से सस्ता खून : नीतीश

लोकसभा के मुखर सदस्य तथा प्रदेश समता के अध्यक्ष नीतिश कुमार ने गत 19 अक्टूबर को सोनबरसा में नवनिर्माण रैली की सफलता के लिए आयोजित सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि राज्य में नून (नमक) से सस्ता खून हो गया है । राज्य की स्थिति बदहाल हो चुकी है । बिहार मलवे में तब्दील होता जा रहा है । आज बिहार में सबसे अधिक अराजकता, अत्याचार, हिंसा, बड़े पैमाने पर लूट, अपहरण, बलात्कार घटनाएँ हो रही है । भ्रष्टाचार अब शिष्टाचार में बदल गया है ।

नीतीश कुमार

इसके पूर्व मोतिहारी में आयोजित एक पत्रकार सम्मेलन में नीतीश कुमार ने कहा कि बिहार आज ध्वंस के कगार पर पहुँच चुका है । विकास की गतिविधियाँ ठप है । केन्द्रीय राशि का राज्य में उपयोग नहीं हो पा रहा है । बिहार में हुए विभिन्न घोटालों में दस हजार करोड़ रूपयों की लूट हो चुकी है । बिहार सरकार का प्रशासन पर अब कोई नियंत्रण नहीं रह गया है । वर्तमान राज्य सरकार की आड़ में लालू का आतंक राज कायम है क्योकि राबड़ी देवी का कोई अस्तित्व नहीं है ।

रा.वि. संवाददाता

सी.बी.आई अदालत में लालू की पेशी

1155 करोड़ रूपये के बहुचर्चित पशुपालन घोटाला के अभियुक्त बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद को आर.सी. 20 (ए) 96 के मामले में अन्य 32 बंदी अभियुक्तों के साथ सी.बी.आई. के विशेष न्यायाधीश श्याम किशोर शर्मा की अदालत में पेश किया गया ।

विदित हो कि जेल में बंद लालू प्रसाद ने 30 जुलाई, 97को अदालत में आत्मसमर्पण किया था । इनके अलावा पूर्व मंत्री विद्यासागर निषाद, चन्द्रदेव प्र. वर्मा, भोला राम तूफानी, विधायक डा. आर.के.राणा लोक लेखा समिति के पूर्व अध्यक्ष ध्रुव भगत तथा घोटाला के महानायक श्याम बिहारी सिन्हा सहित 55 लोगों पर आरोप पत्र दाखिल किया गया था । इस मामले में लालू प्रसाद समेत 32 अभियुक्त कारा में बंद है जिनमें पूर्व मुख्यमंत्री डा. जगन्नाथ मिश्र को उच्चतम न्यायालय से जमानत मिलने के बाद उन्हें जेल से रिहा किया गया पर बिहार में आने पर उन्हें पाबन्दी लगा दी गयी है जो अपने आप में अदालत का अनुपम फैसला है । कुल 17 अभियुक्त जमानत पर हैं ।

न्यायाधीश श्री शर्मा ने इस मामले में लालू प्रसाद तथा अन्य कई अभियुक्तों की अगली पेशी की तिथि 31 अक्टूबर निश्चित कर दी है । इस मामले में सी.बी.आई. ने 24 सन्दूकों में दस्तावेजों की प्रतिलिपि आंशिक रूप से अदालत में दी ।

इसके अतिरिक्त 19 अक्टूबर को पुनः अन्य तीन मामलों में लालू

प्रसाद अदालत में पेश हुए जिसमें भी पेशी की अगली तारीख 31 अक्टूबर निर्धारित की गयी । श्री प्रसाद ने आर.सी.कांड सं. 38 (ए)/96, 42 (ए)/96 तथा 64 (ए)/96 से सम्बन्धित मामलों के आदेश-पत्र पर अपना हस्ताक्षर किया ।

पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद ने अदालत परिसर में पत्रकारों को बातें बतायी कि पशुपालन घोटाले में बरी होने के बाद ही अपनी राजनीति प्रारम्भ करेंगे । उनका कहना है कि जेल जाने से उनके राजनैतिक कैरियर पर कोई असर नहीं पड़ेगा । जिला प्रशासन द्वारा 18 अक्टूबर, 96 को पत्रकारों, अधिवक्ताओं के साथ किए गए अभद्रव्यवहार तथा बदसलूकी के लिए लालू प्रसाद ने खेद प्रकट किया ।

स्मरणीय है कि सी.बी.आई. ने 23 जून को 950 करोड़ रू. के चारा घोटाले के मामले में बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद के खिलाफ निम्नलिखित बिन्दुओं पर आरोप पत्र दाखिल किया है–

1. महालेखाकार की मार्च 1990 के बाद की रिपोर्ट से ही पशुपालन विभाग में आवंटन से अधिक की निकासी की जा रही थी, लेकिन लालू ने इस पर ध्यान नहीं दिया ।

2. लालू प्रसाद ने मुख्यमंत्री और वित्त मंत्री के दायित्वों का इस्तेमाल न करके घोटालेबाजों को बचाया ।

3. घोटाले के अभियुक्त दीपेश चांडक ने लालू को विधायक आर.के. राणा और सांसद प्रेम गुप्ता के माध्यम से 50 से 55 करोड़ रूपये देने की बात स्वीकार की ।

4. अभियुक्त आर.के. दास ने भी स्वीकार किया कि लालू घोटालेबाजों से पैसा लिया करते थे । 1990 में विधायक दल के नेता के चुनाव के दौरान लालू ने पटना के श्रीकृष्णपुरी के एक गेस्ट हाउस में मुख्य अभियुक्त श्याम बिहारी सिन्हा से 5 लाख रूपया लिये ।

5. 7 जून, 93 को अवैध निकासी पर मुख्यमंत्री ने बैठक की । चाइबासा कोषागार से 50.56 लाख रूपए की फर्जी निकासी का मामला उठा । मुख्य आरोप बी.एन. शर्मा पर था, लेकिन लालू ने कार्रवाई का कोई आदेश नहीं दिया ।

6. फर्जी निकासी के आरोपी बी.एन. शर्मा के कारनामों के बावजूद कांग्रेस विधायक राजो सिंह के 15 जुलाई 93 को लिखे गये पत्र के आधार पर लालू ने शर्मा का स्थानान्तरण रोक दिया ।

7. 5 दिसम्बर, 93 को डॉ. जगन्नाथ मिश्र की अनुशंसा के आधार पर श्याम बिहार सिन्हा को सेवा विस्तार दिया ।

8. 17 अक्टूबर, 95 को जे.पी. वर्मा के पैसे से लालू ने सपरिवार दिल्ली की यात्रा की ।

9. राँची स्थित बिशप बेस्टकार्ड गर्ल्स स्कूल में पढ़ रही अपनी तीन बेटियों का स्थानीय अभिभावक श्याम बिहारी को और 'अधिकृत विजिटर' राणा को बनाया ।

10. आय के ज्ञात स्रोतों से अधिक व अवैध रूप से सम्पत्ति अर्जित की ।

11. दुमका के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. शेषमुनि राम के खिलाफ निगरानी विभाग द्वारा चल रही जांच को विधायक जगदीश शर्मा की अनुशंसा पर रोका ।

12. निगरानी थाना कांड सं. 34/90 में से अभियुक्त रामराज राम का नाम हटवाया ।

13. राज्य के तत्कालीन पशुपालन मंत्री रामजीवन सिंह ने 19 अगस्त 90 को विभाग में 30 करोड़ रूपए के घोटाले की जाँच सी.बी.आई. से कराने की अनुशसा की थी, लेकिन कोई जाँच नहीं हुई ।

14. 25 जनवरी, 1996 को आपूर्तिकर्ता अभियुक्त मुहम्मद सईद का आतिथ्य स्वीकार किया ।

कार्यालय संवाददाता

सरकार के कुछ विवेकहीन निर्णय

नोटों से अशोक महान के हटाने की साजिश

भारत के संविधान ने प्रजातान्त्रिक सार्वभौम राष्ट्र का प्रतीक चिन्ह के रूप में अशोक महान के लाट (राज्य मुद्रा) को विगत 50 वर्षों से दस तथा सौ रूपये के नोटों पर सरकार छापती रही है । पता नहीं किस विवेक के तहत उसे हटा रही है । एक ओर जहाँ हम अपनी आजादी की 50वीं वर्षगांठ मना रहे हैं तो दूसरी ओर हम अपने 50 वर्षों से स्थापित गौरवमय इतिहास को भूलाने का प्रयास कर रहे हैं जो न्यायोचित नहीं प्रतीत होता क्योंकि इससे राष्ट्र की सार्वभौमिकता समाप्त हो सकती है । स्वयं राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने प्रजातान्त्रिक गणराज्य में अशोक के लाट चिन्ह को नोटों में स्थान दिलाने में अग्रणी भूमिका निभाई थी पर आज के सामन्ती नौकरशाह योजनाबद्ध तरीके से उसे हटाकर देश के धर्मनिरपेक्ष स्वरूप को बदलना चाहते हैं जिसका परिणाम खतरनाक भी हो सकता है । इसलिए ऐसे अविवेकपूर्ण निर्णय पर पुनर्विचार की आवश्यकता है ।

उपजातियों/शाखाओं को जाति का दर्जा प्रदान कर जातियों को बांटने की साजिश ।

एक तरफ सरकार जाति कोढ़ से देश को विनष्ट होने से बचाने तथा विभिन्न उपजातियों को एक जाति के सूत्र में बांधने के लिए पिछड़े वर्ग आयोग का गठन कर रही है तो दूसरी ओर बिहार सरकार ने बांटों एवं राज करों की नीति के तहत कई जातियों की उपजातियों/शाखाओं को तोड़-तोड़कर अलग-अलग जाति का दर्जा प्रदान करना प्रारम्भ कर दिया है । उदाहरण के लिए बिहार की पिछड़ी जाति के एनेक्सर 2 की कुशवाहा (कोइरी) जाति की दांगी उपजाति/शाखा को अलग दांगी जाति का दर्जा दे दिया गया है । अखिल भारतीय कुशवाहा महसभा के संरक्षक श्री बनारसी सिंह 'विजयी' ने पत्र जारी कर सरकार से मांग की है कि कुशवाहा जाति की एक शाखा दांगी को अलग जाति घोषित करने संबंधी अधिसूचना शीघ्रातिशीघ्र रद्द की जाय ।

कार्यालय संवाददाता

अरुंधती की कलम से हमारा देश गौरवान्वित

अंग्रेजी की भारतीय लेखिका सुश्री अरुंधती राय को. उनके प्रथम उपन्यास 'गॉड ऑफ स्माल थिंग्स' पर ब्रिटेन का प्रतिष्ठित साहित्यिक बुकर पुरस्कार से सम्मानित किया गया । बुकर पुरस्कार मिलने का अर्थ होता है लेखिका की न केवल अन्तर्राष्ट्रीय पहचान बल्कि उनकी कृति दुनिया भर में सर्वाधिक बिक्री वाली सूची में शामिल किया जाना । इस उपन्यास के लिए लेखिका राय को विश्वभर से कम से कम दस लाख पौंड की अग्रीम राशि तो पहले ही मिल चुकी है । इसके अतिरिक्त पुरस्कार की राशि इक्कीस हजार पौंड है । सुश्री राय की यह पुस्तक बीस देशों में लगभग साढ़े तीन लाख प्रतियाँ बिक चुकी है ।

सुश्री अरुंधती राय न केवल भारतीय हैं अपितु: भारत के दो सर्वाधिक प्रबुद्ध प्रांतों यानी बंगाल और केरल का प्रतिनिधित्व करती हैं । 37 वर्षीया अरुंधती राय मलयाली ईसाई माँ और बंगाली पिता की मेधावी संतान है ।

उक्त उपन्यास में दक्षिण भारत में जातिगत विषमताओं से संघर्ष करने वाले जुड़वा बच्चों की व्यथा की मार्मिक कथा का सशक्त वर्णन किया गया है । इस पुस्तक की संसार भर में चर्चा है । हम भारतीय के लिए यह गौरव का विषय है । सुश्री राय को हार्दिक बधाई ।

रा.वि. संवाददाता

चन्दन तस्कर वीरप्पन को क्या माफी दी जाएगी ?

एक सौ चालीस लोगों के हत्यारे तथा करोड़ों रू. की तस्करी करने वाले वीरप्पन को क्या सरकार माफ कर देगी ? यह प्रश्न आज सबके दिमाग में कौंध रहा है । वीरप्पन सरीखे हत्यारे का क्षमादान की शर्त पर आत्मसमर्पण प्रस्ताव सचमुच तमिलनाडु एवं कर्नाटक सरकार का उस हत्यारे के आगे घूटना टेकना होगा और इस तरह की कार्रवाई से समाज में कई और वीरप्पन पैदा हो जाएंगे तथा यह अपराधियों को सिर चढ़ाने जैसी बात होगी ।

ऐसा प्रतीत होता है कि वीरप्पन का हृदय परिवर्तन नहीं बल्कि ध न-बल से क्षीण हो चुका वह तस्कर अब छल से आत्मरक्षा की तलाश में है और वह नर-पिशाच अब सफेद पोश अपराधी बनना चाहता है । आखिर यही कारण है कि उसने 21 अक्टूबर को छह अपहरण किए गए लोगों को छोड़ा है । करीब 40 पुलिसकर्मियों के साथ-साथ 140 निहत्थे लोगों एवं 2000 हाथियों के हत्यारे चन्दन तस्कर वीरप्पन को माफ किए जाने की संभावना से कई शोक संतप्त परिवारों में भी आक्रोश है क्योंकि कर्नाटक तथा तमिलनाडु की दोनों सरकारों ने वीरप्पन का सामना करने के लिए खासतौर पर गठित पुलिस के विशेष कार्यदल को देश का सबसे खर्चीला तलाशी अभियान बंद करने के आदेश दे दिए हैं ।

वीरप्पन के विरूद्ध अभियान में अपने आरक्षी उपनिरीक्षक बेटे शकील अहमद को खोने वाले तथा वीरप्पन के संभावित आत्मसमर्पण को रोकने के लिए राष्ट्रपति से लेकर कर्नाटक के राज्यपाल तक हर किसी को फैक्स संदेश भेजने पर 10,000 रू. खर्च कर चुके 72-वर्षीय अब्दुल करीम का कहना है–"अगर वीरप्पन ने समर्पण किया तो मैं बंदूक उठा लूंगा और उसकी हत्या कर दूंगा । जब तक वीरप्पन को सजा नहीं होती, मैं शांत नहीं बैठूंगा । फिर चाहे इस संघर्ष में मुझे अपना एक मात्र मकान क्यों न बेचना पड़े ।" इसी प्रकार देवराम, वीरप्पन के खिलाफ अभियान पर रोक को पीड़ितों के परिवारों के साथ दगाबाजी मानते हैं । वीरप्पन के द्वारा गत 9 अप्रैल, 1993 को बारूदी सुरंग से उड़ाए गए तामिलनाडु की पुलिस बस में मृत्य पलानी की अणियम्मा कहती है–"मैं न्याय चाहती हूँ लेकिन जोर से नहीं बोल सकती, क्योंकि वह सताएगा ।" इसी दुर्घटना के एक अन्य पीड़ित की 32 वर्षीया पत्नी मणियम्मल कहती हैं–"वीरप्पन के खिलाफ वे मुंह नहीं खो लेंगी क्योंकि अब जिंदगी दोबारा तबाह नहीं करना चाहती ।"

चन्दन वन की 100 करोड़ रूपये की क्षति करने वाले इस तस्कर वीरप्पन को यदि माफी दी जाती है तो निश्चित रूप से समाज में और जयादा अपवराधी के पनपने की संभावना बढ़ जाती है ।

कार्यालय संवाददाता

मध्यप्रदेश

भारत का वार्षिकोत्सव

अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य-संस्कृति विकास संस्थान, जबलपुर (म.प्र.) का दो दिवसीय वार्षिकोत्सव (साहित्य महोत्सव) के रूप में आगामी 14-15 नवम्बर 97 को शहीद स्मारक भवन, गोल बाजार, जबलपुर मे आयोजित होने जा रहा है । इस अवसर पर साहित्यिक संगोष्ठियाँ, चित्रकला-प्रदर्शनी, बाल कवि सम्मेलन, साहित्यिक पत्रिकाओं की प्रदर्शनी, सांस्कृतिक संध्या, साहित्यिक कवि सम्मेलन एवम् सम्मान-समारोह का भी आयोजन है । इसमें भाग लेने हेतु देश के अनेक ख्यातिलब्ध साहित्यकारों एवम् संस्कृतिकर्मियों को आमंत्रित किया गया है" ।

संस्थान द्वारा आयोजित "अखिल भारतीय युवा काव्य प्रतियोगिता एवं अखिल भारतीय चित्रकला प्रतियोगिता के विजेताओं को भी इस आयोजन में पुरस्कृत किया जायेगा ।

डा. आशा शुक्ला, रा.वि. संवाददाता, जबलपुर

मंच के सक्रिय एवं निष्ठावान सदस्य स्व. तेजप्रताप न केवल उसके कार्यक्रमों से जुड़े रहे अपितु: मंच के प्रति उसका समर्पण का भाव था । म.प्र. के रतलाम जंक्शन पर सहायक स्टेशन मास्टर के पद पर योगदान देने के दो ही दिन बाद विधाता के क्रुर हाथों ने उन्हें हमसे छिन लिया । मंच-परिवार उनके निधन से शोकाकुल है । उनकी आत्मा की शांति के लिए मंच के सारे सदस्य भगवान से प्रार्थना करते हैं–प्र. संपादक

स्वतन्त्रता की स्वर्ण जयंती : बिहार आज कहाँ खड़ा है ?

❑ डा० साधुशरण

14 अगस्त, 1997 की आधी रात के बाद से देश-विदेश में भारत की स्वतंत्रता की स्वर्ण जयंती के अवसर पर देश की स्थिति पर चिंता जताने का एक सिलसिला सा चल पड़ा है । तो आइए, आजादी की 50वीं सालगिरह पर हम भी अपने राज्य बिहार पर एक नजर डालें-आखिर बिहार आज कहाँ खड़ा है ?

स्वतंत्रता-संग्राम में बिहार का योगदान

बिहार भारत का एक ऐसा प्रदेश है जो जनसंख्या की दृष्टि से दूसरे स्थान पर है । खनीज एवं वन सम्पदा में वह राष्ट्र तो क्या सारे संसार में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है । शिक्षा के क्षेत्र में एक समय पूरे विश्व को ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाला नालन्दा विश्वविद्यालय इसी बिहार के मगध क्षेत्र में था । भारत के स्वतंत्रता संग्राम में बिहार की भूमिका सदैव ही महत्वपूर्ण रही । 1857 के सिपाही विद्रोह में अंग्रेजों के खिलाफ बिहार के द्वारा क्रांति का बिगुल बजाने से लेकर, 1908 में मुजफ्फरपुर बम विस्फोट से संबद्ध खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी का शहीद होना, 1916 में मजहरूल हक की अध्यक्षता में पटना में होमरूल की स्थापना, नीलहे अंग्रेजों द्वारा उत्तर बिहार के कृषकों के शोषण से उत्पन्न आक्रोश के कारण आन्दोलन तथा 1942 में गाँधीजी के आह्वान पर 'भारत छोड़ो आन्दोलन' के वक्त पटना सचिवालय पर 11 अगस्त 1942 को झंडा फहराने के कारण अंग्रेज सैनिकों की गोलियों के निशाना बने सात शहीद छात्रों का बलिदान स्वतंत्रता संग्राम में हमारे योगदान की कहानी कह रहा है । इसी प्रकार आजादी की लड़ाई से जुड़े बिहार के क्रांतिकारी इतिहास के पन्नों में झारखण्डवासियों में बिरसा मुण्डा, पहाड़िया जनजाति के रमना आहड़ी, तिलका मांझी, सिद्धो और कान्हो आदि ने तीर-धनुष, भाला और पत्थरों से अंग्रेजी फौज को नाको चने-चबाने की दास्तानें इतिहास के पन्नों में कैद है । पर इतने त्याग और बलिदान के बाद आज जब हम बिहार के हालात पर नजर डालते हैं तो इस स्वतंत्रता की स्वर्ण जयंती वर्ष में हम अपने को कही नहीं पाते हैं ।

शिक्षा : शिक्षा के क्षेत्र में हमारा अतीत भले ही स्वर्णिम रहा हो, कभी विश्वगुरू बनकर दूनिया में ज्ञान दीप प्रज्जवलित करने का श्रेय प्राप्त करने वाले बिहार में हमारे शिक्षा तन्त्र का वर्तमान आज कोई खास उत्साह जगाता नहीं लगता । शिक्षा की बदहाली का आलम यह है कि शिक्षा विभाग तथा विश्वविद्यालय अध्ययन अध्यापन, पुस्तकालय, छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों की आम सुविधाओं की ओर ध्यान देने के बजाय वैयक्तिक वेतनवृद्धि, संगठनात्मक शक्ति के गलत प्रयोग के सामने घुटने टेकने एवं गुणात्मक सुधार के बदले अपने लोगों को अधिकाधिक संख्यात्मक वृद्धि पर जोर डालते रहे हैं । यही कारण है कि बिहार के छात्र बाहर के सभी क्षेत्रों में अच्छा करते हैं तथा पुरस्कृत होते हैं पर अपने राज्य में उसकी कोई कदर नहीं । मसलन यहाँ सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली ही प्रदूषित हो गयी है । आजादी के बाद से अबतक बिहार में शिक्षा के स्तर का ग्राफ निरन्तर नीचे जा रहा है । शिक्षा प्रणाली में व्यवहारिकता-व्यावसायिकता के पुट की कमी ने हमें डिग्री अधिक और रोजगार कम प्रदान किए हैं । हमारे शिक्षा केन्द्र राजनीतिज्ञों की कुत्सित नीति केन्द्र, भ्रष्ट और पैरवीकारों का रंगमंच बन गए हैं । यहाँ शिक्षा की अर्चना ना कर पद और पैसा का नमन किया जाता है । इससे इंकार नहीं किया जा सकता है कि बिहार की इस शैक्षणिक अराजकता के लिए छात्र-शिक्षक, अभिभावक, पत्रकार, साहित्यकार, नेता, सरकारी सेवक आदि सभी समान रूप से जबावदेह हैं । रसातल में जाती हुई बिहार की इस शिक्षा व्यवस्था को कोई भी यदि सम्मानीय स्थान दिलाने में जरा सा भी प्रयास करेगा, बिहार की सजग जनता उसका सहर्ष स्वागत करेगी ।

विधि-व्यवस्था : राजनीति का अपराधीकरण और जातीय विद्वेष की फैलती 'विषबेले' आज हिंसा का तांडव मचा रही है जिसके परिणाम स्वरूप बिहार जैसे पिछड़े प्रदेश से लाखों की तादाद में आर्थिक रूप से कमजोर एवं युवा दूसरे प्रदेश में जिविका की खोज में पलायन कर रहे हैं । हमारे नेता, हमारा अगुआ प्रतिनिधि अपराधी जीवन तथा अपराधी चरित्र से इस कदर आकृष्ट हो गया है कि वे कुर्सी तथा वैयक्तिक लाभ के सिवाय राज्य के बारे में सोचना उनके बस की बात भी नहीं रह गयी है । शहरों की जमीन पर कब्जा, सार्वजनिक योजनाओं पर कब्जा, ठेका-पट्टा, पेट्रोल पम्प, आबकारी तथा अन्यान्य सरकारी करों की चोरी करके आर्थिक व्यवस्था खोखली, राजनीतिक अपराधी की चक्की में पिसती जनता जाति, सम्प्रदाय, क्षेत्र भाई-भतीजावाद के संकुचित दायरे में बदहाल जीवन जीने को विवश है । हत्या, बलात्कार, अत्याचार, दुराचार, भ्रष्टाचार सामूहिक नरसंहार तथा अपहरण की घटनाएं दिन दुगनी रात चौगनी बढ़ती जा रही हैं । महिलाओं पर अत्याचार की घटनाएं पिछले एक दशक में कई गुनी अधिक हो गई है । आज की स्थिति यह है कि अब तो अलग-अलग श्रेणियों, झंडों और चेहरों में यह फर्क करना कठिन हो गया है कि कौन जनता का सेवक है और कौन पेशेवर राजनीति । राजनैतिक परिदृश्य पर कलाबाज, क्षुद्र स्वार्थी तत्व और निरंकुश नेता छाए रहे हैं ।

राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर के हिमालय पर लिखित प्रसिद्ध कविता की कुछ पंक्तियाँ जिसे सुप्रसिद्ध चिन्तक श्री बाल्मीकि प्र. सिंह ने 'आजकल' के सितम्बर अंक में प्रकाशित 'इतिहास की भूमिका' विषय पर अपने आलेख में उद्धृत कर बिहार के संदर्भ में कुछ कहना चाहा है, यहाँ भी उन पंक्तियों को उद्धृत करना मैने लाजिमी समझा है । देखें उन पंक्तियों को-

तू पूछ अवध से राम कहाँ ?
वृंदा ! बोलो, घनश्याम कहाँ ?
ओ मगध ! कहाँ मेरे अशोक ?
वह चन्द्रगुप्त बलधाम कहाँ ?

पैरों पर ही है पड़ी हुई
मिथिला भिखारिणी सुकुमारी,
तू पूछ कहाँ इसने खोई
अपनी अनंत निधियाँ सारी ?

री कपिलवस्तु ! कह बुद्ध देव
कि वे मंगल उपदेश कहाँ ?
तिब्बत, इरान, जापान, चीन
तक गए हुए उपदेश कहाँ ?

वैशाली के भग्नावशेष से
पूछ, लिच्छवी-ज्ञान कहाँ ?
ओ री उदास-गंडकी बता
विद्यापति-कवि के गान कहाँ ?

रे, रोक युद्धिष्ठिर को न यहाँ,
जाने दे उनको स्वर्ण धीर,
पर, फिरा हमें गांडीव-गदा
लौटा दे अर्जुन-भीम वीर ।

तू मौन त्याग, कर सिंहनाद
रे तपी ! आज तप का न काल
नव-युग–शंखध्वनि जगा रही
तू जाग, जाग, मेरे विशाल ।

दिनकर की इन पंक्तियों के माध्यम से जो सवाल खड़ा किया गया है उसका जवाब आज खोजने की आवश्यकता है । और उसके संदर्भ में बिहार के वर्तमान को समझने की आवश्यकता है । हम जिनके वंशज हैं उनकी उपलब्धियों के सामने आज हम कहाँ है ? सम्राट प्रेमचन्द के शब्दों में हम कह सकते हैं–

'हमारे दादा को हाथी था, हम सीकर लिए फिरते हैं ।' बिहार के संदर्भ में हमने कहाँ गलत दिशा पकड़ी है, इसकी छानबीन कर असंतोषपूर्ण स्थिति को बदलने का प्रयत्न करना हमारा कर्तव्य बनता है ।

भारत के साथ-साथ बिहार के शहीदों ने जिस जनतान्त्रिक प्रक्रिया के माध्यम से नव बिहार का सपना देखा था, वह आज बिखरकर रह गया है । सार्वजनिक जीवन में लगातार लग रहे घुन से आज उबरने का सवाल है । सर्वाधिक त्रासदी यह है कि आज हमारा समाज इतने टूकड़ों में बंट गया है कि एक सम्पूर्ण राष्ट्र की कल्पना करना भी व्यर्थ प्रतीत होने लगा है । हम शायद यह भूलते जा रहे हैं कि स्वस्थ समाज के बिना एक समृद्ध व अखण्ड राष्ट्र का निर्माण कतई संभव नहीं दीखता ।

कुल मिलाकर देखा जाय तो आजादी के समय जो समस्याएं मौजूद थीं, वे आज और विकराल रूप में हमारे सामने खड़ी हैं । गरीबी, बेरोजगारी, असमानता, अशिक्षा, अराजकता आदि समस्याएं आज ज्यों की त्यों हमें घेरे हुए हैं जिससे हमें निपटना है ।

संपर्क : रा.प्र. सिंह महाविद्यालय, जैतपुर, मुजफ्फरपुर

महिला राज में महिलाएं त्रस्त

आपको याद होगा बिहार की प्रथम महिला मुख्यमंत्री राबड़ी देवी ने सत्ता संभालते ही कहा था कि औरतों पर अत्याचार किसी भी कीमत पर सहन नहीं किया जाएगा । पर कई माह बीत जाने के बाद भी उस पर अत्याचार रूकने का नाम नहीं ले पा रहा है । दहेज हत्या की वारदातें दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही हैं । अक्टूबर माह के सिर्फ पहले सप्ताह में स᷄᷄ार के उमाकान्त की पत्नी सुनीता, जमुई में एक माँ के साथ दो बेटियों की मृत्यु, कौवाकोल के राजो चौधरी की पत्नी के साथ दो बच्चों की आत्महत्या तथा अगिगांव थाना के नन्दलाल की पत्नी मुन्नी की आत्महत्या के कुल चार मामले सामने आए । इसी प्रकार एक सितम्बर को कटिहार की रानी देवी ने अपनी बेटी सरिता के साथ आत्महत्या की । 18 अक्टूबर को मरांची थाना के गोपाल की पत्नी तथा राजा पाकेड़ थाना के शोभा की हत्या कर दी गई । 17 अक्टूबर को रक्सौल की पूनम को उसके ससूराल वालों ने मार डाला । 15 अक्टूबर को पुनपुन की सरिता को जला दिया गया । 14 अक्टूबर को बगहा की अनिता की हत्या ससुराल वालो ने कर दीं 13 अक्टूबर को शास्त्रीनगर, पटना की बबीता की हत्या हो गई । इसी दिन जोगबनी के इलियास ने अपनी पत्नी उमेशा खातून और बेटी को मार डाला । कुछ दिनों पूर्व आलमगंज थाना की 14 वर्षीया शांति का अपहरण, सोनुपर के महमदपुर गांव की उर्मिजा की दहेज के कारण हत्या आदि की सूची तैयार की जाय तो यह बहुत लंबी कही जाएगी । इस प्रकार महिला मुख्यमंत्री के राज में औरतों का उत्पीड़न और बढ़ा है । उसका दु:ख दर्द सुननेवाला कोई नहीं । बिहार में महिलाओं पर अत्याचार, अपहरण और हत्या के कहर ढाए जा रहे हैं, महिलाएं तिल-तिल कर मर रही हैं पर उसका फरियाद सुनने वाला कोई नहीं । ससुराल वाले तो सताते ही हैं, मायके वालों को भी फूर्सत नहीं और पुलिस बेखबर पड़ी है । सचमुच प्रेम खेतान के उपन्यास 'छिन्नमस्ता'- की प्रिया का कथन कितना सत्य है–"औरत कहाँ नहीं रोती ? सड़क पर झाड़ू लगाते हुए, खेतों में काम करते हुए, एयरपोर्ट पर बाथरूम साफ करते हुए या फिर सारे भोग-ऐश्वर्य के बावजूद मेरी सासूजी की तरह पलंग परस्त रात भर अकेले करवटें बदलते हुए ।" आज जहाँ मानवीय मूल्यों की लाशें सड़ रही हैं, उनके बीच औरतें जीने को विवश हैं । नयी पीढ़ी की महिलाएं संयुक्त परिवार के दमघोंटू वातावरण में जी रही है । परम्परागत संस्कारों के कारण स्त्रियाँ पल-पल मरने को बाध्य हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में सर्वाधिक कहर औरतों पर ही गुजरता है क्योंकि समाज में औरतों के प्रति सम्मान भाव दिन प्रतिदिन कम होता जा रहा है । स्त्री मात्र भोग-विलास की, विज्ञान और नुमाइश तथा भौतिक उपभोग की चीज रह गयी है । उसके लिए सबसे जरूरी है आर्थिक आत्मनिर्भरता । नारी अपने धर्म कर्तव्य और चुनौतियों को अंकुशमुक्त करना चाहती है यद्यपि अभी भी नारी पुरूष के सम्मोहन से उबरी नहीं है ।

वैशाली गणतंत्र के कुछ उल्लेखनीय पहलू

❑ बिपिन विप्लवी

ईसा के जन्म से छः सौ वर्ष पूर्व सूर्य वंशीय राजा विशाल द्वारा वैशाली की स्थापना की गई थी । किन्तु लिच्छवी राजाओं के उद्‌भवकाल में यहाँ राजकाज की गणतंत्रीय व्यवस्था सर्वप्रथम प्रारम्भ हुई जो विश्व में प्रशासन की सर्वोत्तम प्रचलित पद्धति मानी जाती है । ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में यह राज्य मौर्य राज्य का अंग बन गया तथा ईसा के प्रथम एवं दूसरी शताब्दी में कुशान वंश का यहाँ पर राज्य था । चौथी शताब्दी में वैशाली का पुनःरूथान काल शुरू हुआ । उन्नयन के दौरान यहाँ प्राप्त हुई मुद्राओं से पर्याप्त प्रमाण मिल चुके हैं । इस्लामी धर्म प्रचारक संत शाह काजिम के 1435 ई. से 1495 ई. तक यहाँ रहने का प्रमाण भी उपलब्ध है । मुख्य स्थान अब बसाढ़ के नाम से प्रसिद्ध है जहाँ राजा विशाल के गढ़वा अवशेष देखने को मिलता है जिसका उल्लेख अनेक इतिहासकारों ने किया है ।

वैशाली की महत्ता के गौरवपूर्ण इतिहास एक नजर डालने से ऐसा प्रतीत होता है कि वैशाली की ख्याति सैकड़ों सालं तक अक्षुण्ण बने रहने के कुछ ठोस कारण थे । जब वैशाली के प्रशासन, शक्ति और सुदृढ़ता की कहानी चारों दिशाआं में फैल चुकी थी तब कई पड़ोसी साम्राज्यों के अहंकारी राजाओं की लोलूप आँखें इस पर गड़ने लगी । तत्कालीन मगध साम्राज्य के नरेश अजात शत्रु की विस्तारवादी प्रवृति का निशाना भी वैशाली साम्राज्य जब होता-सा दिखाई पड़ने लगा तभी एक दिन अजात शत्रु के महामंत्री वर्षकार ने उसके आक्रमण का एक प्रसंग सिद्ध पुरूष बुद्ध के सामने छेड़ा । तब बुद्ध ने इस संबंध में बहुत गुढ़ बातें आनन्द से कही–

(1) जब तक वैशाली गणराज्य को शिखर शासकगण एकताबद्ध होकर बार-बार सभा करते रहेंगे तब तक उनकी तरक्की होती रहेगी ।

(2) जबतक के एकजुट होकर उद्यम करते रहेंगे और अपने राष्ट्रीय कर्तव्यों के प्रति जागरूक रहेंगे तबतक उन्नति करते जाएंगे ।

(3) जबतक वे सभा की स्वीकृति के बिना कोई काम नहीं करेंगे तथा ऐसे नियमों की अवहेलना नहीं करेंगे, अप्रज्ञप्त को प्रशप्त तथा प्रज्ञप्त को अप्रज्ञप्त नहीं करेंगे अर्थात जबतक वे अपने नियमों के खिलाफ नहीं जाएंगे तबतक वे समृद्धि के बल पर अग्रसर होते जाएंगे ।

(4) जबतक वे अपने श्रेष्ठजनों का सम्मान करेंगे, उनका पतन नहीं होगा ।

(5) जबतक वे कुल कन्या पर अत्याचार नहीं करेंगे, उनका नाश नहीं होगा ।

(6) जबतक वे चैनयों/देवस्थानों को प्रतिष्ठा देंगे और

(7) जबतक वे अर्हतों की रक्षा की भावना से प्रेरित होंगे, उनका पतन नहीं होगा ।

ध्यातव्य है कि प्रबल राज्य भी फूट के बीज बोए जाने पर देखते-देखते धराशायी हो जाता है । मगर नरेश द्वारा जब नाटकीय ढंग से महामंत्री वर्षकार को निष्कासित किया गया तो उसने वैशाली में प्रवेश कर वहाँ की व्यवस्था और समाज में पहले में मतभेद का प्रभावकारी वातावरण उत्पन्न किया । तदुपरान्त सारे राज्य के लोगों से घुलमिलकर उसने बड़े चातुर्यपूर्ण तरीकों से छोटे-छोटे राज्यों, स्वाभियों और घरानों के बीच फूट का विषवमन करना प्रारम्भ कर दिया । फिर क्या था, उसने अपने लक्ष्य में शीघ्र सफलता पाई और लिच्छवी शासन के तन्त्र बिखरने लगे । परिणामस्वरूप लिच्छियों के आपसी भेदभाव की अग्नि प्रचंड हुई और अग्नि की उष्म लपटों में वैशाली की प्रतिष्ठित महिमा अस्मसात होने लगी ।

संपर्क : शैलसु विप्रा सदन, देसरी, वैशाली

बिहार के जनजाति बिरहोर

❑ जानकी प्र. केवट

बिरहोर जनजाति के लोग बिहार के छोटानागपुर पठार के उत्तर पूर्व किनारों पर बसे हुए हैं । इन लोगों का रंग काला, कद छोटा, बाल घुंघराले और नाक चौड़ी होती है । ये लोग कम से कम कपड़े पहनने के आदि हैं । और 'आस्ट्रो एशियाई' बोली बोलते हैं । बिरहोरों का न तो कोई स्थायी निवास स्थान है, न कोई स्थायी आय का साधन ही । जंगली जानवरों का शिकार और फूल-फल इनका प्रिय भोजन है । जंगली जानवर और फल की तलाश में ये लोग छोटानागपुर के जंगलों में एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकते फिरते हैं । इस प्रकार इनके निवास स्थान में भी परिवर्तन होता रहता है । ये लोग किसी स्थान पर कुछ दिनों रह कर दूसरे स्थान पर चले जाते हैं । जब उस स्थान पर भोजन के लिए कुछ नहीं रह जाता है तो फिर कोई तीसरा अनुकूल स्थल खोज निकालते हैं । लगभग कुछ वर्षों के बाद वे वहीं लौट आते हैं, जहाँ से प्रस्थान किये थे ।

बिरहोर आदिम वर्ग के अंतर्गत नौ आदिम जनजातियों में से एक है । इनकी दो उपजातियाँ हैं । पहली ओथलो, जो वर्षा के दिनों को छोड़कर दस-बारह दिन में एक स्थान से दूसरे स्थान पर अपना घर-बार बदलते हैं । दूसरी जारीया धानिया-ये अधिक दिनों तक एक स्थान पर रहते हैं । बिरहोर जनजाति का पहला पुरूष एक गोरैया के डैने के नीचे पैदा हुआ था । इस प्रकार 'गोरैया' वंश का नाम रखा गया । बिरहोर जाति के लोग अपने टोटेम की वस्तु को पवित्र मानते हैं । उन्हें न तो मारते हैं, और न खाते हैं । जंगली जानवरों का शिकार करना और रस्सी बनाना बिरहोरों का आम पेशा है । हर गिरोह में तीन से लेकर बारह परिवार होते हैं । हर गिरोह एक पड़ाव में ठहरता है, जिन्हें उनकी भाषा में टान्डा कहते हैं । हर टान्डा में लगभग दस-बारह झोपड़ियाँ होती हैं । इनकी झोपड़ी इतनी छोटी होती है कि उसमें आदमी लेट सकता है, बैठ सकता है, पर खड़ा नहीं हो सकता । बिहार में जन जाति बिरहोर का अपना महत्वपूर्ण स्थान है ।

संपर्क : लोक अभियोजक, , धनबाद कोर्ट

अंतरिम राहत एंवं केन्द्रीय वेतनमान के लिए पटना सचिवालय कर्मियों का आन्दोलन

'सचिवालय सहायक संयुक्त संवर्ग संघ' के नेतृत्व में 23 सूत्री मांगों को लेकर गत 25 सितम्बर'97 को शुरू पटना सचिवालय के सरकारी कर्मियों की हड़ताल ने राबड़ी सरकार की निंद हराम कर दी है। सचिवालयकर्मियों की स्वत: स्फूर्त यह हड़ताल संभवत: अपने किस्म की पहली है जब पूरे राज्य में सरकारी कर्मचारी कार्यरत हैं पर सचिवालय में पूर्ण तालाबंदी। राज्य के मुख्य सचिव के अनुसार यह हड़ताल अभूतपूर्व के साथ-साथ अप्रत्याशित भी है।

राज्य कर्मचारियों का मानना है कि पूर्व समझौते के अनुसार 1.3.97 को तत्कालीन राज्य सरकार द्वारा लिए गए नीतिगत निर्णय के अनुपालन में राज्यकर्मियों को केन्द्रीय पैटर्न पर मंहगाई भत्ता दिया जाता रहा है और 1.1.86 से राज्य कर्मियों को केन्द्र पैटर्न पर वेतनमान दिया जा रहा है। वर्तमान राज्य सरकार यह मानती है कि राज्यकर्मियों को केन्द्रीय वेतनमान की सुविधा वैचारिक रूप से 1.1.86 से तथा 'वास्तविक रूप' से 1.3.89 से दी गयी। इसलिए केन्द्रीय कर्मचारियों की तरह दस साल के बाद ही यानी 1.3.99 से राज्यकर्मियों के देय पुनरीक्षित वेतन को राज्य सरकार औचित्य मानती है। सिद्धान्त : राज्य सरकारयहाँ सही है परन्तु केन्द्रीय कर्मियों की तरह 1.4.95 से 10% तथा 1.4.96 से पुन: 10% अन्तरिम राहत की क्रमश: दूसरी और तीसरी किस्त की राज्यकर्मियों की मांग भी बिल्कुल सही है। इसके पूर्व केन्द्रकर्मियों की तरह राज्य सरकार 100 रू. अंतरिम राहत दे चुकी है। सरकारी आकलन के अनुसार सरकार द्वारा पेशकश 1.1.96 से सांकेतिक और 1.199 से वास्तविक लाभ के साथ केन्द्रीय वेतनमान को राज्यकर्मियों के द्वारा स्वीकार किए जाने पर सन् 2002 तक राज्य सरकार पर 5500 करोड़ रूपए का अतिरिक्त वित्तीय भार पड़ेगा।

राजस्व पर्षद के सदस्य बी.बी. लाल की अध्यक्षता में गठित चार सदस्यीय अधिकारियों के दल के साथ सचिवालय कर्मियों के प्रतिनिधियों से अब तक चार बार वार्ता हो चुकी है पर बिना किसी नतीजे पर आए समाप्त हो गयी। कर्मचारी प्रतिनिधि जहाँ अप्रैल,95 से 10% और अप्रैल, 96 से कुल 20% अन्तरिम राहत की मांग पर अड़े रहे वहीं राज्य सरकार के प्रतिनिधि केन्द्रीय कर्मियों व राज्यकर्मियों की सेवा शर्तों में समरूपता लाने या जनवरी, 99 से पुनरीक्षित वेतनमान लागू करने हेतु

चार सदस्यीय अधिकारियों के दल में बी. लाल के अलावे अपर वित्त आयुक्त एस. विजय राघवन, कार्मिक सचिव नवीन कुमार और योजना आयोग व विकास सचिव शंकर प्रसाद शामिल हैं। इसके अतिरिक्त राज्य सरकार द्वारा उच्चस्तरीय वार्ता के लिए विकास मंत्री तुलसी सिंह के संयोजकत्व में गठित चार सदस्यीय मंत्रीमण्डलीय आर्थिक मामले विषयक समिति के वित्त मंत्री शंकर प्रसाद टेकरीवाल, जल संसाधनमंत्री जगदानन्द सिंह और श्रम मंत्री कमल पासवान सदस्य हैं। उलेखनीय हैं कि हतिहास में पहली बार वर्तमान सरकार आन्दोलनकर्मियो से निबटने के बजाय सचिवालय तथा राज्य सरकार के कार्यालयों को... ....पहले तीन दिनों के लिए तथा बाद में दो दिनों के लिए बन्द कर दिया गया। पुन: दशहरा पुजा के बाद कार्यालय खुलने पर सरकार ने दमन का रास्ता अख्तियार किया। आन्दोलित कर्मचारियों पर न केवल अश्रुगैस के गोले छोड़े गए बल्कि उनपर लाठियों का प्रहार किया गया तथा सैकड़ों प्रदर्शकारी तथा संगठन के नेताओं को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया।

इसी बीच बिहार राज्य अराजपत्रित कर्मचारी महासंघ के गोपाल प्र. त्रिपाठी ने घोषणा की कि 20% अन्तरिम राहत के साथ नया केन्द्रीय वेतन मान लागू करने की मांग को लेकर 22 नवम्बर को। राज्य स्तरीय प्रदर्शन तथा 19 दिसम्बर, 97 से अनिश्चितकालीन हड़ताल करेंगे। सचिवालय कर्मियों पर बढ़ रहे दमन के खिलाफ बिहार राज्य अराजपत्रित कर्मचारी महासंघ के गोप गुट ने भी 23 एवं 24 अक्टूबर, 97 को राज्य भर में सरकारी कार्यों का बहिष्कार करेगा। इस आशय की घोषणा यहाँ आयोजित संवाददाता सम्मेलन में मौजूद योगेश्वर गोप, महामंत्री ओम प्रकाश मेहता, अध्यक्ष सुबोध नारायण चौबे, रामनारायण ठाकुर, सिद्धनाथ पाण्डेय एवं चंद्रकिशोर प्रसाद के द्वारा की गयी। उन्होंने बताया कि अगर इससे भी माँगे पूरी नहीं तो 6 नवम्बर के बाद किसी भी दिन हड़ताल की घोषणा कर दी जाएगी।

सचिवालयकर्मियों के वर्तमान आन्दोलन पर एक नजर डालने से ऐसा प्रतीत होता है कि संगठित कर्मियों का आन्दोलन नेतृत्व विहीन होता जा रहा है क्योंकि इस आन्दोलन में राज्य स्तरीय कर्मचारी संगठनों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष भागीदारी नहीं है। इसलिए यह कर्मचारियों के स्वार्थ, सरकारी तुष्टीकरण और वादाखिलाफी का एक अच्छा खासा नमूना है क्योंकि एक ओर जहाँ आन्दोलनकारियों की राज्य हित में प्रशासनिक अधिकारी एवं मंत्रियों की विलासिता तथा फिजूलखर्ची पर कटौती करने की मांग सही लगती है तो दूसरी ओर राज्य सरकार का यह कहना कि राज्य कर्मचारी केन्द्रीय वेतनमान के साथ-साथ केन्द्रीय कर्मचारियों को मिलने वाली सुविधाएं भी लें, सही लगता है। ऐसा नहीं कि राज्य कर्मचारी केन्द्रीय वेतनमान तो लें पर राज्य सुविधाएं भी उठाते रहें। सब मिलाकर देखा जाय तो राज्य एवं केन्द्र सरकार के कर्मचारियों का वेतनमान तथा सुविधाओं में एकरूपता होनी चाहिए और यह कर्मचारी संगठनों एवं आन्दोलन के हक में भी अच्छा होगा।

शिव कुमार सिंह - संवाददाता

बिहार

स्वंतत्रता-संग्राम में भोजपुर की भूमिका

हृषीकेश पाठक

1857 से लेकर 1947 तक अंग्रेजी की दासता से मुक्ति के लिए हुए संग्राम में जगदीशपुर के बाबू कुँवर सिंह के नेतृत्व में अस्सी वर्ष की अवस्था में भी ब्रिटिश सल्तनत को चुनौती दी गई । वर्ष 1910 से ही क्रांति की लहर फैलाने में मास्टर जय प्रकाश लाल का आवास कार्यकत्ताओं का अड्डा बना था। वहाँ स्वंतत्रता प्राप्ति संबंधी बातें होती थीं । मास्टर साहब बंकिम बाबू का उपन्यास 'आनंद मठ'स्वयं पढ़ते थे और लोगों को सुनाते भी थे । गाजीपुर के प्रतिभाशाली सन्यासी स्वामी सहजानन्द सरस्वती जी भी वहाँ पहुँचने लगे परन्तु मास्टर साहब ने उनपर भी राष्ट्र प्रेम का नशा-चढ़ा दिया और बक्सर को जगाने में वे भी लग गये । जिससे दियारा क्षेत्र में भी क्रांति की आग फैलने लगी । वे स्वयं भूखों रहकर भी राष्ट्र प्रेमियों को खाना खिलाते थे । बक्सर में वर्ष 1919 में सरस्वती पुस्तकालय की स्थापना की गई । पुस्तकालय के पास ही गीता मंदिर का निर्माण पं० लक्ष्मण उपाध्याय ने किया जो बक्सर के लिए प्रेरणा श्रोत तब भी थे और आज भी हैं ।

असहयोग आंदोलन के समय सामानान्तर सरकार का गठन हुआ, जिसके एस.डी.ओ. लक्ष्मीनारायण मिश्र जी बनाए गए । उत्तर प्रदेश के उजियारपुर, गाजीपुर, बलिया आदि जगहों से भी लोग बक्सर आने लगे । स्व० केशव प्र० मिश्र, आदर्श हाई स्कूल बड़का राजपुर के प्राचार्य भी थे, कहा करते थे कि सरदार भगत सिंह आकर रूके थे । जब संसद में बम का धमाका हुआ और भगत सिंह पकड़े गये तो अखबार में तस्वीर देखने के बाद उन्हें सरदार भगत सिंह के बारे में जानकारी हुई । असहयोग आंदोलन के समय शाहाबाद में एक लहर दौड़ तथा अधिवक्ता, प्रोफेसर अपनी नौकरी छोड़ आंदोलन में कूद पड़े ।

जब बिहार में महात्मा गांधी की यात्रा हुई थी, बक्सर के बावनवीघा के मैंदान में गांधी जी की सभा हुई, अपार भीड़ हुई थी ।

आरा में राजनीति का केन्द्रीय स्थान नागरी प्रचारिणी सभा था जो रमना मैदान में आज भी स्थित है । उसी समय घोड़ा देई के कवि कैलाश सिंह की निर्मम हत्या रमना मैदान में अंग्रेज सिपाहीयों ने 1942 में कर डाली, जिससे सारा जिला रो पड़ा । ठाकुर राजकिशोर सिंह जी सासाराम में लोगों को जगाने के लिए वर्ष 1921 में कलकत्ता से आए थे । उनके आने के बाद सासाराम का स्थान बक्सर के समान हो गया । डिहरी के क्यूम अंसारी साहब पक्के राष्ट्रीय निकले जो मु० जिन्ना को मुँहतोड़ जबाव दिया करते थे । अंसारी जी घूम-घूमकर लोगों में राष्ट्रीय तथा एकता का मंत्र फूंकते था ।

26 जनवरी 1930 को सर्वत्र तिरंगा झंडा फहराने का 29 दिसम्बर 1929 को रावी के तट पर गांधी जी के नेतृत्व में यह निर्णय लिया गया । बक्सर अनुमंडल के कोने-कोने में झण्डोत्तोलन हुआ । सरदार हरिहर सिंह के नेतृत्व में शाहाबाद डटा रहा । उसी समय डा० राजेन्द्र प्रसाद जी द्वारा हरिहर सिंह को 'सरदार' की उपधि से विभूषित किया गया । आरा, भभुआ और सासाराम में भी नमक-सत्याग्रह आंदोलन जोर पकड़ने लगा । स्व० जगजीवनराम भी आंदोलन में सक्रिय हो गए और गिरफ्तार हुए । बक्सर के कांग्रेस अध्यक्ष भीरवी लाल साहू भी मार दिये गए ।

प्राप्त आंकड़ों के अनुसार शाहाबाद में लगभग 260 व्यक्ति स्वंतत्रता संनानी का पेंशन पा रहे हैं । संपूर्ण शाहाबाद में स्त्री-पुरूष मिलाकर 79 व्यक्ति शहीद हुए । वीरों, साहित्यकारों, विद्वानों से परिपूर्ण होते हुए भी शाहाबाद सम्यक विकास अपेक्षित है । स्वतंत्रता संग्राम में भोजपुर की भूमिका अहम रही है ।

संपर्क – संपादक, निर्माता निर्देश, अमरनाथ पथ, पटना-1

हास्य व्यंग्य

अपने आसपास

अंग्रेजी का भूत

दफ्तर में मेरा एक मित्र है, जिसे अंग्रजी बोलने का भूत इस तरह सवार रहता है कि वह सही बोल रहा है या गलत, इसकी वह परवाह नहीं करता । मैं अपनी शादी के लिए लड़की देखने जाने वाला था । उस मित्र से मैंने पूछा, मैं अपने लिए लड़की देखने जा रहा हूँ, इसलिए छुट्टी तो लेनी ही होगी । मैं आवेदन पत्र में छुट्टी लेने का कारण क्या लिखूं, क्या तुम ये अंग्रेजी में बताओगे ?"

"वेरी सिंपल", उसने कहा, "लिख दो गोइंग टू सी द डॉटर" उसकी इस अंग्रेजी पर आसपास बैठे कर्मचारी भी हंस दिये, लेकिन वह बेचारा समझ न सका कि आखिर वे हंसे क्यों ?

❑ वालेश्वर मंडल

रिहर्सल

हमारे कॉलेज की तरफ से रामायण पर आधारित एक नाटक खेला जाने वाला था । किसी तरह मुझे भी एक रोल मिल गया, नाटक का अभ्यास बड़े जोरों से चल रहा था । मगर मैं अपनी सोने की आदत से मजबूर था । मैं प्रायः रिहर्सल रूम में जाकर सो जाया करता था ।

एक दिन हमारे एक प्रोफेसर ने जिन पर नाटक का भार सौंपा गया था, मुझे बुलाया और फटकारते हुए कहा कि तुम रोज रिहर्सल करने के बजाय सो क्यों जाते हो ? पहले तो मैं समझा कि किसी ने अपनी ईमानदारी दिखा दी है, अतः मैंने जान बचाने के लिए कहा कि सर आपको गलत सूचना मिली है, मैं तो रोज रिहर्सल करता हूँ । इतना सुनना था कि वे चिल्लाते हुए बोले, "तुम क्या मुझे मूर्ख समझते हो जो मैं अपनी आंखो देखी चीज को गलत मान लूँ ।"

उनका यह जवाब सुनते ही मैं सकपका गया और धीरे से कहा, "सर, मुझे कुंभकरण' का रोल करना है ।"

❑ अशोक कुमार

रंग और व्यंग्य

● एक ऑफिस में नयी स्टेनो रखी गयी । पहले ही दिन बड़े साहब ने उसे बुलाया और एक लंबा-चौड़ा पत्र लिखवाया । पत्र लिखवा लेने के बाद उन्होंने पूछा, "क्यों कोई चीज फिर से पूछनी है क्या ?"

"जी हां, आपने 'प्रिय श्री गुप्ता' और 'आपका मित्र' के बीच में क्या-क्या बोला था ?" स्टेनों ने तपाक से पूछा ।

❑ किशोर कुमार प्रजापति

● एक पति, अपनी पत्नी के रोज के नखरों से बहुत परेशान था । एक दिन पत्नी बोली, अजी सुनती हो, कल का मेरा सिरदर्द तो तुम्हारे सिर दबाने से गायब हो गया था, आज न जाने क्यों मेरा गला दर्द कर रहा है ।"

"कहो तो गला दबा दूँ", पति ने चिढ़कर कहा ।"

❑ रामकृष्ण ठाकुर 'रमण'

● एक साहब बैंक में चेक बुक लेने आये, तो एजेंट ने पूछा, अरे साहब, आप कल ही तो चेक बुक लेकर गये थे ।"

"हाँ, लेकिन वह किसी ने चुरा ली"

"तो, आपको फौरन हमें खबर करनी चाहिए थी । मान लिजिए चोर आपके फर्जी दस्तख्त कर के पैसे निकाल ले तो ?"

"घबराइए नहीं, उस पर कोई फर्जी दस्तखत नहीं कर सकता । मैंने खुद ही हर चेक पर दस्तखत कर दिया था ।"

❑ गणेश मंडल

● "आप शादीशुदा लोगों को नौकरी में प्राथमिकता क्यों देते है ?" एक पत्रकार ने मिल मालिक से पूछा ।

"क्योंकि वे लोग विवाह के बाद छुट्टियाँ लेने के बजाय दफ्तर में बैठकर काम करना ज्यादा पसंद करते है" मिल मालिकों ने उत्तर दिया ।

❑ चक्रपाणी

● काफी देर बाद जब एक साहब ने माईक छोड़ा, तो विदेशी पत्रकार ने बगल में बैठे सज्जन से कहा, "आपके यहाँ के नेता तो काफी लंबा भाषण देते हैं ।"

"भाषण देनेवाला नेताजी तो अभी आयेंगे साहब । यह तो माइक टेस्टिंग चल रही थी," बगल में बैठे सज्जन बोले ।

❑ धनेश्वर निरंजन

● यदि पति और पत्नी साथ हों और पति, पत्नी के लिए गाड़ी का दरवाजा खोलकर खड़ा रहे, तो समझ जाइए कि या तो पत्नी नयी है या गाड़ी ।

❑ लक्ष्मण साहनी

● पत्रकार ने चुनाव अधिकारी से पूछा, "आपके क्षेत्र में अंधे मतदाता कितने होंगे ?"

"यह तो चुनाव परिणाम देखने के बाद ही पता चल सकता है," चुनाव अधिकारी ने उत्तर दिया ।

❑ दिनेश्वर रवि

राजनीति

समता पार्टी के समक्ष एक सवाल

सामाजिक न्याय के वृहतर परिप्रेक्ष्य से हटकर जातिवाद की संकरी गली में जनता दल के भटकने के बाद जद से नाता तोड़कर जार्ज तथा नीतीश सरीखे नेताओं ने समता पार्टी का निर्माण किया तथा सवर्ण समुदाय के विचारवान एवं प्रगतिशील लोगों से मिलकर एक समरस समाज बनाना पार्टी का लक्ष्य बना ताकि सुन्दर और नए बिहार के निर्माण हेतु एक वातावरण तेयार हो सके। इसी के अनुरूप भाजपा से उसका तालमेल हुआ। पर इस बड़े उद्देश्य के लिए जिस त्याग, उदारता, धैर्य और सहिष्णुता की आवश्यकता थी वह समय आते-आते प्राय: खत्म-सा हो गया जैसा कि पिछले दो चुनावों का अनुभव बताता है। यही कारण है यहाँ सत्ता विरोधी लहर कुछ थम सा गया। यह तो कहिए कि पशुपालन घोटाले में सत्ता के शिखर पर बैठे हुकमरान लालू प्रसाद के विरूद्ध आरोप पत्र दाखिल किए जाने से लेकर जेल की हवा खाने तक विरोधी पक्ष में थोड़ी बौखलाहट देखने में आई पर कोई बड़ा जन-आन्दोलन नहीं।

इधर आनन्द मोहन प्रकरण को लेकर समता पार्टी का विवाद उसे विभाजन की ओर ले जाएगा। पार्टी आज एक ऐसे चौराहे पर खड़ी है जहाँ से उसे अपने अस्तित्व की रक्षा हेतु एक रास्ता तय करना है क्योंकि भाजपा के साथ भी उसका सबकुछ ठीक ठाक चल रहा है, ऐसा नहीं कहा जा सकता। हालाकि उसके नेता एवं प्रदेश अध्यक्ष नीतीश कुमार के द्वारा बार-बार यह कहा जाता है कि समता-भाजपा गठबन्धन सत्ता के विकल्प के रूप में देखा जा रहा है तथा जनतां को इससे बहुत बड़ी अपेक्षाएं हैं।

वस्तु स्थिति यह है कि राष्ट्रीय राजनीति की वर्तमान परिस्थिति से भविष्य की कई संभावनाओं के संकेत मिल रहे हैं। आज हर दल की ऐसी विवशता है कि वह आगामी लोकसभा चुनाव के पहले समान विचारधारा वाले दलों का गठबन्धन करे। इस दृष्टि से समता पार्टी एवं जनता दल का गठबन्धन जयादा कारगर तथा लाजिमी दिखता है क्योंकि वैसे भी समता के नेता नीतीश कुमार ने केवल कई दैनिक पत्रों को दिए गए अपने साक्षातकार में बल्कि संवाददाता सम्मेलन एवं सभाओं में बार-बार कहा है कि भाजपा के साथ उनका सैद्धान्तिक मतभेद है। और हो भी क्यों नहीं ? भाजपा तथा उसके नेताओं की मानसिकता अभी भी जस की तस है। देश की हर समस्याओं का निदान वे अयोध्या में मंदिर के निर्माण में ही देखते हैं। आखिर तभी तो उत्तर प्रदेश में सत्तासीन होते ही कल्याण सिंह ने वही मंदिर निर्माण की घिसीपिटी बात दुहराई। दलित, पिछड़ों तथा अल्पसंख्यक समुदाय को सत्ता एवं संगठन में भाजपा आज भी भागीदारी देने को तैयार नहीं। मुस्लिम विरोधी उसकी नीति आज भी बरकरार है। इन सभी मुद्दों के मद्देनजर समता पार्टी को क्या ऐसा नहीं लगता कि उसे समान विचारधारा वाले दलों के साथ बातचीत करनी समीचीन है तथा राज्य एवं देश के हित में सपा, जद, बसपा, सजपा जैसी पार्टियों के साथ तालमेल की संभावनाओं का पता लगाने को अग्रसर होना समय का तकाजा है ? फिर जद से लालू जी के अलग होने के बाद उसके साथ गठबन्धन में क्या कठिनाई है ?

अनुभव बताते हैं कि साझा सरकार भी बिना एक प्रभावशाली दल के दबदबे से चल नहीं सकती। बंगाल में लगातार कई वर्षों से एक साझा सरकार चलने का एक मुख्य कारण वहाँ मार्क्सवादी कम्युन्ष्टि पार्टी का दबंग नेतृत्व है। और यह भी सच है कि भारतीय राजनीति की जो वर्तमान स्थिति है उसमें केन्द्र अथवा कई राज्यों में आने वाले दिनों में राष्ट्रीय जीवन का अंग गठबंधन की सरकारें ही बनने वाली है इसलिए समय की मांग है कि एक शक्तिशाली नेतृत्व तो चाहिए ही जिसकी दृष्टि और दशा स्पष्ट हो और जो राष्ट्रहित को चुनावी शतरंज का मोहरा न बनाए। समता पार्टी के समक्ष भी आज यह सवाल खड़ा है जिस पर उसे गंभीरता से विचार करना है।

कार्यालय संवाददाता

चचा भतीजे की दोस्ती किस करवट लेगी ?

संसद के 546 सदस्यों के सदन में 273 जादुई अंक से कांग्रेस अभी काफी दूर है पर उसके आलाकमान केसरी जी हाथ पांव मार रहे हैं। ऐसी सम्भावना है कि चाचा केसरी अपने भतीजे लालू प्रसाद के साथ हाथ मिलाकर नक्शा को बदलना चाहते हैं। पर ऐसा लगता है कि वस्तुस्थिति में बहरहाल कोई फर्क नहीं पड़ने वाला है। ऐसी स्थिति में जद, सपा, समता, तथा बसपा जैसी पार्टियों को भी सावधान होने की आवश्यकता है। वामपंथी गुट तो पहले से ही उनसे सावधान है और उसके 55 लोकसभा सदस्य फिलहाल कांग्रेस को अनुगृहीत करने के इच्छुक नहीं हैं। वर्तमान दौर में कांग्रेस की जो स्थिति है उसमें मृतदाताओं का सामना वह नहीं कर सकती। हाँ, बिहार में राजद के साथ तालमेलकर अपनी दयनीय स्थिति में कुछ सुधार भले ही ला सके। हिन्दी भाषी क्षेत्र अभी भी कांग्रेस के साथ सामंजस्य कायम नहीं कर सका है।

इधर केन्द्र को कांग्रेस से जो लगातार धमकी मिल रही है उससे अनिश्चय की स्थिति अवश्य बन गयी है। इसके चलते अनेक परियोजनाएं निस्तारण की प्रतीक्षा में है। सस्ती लोकप्रियता के लिए कांग्रेस देश की नौका को भंवर में ले जाकर उसे डूबो देना चाहती है।

अरूण कुमार गौतम

'रेणु' की कथाओं में आन्तरिक लयात्मकता और गेयता

❑ डा. रवीन्द्र उपाध्याय

अमरकथा-शिल्पी फणीश्वर नाथ 'रेणु' की 76वीं जयंती के उपलक्ष में राष्ट्रीय विचार मंच की ओर से गत 4 मार्च, 1997 को भारतीय व्यापार प्रबंधन संस्थान के सभागार में आयोजित साहित्यिक संगोष्ठी में हिन्दी के सुपरिचित कवि डा. रवीन्द्र उपाध्याय के द्वारा 'रेणु' की कथाओं में आन्तरिक लयात्मकता और गेयता' विषय पर एक विद्वतापूर्ण आलेख प्रस्तुत किया गया जिसे सुधी श्रोद्धाओं ने मुक्त कंठ से सराहा। पत्रिका के प्रवेशांक में उसके अंश को प्रकाशित कर सुजान पाठकों तक पहुंचाना लाजिमी समझा गया– ***प्रधान. संपादक***

'रेणु' का मन लोक-संस्कृति में बसता है, इसीलिए वे लोकगीतों के रसिया हैं। सामन्ती-पूंजीवादी शक्तियाँ आम आदमी का ध न-मान तो अपहृत करती ही है, उनके गान पर भी उनकी गिद्ध दृष्टि है। रेणु इससे खूब वाकिफ हैं और लोक-कला की हिफाजत के लिए प्रतिश्रुत हैं। 'रेखाएँ वृत्तचक्र' और 'भितिचित्र की मयूरी' जैसी कहानियों में लोक-संस्कृति के सौदागरों की घिनौनी नीयत का पर्दाफाश किया गया है। सामन्ती मानसिकता के लिए लोक-कला या तो फकत मन-बहलाव की चीज होती है या सजावट की। उसे लोक कलाकार का काम बेगार लगता है। इसलिए कलाकार को बार-बार अपमान के रू-ब-रू होना पड़ता है। 'ठेंस' के सिरतन और 'रसप्रिया' के मृदंगिया के मर्म पर पड़ती चोटें--इसी की गवाही भरती हैं।

'रेणु' निम्नमध्य वर्गीय और सर्वहारा वर्ग की सम्पन्न सांस्कृतिक चेतना को अपने कला-केन्द्र में प्रतिष्ठित करते हैं। भयावह गरीबी, घृणास्पद सामन्ती वर्ण-वाद, जहालत, निरन्तर नीरस होते हुए यांत्रिक और उपभोक्तावादी परिवेश के बरबस 'रेणु' के प्रमुख कथा-पात्र निर्मल मन और खुलेकंठ से जीवन-संगीत गुणगुनाते-गाते प्रस्तुत होते हैं। जीवन के प्रति आस्था का यह अनन्य राग ही उन्हें हर मुसीबत से मुठभेड़ करने की शक्ति देता है। सामन्ती-पूंजीवादी निर्मम व्यवस्था ने इन्हें बाहर से बाहर जख्मी किया है और कमजोर भी, पर इनका मन अनथका है। मिट्टी के राग-रंग-रसे और गन्ध से पूरित यह लोक-मन अपराजेय है। लोक-मन के इसी जीवनोल्लास को 'रेणु' की कहानियाँ लय-बद्ध करती हैं। 'रेणु' के कथा-लोक में जीवन की गतिमयता का संगीत गुंजता है।

प्रेमचन्द की कथा-भूमि 'रेणु' की लेखनी के संस्पर्श से अधिक उर्वरा हो गई है। 'रेणु' का द्रष्टा रफ्ता-रफ्ता दृश्य में अन्तर्लीन हो जाता है। 'रेणु' अपने कथा-आँचल से इतनी गहरी रागात्मकता के साथ जुड़े हैं कि वे अपने आस-पास की घटनाओं के दर्शक भर नहीं, भोक्ता और हिस्सेदार हैं। 'रेणु' की कहानियों में पूर्णियां-अंचल की माटी ही मुखर हो उठती है।

'रेणु' के प्रथम और सर्वाधिक महत्वपूर्ण कथा-संग्रह का शीर्षक है 'ठुमरी', जबकि इस नाम की कोई कहानी वहाँ मौजूद नहीं है। फिर, भूमिका के बदले प्रस्तुत पुस्तक में 'स्वर-लिपि' जैसे संगीत-शास्त्र के शब्द का प्रयोग हुआ है। इतना ही नहीं, 'रेणु' ने स्वयं को 'कथा-गायक' बतलाया है। कथाकार के अनुसार इस संग्रह की सभी कहानियाँ 'ठुमरी धर्मा' हैं और उनका अन्तर्मार्ग' एक ही है। सुवास कुमार जहाँ इस अन्तर्मार्ग को 'रेणु' की निजी आंचलिक छुअन' के रूप में रेखांकित करते हैं, वहीं निर्मल वर्मा उसे 'मानवीयता की लाश' के रूप में चिन्हित करते हैं। बिहार के एक छोटे-भूखंड पूर्णियाँ-अंचल को 'रेणु' ने अपने लेखन से समुचे उत्तर भारत में विस्तृत होने की महिमा दी है, तो उस अंचल ने कथाकार रेणु को अपना हृदय ही नहीं सौंपा है, अपनी पुरकशिश जुबान भी दे दी है। कथाओं की वस्तु ही नहीं, जादुई शिल्प 'गप्प रसाने का भेद' तक 'रेणु' ने अपनी गवंई परम्परा से ही हासिल किया है। जैसे ठुमरी शास्त्रीय और सुगम संगीत का मोहक संगम है, वैसे ही रेणु की कथाएँ कथ्य, भाषा-शिल्प आदि की दृष्टि से सुगम-सहज होती हुई भी शास्त्रीयता के गुणों से मंडित हैं। 'तीन बिन्दियां' शीर्षक कथा का पात्र हाराधन यन्त्रकार ठुमरी में आंचलिक रंग भरने पर बल देता है।

सितारवादक अकरम उसके गीतों में धान कुटती हुई, चक्की चलाती हुई, ढोर चराती हुई सुन्दरियों की देहली नमकीन गन्ध–धान के खेतों की, पोखर और घाट पर पानी भरती हुई सुन्दरियों के आँचल की गन्ध, सुगन्ध पाते हैं। कथा-शिल्पी रेणु के शब्दों में –"गीताली ने पास पड़े तानपूरे के तारों को छूकर झंकृत कर दिया। मूल नाद से नौगुन ऊँचाई पर सहायक नाद उत्पन्न हुए।" जाहिर है रेणु सहायक वाद की महिमा के गायक हैं। उन्होंने कथा-नायक से कुछ कम महत्व सहपात्रों को नहीं दिया है। वस्तुतः वे एकल गायन से ज्यादा अहमियत सहगायन को देते हैं। उनका कथा-सितार झंकृत होता है और सहायक रागिनियाँ मुलराग से होड़ लेने लगती हैं। गाँव देहात के निम्न और निम्नमध्यवर्गीय अवसादपूर्ण और कड़वी होती जा रही जिन्दगी में रेणु लोक-संगीत का अमृत भरते चलते हैं। वे बिरहा, लगनी, चाँचर, बारहमासा, रसपिरिया की डोर में सामुहिक जीवन को कसकर बाँधे चलते हैं, ऐसी कहानियाँ बहुत कम होंगी रेणु की, जिनके लोक गीतों की श्रुति मधुर पंक्तियाँ नहीं। 'तीसरी कसम' और -रसप्रिया' जैसी सार्वकालिक श्रेष्ठ कहानियों का तो लोकगीत प्राण तत्व है। 'तीसरी कसम' से यदि मछुआ घटवारिन के गीत को अलग कर दिया जाए तो यह कहानी क्या कहानी का ढाँचा मात्र नहीं रह जायेगी ? रसपिरिया के

अन्तराओं के बिना 'रसपिरिया' में वह रस-परिपाक संभव नहीं होता । 'पंचलाइट' कहानी में गोधन द्वारा गाये जाने वाले फिल्मी गीत की एक ही पंक्ति–"हम तुमसे मोहब्बत करके सलम' देकर लोकमर्मी रेणु ने पूरी कहानी को प्रेम की सुगन्ध से महमहा दिया है ।

'रेणु' के पास तो जैसे ध्वनियों का अक्षय कोल है । कहीं 'धिरिनागि-धिरिनागि-धिरिनागि-धिनता' का मृदंग स्वर है– तो कहीं 'रेणु का कथालोक जैसे ध्वन्यालोक है । 'किसिम- किसिम' की ध्वनियों से भरी ये कहानियाँ पूर्णियाँ-अंचल के बहुरंगी जीवन की धड़कनों को आँकती हैं और पाठक-श्रोता के कानों के माध्यम से हृदय में उतरती चली जाती है ।

गाँव-गँवई की बोली, मुहावरे और लोकोक्तियों से भूषित रेणु की भाषा में अद्‌भुत चित्रात्मकता और लयात्मकता है । गद्य का अतिक्रमण करती हुई यह कथा-भाषा कवितात्मक, गीतात्मक हो जाती है । लोक-जीवन और प्रकृति का ऐसा गहरा नेह-सम्बन्ध अन्यत्र दुर्लभ है–लोक-कंठ के सुर में सुर मिलाकर प्रकृति भी गाती चलती है । एक-दो चित्र देखिए–"किन्तु आज के भोर के इस घने कुहासे में भी वह मगन है। नदी के किनारे धन-खेतों से फूले हुए धान के पौधों की पवनिया गन्ध आती है । पर्व-पावन के दिन गाँव में ऐसी ही सुगन्ध फैली रहती है । उसकी गाड़ी में फिर चम्पा का फूल खिला उस फूल में एक परी बैठी है ।"

(तीसरी कसम)

"चाँदनी, कातिक की ! खेतों से धान के भुरते फूलों की गंध आती है, बाँस की झाड़ी में कहीं दुद्धी की लता फूली है–बिरजू की माँ के माथे के मंगटीक्के पर चांदनी छिटकती है । "

(लाल पान की बेगम)

'रेणु' की बहुत-सी कहानियों में उल्लास और करूणा के राग-रंग से युक्त उदात्त प्रेम प्रवहमान है । निर्मल-निश्छल दिलों की अघोर चाहत को संजोए ये कहानियाँ परिणति में कहीं मिलन-गीत तो कहीं विरह का करूण गीत बन जाती हैं । रूमान के कई रंग हैं यहाँ–हिरामन-हीरा बाई, मृदंगिया-रमपतिया, गीताली-अकराम, करमा-सरसतिया, गोधन-झुमरी आदि का प्रेम-प्रसंग जीवनगत तमाम तरह की जद्दोजहद और परिशानियों के बीच खुलता-खिलता है । 'सिर पंचमी का सगुन', 'तीर्थोदिक' और 'लाला पान की बेगम' जैसी कहानियाँ भारतीय दाम्पत्य प्रेम की अतलता और धवलता को व्यंजित करती हैं 'रेणु' 'तुमुल कोलाहल कलह से ग्रामीण जीवन की रेत-सी जिन्दगी के नीचे अप्रतिहत बहती प्यार की अन्त: सलिला प्रीति की यही गहरी पहचान रखते हैं । अभावों और अपमानों से भरी गँवई जिन्दगी को संजीवनी देती है और बिखरने से बचा लेती है। प्रेम की यही आदिम महक रेणु की कहानियों को गीत गन्धा बनाती है और लयात्मकता प्रदान करती है ।

दरअसल अर्न्त: रेणु सलिला, जन-जीवन के अघोर दु:ख को करीब -करीब समानुभूति के स्तर पर रचते हैं । पर सहायता नादों को खुब-खुब घ्वनित भी होने देते हैं । उनकी कथा-संरचना- बिम्बों, प्रतीकों, संकेतों और ध्वनियों से लैस है। 'रेणु' उपदेशक या प्रवाचकनहीं है । वे अलग-अलग दृश्य आँकते हैं । और सभी दृश्यों को आंचलिकता के रंगीन सुत्र से एक साथ बाँध देते हैं। उनका कथा-संसार जीवन की लय से खनक रहा है ।

सम्पर्क : रीडर, हिन्दी विभाग, श्री रा० प्र० सिंह महाविद्यालय, जैंतपुरा, मुजफ्फरपुर (बिहार)

शुभकामनाओं के साथ :

विद्यार्थी बुक सेंटर

जयनगर (मधुबनी)

- यहाँ स्कूल एवं कॉलेज की पुस्तकें प्राप्त करें ।
- स्टेशनरी के सभी समान उचित मूल्य पर उपलब्ध ।

परीक्षा प्रार्थनीय **प्रो. बिलटु सहनी**

With Best Wishes

Popular Pharma

Chemist & Drugist

New Market, Patna-800 001, Phone : 226393

हिन्दी-साहित्य में दलित-चेतना

❑ डा. ब्रहमदेव प्रसाद कार्यी

आवश्यक नहीं कि दलित लेखन के लिए उसके लेखक दलित वर्ग से हों। प्रस्तुत आलेख के विद्वान लेखक जो सी. एम. कॉलेज, दरभंगा में हिन्दी प्राध्यापक हैं, ने इसे सिद्ध कर दिया है–प्रधान संपादक।)

दलित-लेखन के प्रसंग से मुंशी प्रेमचन्द का नाम श्रद्धापूर्वक लिया जाता है। 'सद्‌गति', 'ठाकुर का कुआँ', 'दूध का दाम', 'कफन' आदि कहानियाँ इस दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती हैं। प्रेमचन्द के समकालीन 'प्रसाद' की कहानियाँ इस दृष्टि से अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण हैं, लेकिन, दलित साहित्यकारों का ध्यान इनकी ओर नहीं गया है, यह सोचकर, हैरानी होती है। उनकी 'विराम-चिह्न' कहानी में दलित-चेतना का उत्कर्ष देखा जा सकता है–

"बहुत सोच-विचार कर अधिक उतरा हुआ एक केला उसने छीलकर अपनी अण्जलि में रख उसे मन्दिर की ओर नैवेद्य लगाने के लिए बढ़ाकर आँखें बन्द कर लीं।"

भगवान् ने उस अछूत का नैवेद्य ग्रहण किया या नहीं, कौन जाने; किन्तु बुढ़िया ने उसे प्रसाद समझकर ही ग्रहण किया।

अभी वह विश्राम की झपकी लेती थी कि महन्तजी के जमादार कुंज ने कड़े स्वर में पुकारा–"राधे, अरे रधवा, बोलता क्यों नहीं रे!"

बुढ़िया ने आकर हाथ जोड़ते हुए कहा–"क्या है महाराज?"

"सुना है कि कल तेरा लड़का कुछ अछूतों के साथ मंदिर में घुसकर दर्शन करने जायगा?"

"नहीं, नहीं, कौन कहता है महाराज। वह शराबी, भला मन्दिर में उसे कब से भक्ति हुई है।"

"नहीं, मैं तुझसे कहे देता हूँ, अपनी खोपड़ी सँभाल कर रखने के लिए उसे समझा देना। नहीं तो तेरी और उसकी, दोनों की दुर्दशा हो जायगी।"

राधे ने पीछे से आते हुए क्रूर स्वर में कहा–"जाऊँगा, तब तेरे बाप के भगवान् हैं! तू होता कौन है रे!"

"अकेले-अकेले बैठकर भोग-प्रसाद खाते-खाते बच्चू लोगों को चरबी चढ़ गयी है। दरशन नहीं रे–तेरा भात छीनकर खाऊँगा। देखूँगा कौन रोकता है।"–राधे गुर्राने लगा।

विचार कर देखिये। इसमें क्या नहीं है? शोषण उत्पीड़न से मुक्ति के लिए संगठन और संघर्ष की प्रेरणा है या नहीं? इसमें कृत्रिमता के दर्शन होते हैं क्या? दलित चेतना की दृष्टि से 'प्रसाद -साहित्य का अध्ययन उपादेय होगा, इसमें संदेह नहीं।

सन् 1914-16 में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के संपादन में निकलनेवाली पत्रिका ' सरस्वती' में **हीरा डोम** की एक कविता छपी थी, जो भोजपुरी बोली में थी, जिसे हिन्दी की पहली दलित कविता मान लिया गया है। पिछले दिनों हजारीबाग में दलित साहित्य के लेखकों के सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए अरूणाचल प्रदेश के राज्यपाल महामहिम माता प्रसाद ने भी **हीरा डोम** को हिन्दी का प्रथम दलित लेखक स्वीकार किया है। लेकिन डोम-जैसी प्रतिभा को सवर्ण साहित्यकारों ने अद्यपर्यंत अंगीकृत और अग्रसारित नहीं किया है, यह एक पीड़क सच है। यह भी सच है कि दलितेर साहित्यकारों को दलित साहित्यकारों ने खुले दिल से अब तक स्वीकृत और अनुशंसित नहीं किया है। 'रश्मिधनु' के सशक्त रचनाकार डॉ. हरिवंश तरूण की चर्चा 'प्रज्ञा साहित्य' अथवा 'सुमन लिपि' के दलित साहित्य विशेषांकों में भी नहीं है। परस्पर अविश्वास और अस्वीकार का यह आलम रहा तो 'हीरा' और 'हरिवंश' इसी तरह उपेक्षित और तिरस्कृत होते रहेंगे। दलितों के दिल से भगवान और मुँह से रोटी छीन लेने वाले कौन हैं, यह कहने की जरूरत नहीं। शायद इसलिए, बाबा साहेब भीम राव अम्बेदकर देशोद्धार से ज्यादा दलितोद्धार को जरूरी मान रहे थे। स्वतंत्रता-आंदोलन के प्रति उनकी उदासीनता के लिए उनकी आलोचना करने वालों को इस तथ्य का ध्यान रखना चाहिए। **क्या यह सच नहीं है कि सवर्णों ने आज भी दलितों को अपने दिल में नहीं बैठाया है। उनकी जगह दिल में नहीं, दालान में है। दलित तो अभी उनकी देहरी पर भी नहीं है।** सामाजिक न्याय, समानता, सौहार्द्र और भाईचारे पर मंचों से गला फाड़-फाड़ बोलने वाले सवर्ण के घर में उन्हीं की परेशानी दूर करने के लिए गये एक बिजली-मिस्त्री की छाया पड़ जाने के कारण गृह-स्वामिनी ने सिलौट से मसाला पोंछकर किस प्रकार फेंक दिया, इसका विवरण स्वयं मुक्तभोगी ने मुझे सविस्तार कह सुनाया है। इस घटना के अभी जुम्मा-जुम्मा आठ रोज भी नहीं हुए हैं। मिस्त्री से बात करते समय ही मुझे 'मैला आँचल' की उपयुक्त शीर्षांकित पंक्तियाँ याद हो आती हैं, जिनमें सवर्ण-चरित्र के दोगलेपन की तीखी आलोचना है। इन पंक्तियों को मैंने इसलिए भी उद्धृत किया है कि ये समाज की सर्वाधिक दलित जाति स्त्री जाति की दुर्दशा और मार्मिक विवशता का वास्तविक (जीवंत) चित्र प्रस्तुत करती हैं। 'हिन्दी साहित्य में दलित चेतना' (16-30 नवम्बर,'94, समकालीन जनमत) शीर्षक लेख में श्री वीरेन्द्र यादव ने दलित लेखक श्री ओम प्रकाश वाल्मीकि द्वारा मुंशी प्रेमचन्द रचित 'कफन' कहानी को दलित कहानी नहीं मानने पर अपनी नाराजगी व्यक्त की है। पुनः दलित लेखक **डॉ. श्योराज सिंह** बेचैन ने श्री यादव की इस बात के लिए आलोचना की है कि उन्होंने दलित-लेखन के प्रसंग में दलित लेखकों की ही उपेक्षा कर दी है। (प्रज्ञा

साहित्य, दलित साहित्य विशेषांक, मार्च-जून 1995, सं. डॉ. रामकृष्ण राजपूत) में इस 'कफन'-प्रसंग को दूसरी दृष्टि से व्याख्यायित करना चाहता हूँ।

मुंशी प्रेमचन्द ने यह महसूस किया था कि समाज में सबसे दयनीय दशा स्त्रियों की ही है। क्या सवर्ण क्या अवर्ण-सब-के-सब स्त्रियों के प्रति निर्मम और अनुदार होते हैं। घीसू और माधव दलित है–युग-युग से पीड़ित-प्रताड़ित। इन्हें तो बुधिया के प्रति सहानुभूतिशील होना चाहिए, लेकिन नहीं ! वे भी उसके प्रति क्रूरता का व्यवहार ही करते हैं। इस दृष्टि से विचार करने पर स्त्री से अधिक दलित कोई नहीं है, यह कहना आवश्यक नहीं रह जाता है। डॉ. सुशीला टाकभौरे की सहेली का यह कथन अक्षरशः सत्य है : एक ब्राहमण, क्षत्रिय या व्यापारी की पत्नी जो अपने पति पर आश्रित है, अगर किसी गलती के कारण या दुर्भाग्यवश लात मार कर निकाल दी जाये, तब उसकी स्थिति भी तो शूद्र के समान ही होगी। वह जो रात-दिन अपने कुटुम्ब और परिवार की सेवा करती है, बदले में भोजन और कपड़ा ही तो पाती है। उसे भी किसी गलती या कारण से कभी भी उससे छीना जा सकता है। स्मृतिकाल से जो प्रयासपूर्वक अशिक्षित ही रखी गयी, कई नियमों और पाबंदियों में जिसके अधिकार सीमित कर दिये गये, जो व्यक्तिगत रूप से कभी भी सम्मानित नहीं मानी गयी। किसी की पत्नी और किसी की माता के रूप में ही उसे सम्मान मिला–तब दलित समाज के साथ सम्पूर्ण नारी समाज को भी दलित और शोषित मानना चाहिए।" ('दलित साहित्य : एक चिंतन' : डॉ. सुशीला टाकभौरे, 'सुमन-लिपि'-पृ.11, दलित साहित्य अंक, नवम्बर-1995 ई.)

धरती पर जब तक 'भूख' रहेगी, तब तक हिंसा भी रहेगी। 'भूख, संघर्ष की जननी है। क्रौंच-वध के पश्चात् महर्षि वाल्मीकि के मुख से अनुष्टुप् छंद की शक्ल में सरस्वती अवतीर्ण हुईं। निषाद अभिशप्त हुआ। उसे मान नहीं मिलेगा। प्रतिष्ठा नहीं मिलेगी। करूणामूर्ति महर्षि वाल्मीकि को निषाद-परिवार की पीड़ा का ख्याल ही नहीं रहा। सद्य:प्रसूता पत्नी की गोद में भूख से व्याकुल निषाद-शिश का क्रन्दन ऋषि ने नहीं सुना। निषाद स्वयं भी कई दिनों से भूखा है भूख से रोते हुए बच्चे को चुपाना बहुत कठिन है। उसके दूसरे बच्चे भी पिता के लौट आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। पत्नी कमजोरी से मूर्च्छित हो जाया करती है। उसकी दृष्टि क्रौंच-युगल पर पड़ती है और उसका तीक्ष्ण बाण नर-क्रौंच की काया को छेद देता है। निषाद प्रसन्न है। भूख मिटने की संभावना का निश्चय भी आहलादक (तृप्तिदायक) होता है। तभी उस पर ऋषि-शाप उतरता है। पत्नी उसकी उदासी का कारण पूछती है। अभिषप्त निषाद इतना ही कह पाता है–आज ऋषि ने अनजाने में 'भूख' को अभिशप्त कर दिया है। सचमुच, जो भूखे हैं, उन्हें आज भी सम्मान प्राप्त नहीं है। 'भूख' तो स्त्रियों को अपना तन बेचने तक के लिए मजबूर कर देती है–

"क्षुधा-विवश माँ, बहन हमारी उनके घर जाती हैं,
उनका पाप समेट पेट में अपने घर लाती हैं।
कर देते कौमार्य भंग कुछ ऐसे अत्याचारी,
भ्रुण-हत्या का पाप इसी से करती दलित कुमारी।" ('उर्वशी')

क्या 'पालने' की कन्या और क्या 'चिता' की वृद्धा-सब नर के कामानल की लपेट में हैं ?

लेकिन, यह दमन-चक्र अब और अधिक दिनों तक चलने वाला नहीं है। दलितों ने अपने-आपको पहचाना है। दलित 'आँधी' की तरह ताकतवर, 'आग' की तरह ज्वलनशील और 'पानी' की तरह प्रलयंकारी सिद्ध होंगे और जिन्हें इनकी इस सामर्थ्य का बोध नहीं है, वे गफलत में हैं। उन्हें यह जानना चाहिए–

"सहलाती जो हवा वही जब है आँधी बन जाती,
भू-लुंठित हो जाता बरगद दूब सहज मुसकाती।
आग कुपित हो जाये तो सब-कुछ स्वाहा हो जाता,
पर्वत को पी जाता पानी अनुभव यही बताता।" ('उर्वशी')

'उर्वशी' ने अक्षय कुमार को भावी युग का नायक जान लिया है, इसलिए वह इस बार पुरूरवा के महल में नहीं आयी है; वह आयी है 'अक्षय' की झोंपड़ी में, क्योंकि उसकी आँखों ने नये युग का जो सपना देखा है, उसे सच करने की सामर्थ्य इसी दलित कुमार में है–

"देख रही उर्वशी अक्षय में नायक की तस्वीर,
वह चाहे तो बदल के रख दे भारत की तकदीर।
इसीलिए वह आयी पुन: है धरती पर इस बार,
शोषित, पीड़ित और उपेक्षित दलित कुमार के द्वार।" ('उर्वशी')

पुनरावृतिजन्य पाठकीय अरूचि का ख्याल करते हुए 'दलित' एवं हिन्दी में दलित-साहित्य की उपलब्धियों एवं गतिविधियों से संबद्ध अन्यदीय विवरणों का उल्लेख, इस लघु आलेख में जान-बूझकर नहीं किया गया है।

हिन्दी में दलित लेखन की स्थिति को संतोषप्रद तो नहीं कहा जा सकता; हाँ, इसे उत्साहवर्द्धक अवश्य माना जा सकता है। हिन्दी साहित्य की प्राय: हर विधा में रचनाकार लिख रहे हैं, चर्चित हो रहे हैं। उन्होंने अपने ईमानदार लेखन के कारण पाठकों के दिल में अपनी जगह भी बना ली है। पिछले दिनों हजारीबाग में हिन्दी-विभाग, विनोबा भावे विश्वविद्यालय एवं रमणिका फाउण्डेशन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'दलित साहित्य लेखन सम्मेलन' (1-2 अक्टूबर'97) में दलित लेखन से संबद्ध अखिल भारतीय स्तर के साहित्यकारों ने भाग लिया, जिनमें अखिल भारतीय दलित साहित्य अकादमी के अध्यक्ष श्री सोहनपाल सुमनाक्षर, 'अस्मितादर्श' के सम्पादक श्री गंगाधर पाणतावणे, डॉ. श्योराज सिंह बेचैन, श्री मोहन दास नैमिशराय, सुन्दर टाकभौरे, डॉ. महीप सिंह, डॉ. चन्द्रेश्वर कर्ण, डॉ. रमाशंकर आर्य, डा. मैनेजर पांडेय, श्री विमल कीर्ति, सुशीला टाकभौरे, डॉ. सुरेन्द्र 'स्निध', जियालाल आर्य, डॉ. दयानन्द बटोही, मधुकर सिंह, शरण कुमार लिबाले, कंवल भारतीय, डॉ. एन. सिंह, सूरजपाल चौहान, बाबूलाल मधुकर, मलखान सिंह, कुसुम वियोगी, शांति यादव, रमणिका गुप्ता, गंगाराम परमार, प्रह्लाद चंद दास, जय प्रकाश कर्दम, विजय कुमार और 'हंस' के यशस्वी संपादक राजेन्द्र यादव उल्लेखनीय हैं। (आधार मुन्ना साहनी, हिन्दुस्तान-'दैनिक, 8, अक्टूबर'97) अभी इतना ही। शेष फिर कभी।

संपर्क : **'शाम्भवी सदन',**
गाँधीनगर, लक्ष्मीसागर (पो.), दरभंगा-846009,
दूरभाष : 23215

दलित साहित्य का सच

❑ सिद्धेश्वर

सच कहा जाय तो साहित्य और साहित्यकार देश, धर्म और काल तीनों से परे होते हैं, किसी सीमा में बंधकर वे नहीं रह सकते, वे नहीं लिख सकते । समाज में जो घटित होता है या देश में समय-समय पर जो विभिन्न राष्ट्रीय मुद्दे उभर कर आते हैं, उसमें जीने वाले साहित्यकार चाहे वे किसी जाति या सम्प्रदाय के हों, उससे प्रभावित होते हैं तथा अपनी रचनाओं के जरिए यथार्थ को उजागर करते हैं या कटाक्ष कर जनमत तैयार करने का काम करते हैं । उनकी यह जन-शिक्षा पूरी तरह निरपेक्ष होती है । पर आज देश की जो राजनीतिक- सामाजिक स्थिति है, ऐसा कुछ भी देखने को नहीं मिलता । साहित्य-जगत भी खेमों में बँटकर राजनीतिज्ञों के सुर में सुर अलाप रहा है । **पर हमें नहीं भुलना चाहिए कि एक आधुनिक धर्म निरपेक्ष समतामूलक समाज बनाने का सपना भारत में अभी मरा नहीं है । भारतीय समाज में मुक्ति की छटपटाहट अभी बनी हुई है । अंधेरे से लड़ने की शक्ति अभी मौजूद है। मौजूदा समाज व्यवस्था की सड़न को दफनाने की अंतहीन प्रक्रिया जारी है ।**

पृष्ठ भूमि : अतीत में झाँकने से यह स्पष्ट होता है कि समानता एवं कर्म के सिद्धान्त पर आधारित सहज, सुसंगठित एवं अनूठी वर्णव्यवस्था गतिशीलता के प्रवाह में उत्तर बौद्धिक काल तक आते-आते जब जन्म पर आधारित होकर जाति व्यवस्था के रूप में परिवर्तित हो गई तभी से भारतीय सामाजिक व्यवस्था में दलित कहे जाने वाले वर्ण की सामाजिक-सांस्कृतिक स्थिति अधोगति की दिशा में उन्मुख हो गई । वस्तुतः द्विजों ने अपने अभिजात्य को अक्षुण्ण बनाए रखने के उद्देश्य से ही गुण, कर्म एवं स्वभाव की आधारशिला पर आधारित वर्णव्यवस्था को कालान्तर में जन्म पर आधारित करके जाति व्यवस्था में रूपान्तरित कर दिया । इस प्रकार चार वर्ण न केवल चार जातियों में परिवर्तित हो गए वरन् धीरे-धीरे हजारों जातियों एवं उपजातियों में विभक्त हो गए । फलतः व्यक्ति-व्यक्ति तथा समूह-समूह के बीच जातीय विभेदों, असमानताओं, उच्चता-निम्नता, पवित्रता-अपवित्रता तथा धार्मिकता-अधर्मिकता की अभेद्य एवं असमानताओं के उत्तरोत्तर विकास की परिणति दलितों के प्रादुर्भाव के रूप में हुई । भारत में दलितों पर जो अत्याचार हो रहे हैं, आखिर इसका क्या कारण है ? डा. अम्बेडकर के अनुसार जाति और वर्ण की व्यवस्था सुरक्षित रखने के लिए दलितों को उत्पीड़ित किया जाता है क्योंकि उस सड़ी-गली व्यवस्था में असमानता को बढ़ावा मिलता है और जाति तथा वर्ण दोनों ही असमानता के समर्थक हैं । **दलित चेतना इसी असमानता के खिलाफ उभरकर सामने आई है और संघर्षरत है । यह दलित चेतना स्वाभिमान और सम्मान के प्रश्न को लेकर है ।** दलित आज भी अस्पृश्यता के शिकार हैं। हिन्दू समाज चाहकर भी इसे नहीं रोक पा रहा है । उभरती हुई दलित चेतना भी आज लेखकों के लिए विचारणीय मुद्दा है क्योंकि भारत में यदि दलितों के संदर्भ में विचार किया जाय तो एक ओर जहाँ स्वतन्त्रोत्तर उपरान्त जैसे-जैसे उनमें शिक्षा का प्रसार तथा संचार माध्यमों का उपयोग करने की सामर्थ्य एवं प्रवृति बढ़ती जा रही है वैसे-वैसे उनकी वैचारिक रूढ़िवादिता अब प्रगतिशीलता एवं आधुनिकीकरण की दिशा में प्रवृत दिखाई देती है वहीं दूसरी ओर समाज के विभिन्न वर्गों के बीच सामंजस्य और सौहार्द्र दिखाई तो दिया किन्तु आजादी के पाँच दशक के बाद भी विभिन्न जातियों और समुदाओं के बीच जो निर्बाध भागीदारी और स्वच्छ आदान-प्रदान होना चाहिए था, उसके बहुत उत्साहजनक चिह्न दिखाई नहीं देते । यही कारण है कि स्वतन्त्रताकाल से लेकर आज तक के पाँच दशकों के दीर्घअन्तकाल में किए गए व्यापक शासकीय प्रयासों तथा प्रशासकीय वैयक्तिक एवं संस्थागत प्रयत्नों के बावजूद प्रयासों एवं प्रत्याशाओं के अनुरूप दलित लोगों की स्थिति में परितर्वन नहीं हुआ है । इस पर सोच-विचार कर इसमें हस्तक्षेप करने की आवश्यकता आज साहित्यकारों के सामने आ पड़ी है । दलित आन्दोलन को मद्देनजर लेखकों की कलम चले, यह समय की माँग है ।

प्रादुर्भाव : साहित्य में दलित आन्दोलन साठ के दशक में मराठी भाषा में दिखाई पड़ा । इस आन्दोलन ने भी भक्ति आन्दोलन की तरह ऐसे रचनाकारों को जन्म दिया, जो सदियों से अभिव्यक्ति के अधिकार से वंचित थे । उन लेखकों ने जिस सामाजिक यथार्थ को अपने साहित्य के माध्यम से सामने लाने की कोशिश की, उससे तहलका मच गया । अपने अनुभव को अपनी लेखनी से दलित साहित्यकारों ने वाणी दी । दलित लेखकों में प्रारम्भ में सिर्फ दलित थे । परन्तु आज वैसी स्थिति नहीं है । आज वैसे लेखक भी हैं जो दलित नहीं हैं पर दलित चेतना से संचालित हैं । इस प्रकार दलित लेखकों के इन दो वर्गों के प्रथम वर्ग में मोहन दास नैमिश राय तथा ओमप्रकाश बाल्मीकि और दूसरे वर्ग में नारायण सर्वे, प्रेमचन्द, जगदीशचन्द्र, गिरिराज किशोर, राज किशोर आदि हैं । दूसरे वर्ग के लेखक वे हैं जो संकीर्णताओं और पूर्वाग्रहों से ऊपर उठकर व्यापक सामाजिक-आर्थिक सन्दर्भ में दलित समस्या को देखते हैं ।

पिछले कुछ वर्षों में हिन्दी क्षेत्र में भी दलित चेतना का एक नया उन्मेष हुआ है लेकिन इसके अन्तर्विरोध भी हैं । उन उन्मेष के मूल में जो आर्थिक प्रश्न थे, वे पीछे छूट गए हैं और यह आन्दोलन केवल वर्ग या जाति तक सीमित होता जा रहा है । वर्ण और वर्ग के अन्तर्विरोध दिन-ब-दिन गहराते जा रहे हैं ।

मराठा क्षेत्र में दलित आन्दोलन का जो रूप है वह हिन्दी क्षेत्र में दिखाई नहीं देता। कारण कि आजादी के बाद खासकर उत्तरी भारत में दबे-छिपे जाति पूछने-जानने की कोशिश करने वाली राजनीति में आज जाति ही सबसे प्रभावी तत्व बन गया है। हालांकि यह भी सच है कि भारत की आजादी ने बहुत खामोश ढंग से एक भारी क्रांति कर दी है। आज पूरी राजनीति, पूरे शासनतन्त्र, पूरे समीकरण उलट गए हैं। आजादी के बाद हाशिए पर खड़ी सामाजिक ताकतें आज एक मंच पर हैं और राजनीति का संतुलन ऐसा बारीक हो गया है कि समाज के छोटे से छोटे वर्ग की उपेक्षा करना अब संभव नहीं है। वरिष्ठ पत्रकार स्व. राजेन्द्र माथुर 'मंडल आन्दोलन' वाले दौर में यह कहा करते थे। आज सभी यह बात मानने लगे हैं। टूटते-बिखरते समाजवादियों को छोड़ दें तो किसी राजनीतिक दलों ने भी जाति को समाज के वर्गीकरण का प्रमुख आधार नहीं माना और न ही अपने नेतृत्व में दलित पिछड़ों को आगे करने की विशेष कोशिश की। यह कोशिश महात्मा गाँधी और लोहिया ने की थी, पर नेहरू के नेतृत्व में कांग्रेस ने भी नहीं की।

समानता के सिद्धान्त के मामलों में भी यह स्वीकार किया जाने लगा है कि कानूनी तौर पर यह चीज भले ही सम्भव हो पर व्यवहार में समाज अवश्य ही दो वर्गों में बँटा है। पैसे वाले, अंग्रेजी वाले शहरी मर्द, उँची जाति वालों की जमाव और है तथा बाकी लोगों की और। इन सब बातों का जिक्र इसलिए किया जा रहा है कि साहित्यकारों को भी इन सभी मुद्दों को अपने लेखन का हिस्सा बनाना होगा।

दलित जीवन की कहानियाँ सिर्फ उसी वर्ग से आए लेखकों की कलम से निकलें—यह जरूरी नहीं पर यह भी सच है कि किनारे पर खड़े होकर डूबने वाले की पीड़ा को एक हद तक ही अनुभव किया जा सकता है। दलित-लेखक का झेला हुआ जीवन और उसकी पल-पल की सच्चाई को उतनी ही जीवंतता एवं मार्मिकता से आप कैसे महसूस कर सकते हैं। दलित कवि ओम प्रकाश बाल्मीकि की 'घृणा तुम्हें मार सकती है' कविता की पंक्तियाँ हम सबों के समक्ष यह सवाल खड़ा करती हैं—

"चाहे संकीर्ण कहो या पूर्वाग्रही
मैं जिस टीस को बरसों-बरस
सहता रहा हूँ
अपनी त्वचा पर
सूई की चुभन जैसे
उसका स्वाद एक बार चखकर देखो
हिल जाएगा पाँव तले जमीन का टुकड़ा।"

उड़ीसा के रामगोपाल परिहार के मतानुसार अगर किसी साहित्यकार का भोगा हुआ यथार्थ दलित साहित्य को अधिक मानक, वैज्ञानिक और प्रभावशाली बनाता है, तो वह साहित्यकार भी दलित साहित्य का मान्य साहित्यकार होने का अधिकारी है। भले ही, कोई पुरूष लेखक स्त्री स्थिति का ज्यादा मार्मिक एवं सूक्ष्म चित्रण करे, लेकिन स्त्री लेखन की अपनी एक अलग उपादेयता है—शायद उसी तरह दलित-लेखन की भी अपनी एक विशिष्ट भूमिका है। (राज किशोर 'हिन्दी लेखन में दलितों की खोज'।)

इन सभी तर्कों और दलिलों के बावजूद भी यह कोई जरूरी नहीं कि दलित-लेखन के लिए लेखक दलित ही हो। संभव है उनके दर्द को दूसरे लेखक ज्यादा प्रासंगिकता और शक्ति के साथ प्रस्तुत करें। प्रेमचन्द, जगदीश चन्द्र तथा गिरिराज किशोर आदि तो उनकी पीड़ा को अपनी रचनाओं में बड़ी निर्भीकता से रखा है ठीक उसी प्रकार जैसे तसलीमा नसरीन ने औरतों को लेकर लिखा है। 'रेणु' ने 'मैला आँचल' एवं 'परती परिकथा' में दलितों को जो वाणी दी, वह तो अन्यत्र दुलर्भ है। राष्ट्रकवि 'दिनकर' ने जहाँ प्रेम से रची गयी रागात्मक कविताएं लिखीं वहीं अन्याय, अत्याचार, शोषण और उत्पीड़न के खिलाफ अपने हृदय की धधकती आग को भी खुलकर अपनी रचनाओं में उतार दिया। रचनाकार की पीड़ा जब 'स्व' के घेरे से निकलकर पूरे परिदृश्य पर छा जाती है तो उसका विस्तार होता है और वह रचना सबके दिलों को छूती है। साहित्य-साहित्यकार के अपने ही दर्द का अंकुरण है। यह उसका भोगा हुआ यथार्थ है। भोगा हुआ यथार्थ रचना को पुष्ट, प्रमाणिक और संवेद्य बनाता है। कोई भी रचना एक सामूहिक कर्म है और इस सामूहिक कर्म का श्रेय, किसी व्यक्ति का नहीं बल्कि सबको जाना चाहिए। रचना मनुष्य को मनुष्य से जोड़ने का माध्यम है। इसलिए आज के साहित्य में मनुष्य की अदम्य संघर्ष-यात्रा का चित्रण तो होना ही चाहिए, साथ ही व्यक्तिगत अनुभवों तथा पीड़ाओं का चित्रण भी। साहित्यकार को सामाजिक सरोकारों तथा अनेक प्रकार के अन्याय और अत्याचार का प्रतिकार कर रहे सामान्य जन के दु:ख -दर्द को भी नहीं भूलना चाहिए। हॉलाकि इधर का साहित्य दिशाहीन होता दिखाई दे रहा है। आम आदमी से उसका सरोकार नहीं रह गया है। आम-जन का दु:ख दर्द तथा उसकी संवेदनाओं की सहज, सुबोध और आकर्षक अभिव्यक्ति नहीं हो पा रही है जो साहित्यकारों के लिए चिन्ता का कारण बनना चाहिए। आज साहित्यकारों को अपने जज्बात का गला घोटना होगा। सच्चाई के धरातल पर चलकर कंटीले रास्तों को तय करना होगा। **सफल साहित्यकार आज उसे ही करार दिया जा सकता है जिसने समाज की हकीकत को कागज के पन्नों पर उतारने का प्रयास किया हो। एक सच्चा साहित्यकार दृष्टा और सृष्टा दोनों होता है। वह यथार्थ का दृष्टा है तो आगत का सृष्टा।**

इस दृष्टि से दलित साहित्य का महत्व बढ़ जाता है क्योंकि जन-सामान्य के दु:ख दर्द और उत्पीड़न की ओर उसके लेखक की दृष्टि सबसे अधिक जाती है। वह उससे द्रवित होता है। उसकी यह सहृदयता और संवेदनशीलता ही उसे जन-सामान्य से जोड़ती है जिसके परिणामस्वरूप उसकी आकांक्षाओं और स्वप्णों को वह अभिव्यक्ति और वाणी प्रदान करता है। उनकी सोंच की मूलभूत विशेषता यह है कि वे अपनी कृतियों एवं गतिविधियों में प्राय: समाज के निर्धन एवं शोषित वर्ग के लोगों की आशा-हताशा, हर्ष-विषाद तथा आकांक्षाओं को सहानुभूतिपूर्वक उकेरते हैं। इसके माध्यम से भारतीय जीवन के बहुविध रूपों एवं जीवन-मूल्यों को सहजता से जाना जा सकता है।

संपर्क : 'बसेरा', पुरन्दरपुर
पटना-1, दूरभाष : 228519

संस्कृति शब्द का सहस्यार्थ

❑ जागेश्वर महतो

संस्कृति शब्द में दो खण्ड है–'सम' एवं 'कृति'। सम के आगे कृति शब्द के रहने पर इन दोनों के बीच 'स' का आगम हो जाता है। फलत: 'समकृति' शब्द संस्कृति का रूप हो जाता है। सम, सं वा सम में अर्थत: कोई फर्क नहीं है। सम शब्द उपसर्ग है। इसका प्रयोग 'एकीभाव' में किया जाता है। इस प्रकार सम् और कृति शब्द एक और अनेक के पारस्पर्य संबंध में स्थित है।

सृष्टि की दृष्टि से, संस्कृति शब्द अंग और अंगीरूप में प्रजापति का अर्थ दयोतन करता है। जैसे सब अंग संहित रहने पर अंगीभाव व्यक्त होता है वैसे ही प्रजा और पति के संहित होने पर ईश्वर भाव व्यक्त होता है और उसे प्रजापति शब्द से कहा गया है। वैदिक विज्ञानुसार। संस्कृति शब्द मानव के राष्ट्रत्व का भी प्रबोधक है। "राजते इति राष्ट्रम" राष्ट्र का निर्वचनार्थ है। इस परिभाषानुसार समस्त विश्व में मानव ही एक मात्र राष्ट्र है क्योंकि "राजते" इस लक्षण से वह सर्वथा युक्त है। राष्ट्र के इस लक्षण से "राष्ट्र" इस लक्षण से वह सर्वथा युक्त है। राष्ट्र के इस लक्षण से "राष्ट्र" कोई भौगोलिक व पृथ्वी ही हो सकता है। भारत के प्राचीन इतिहास से ऐसा संकेत मिलता है कि राष्ट्रीयता सामान्यत: सार्वभौमिक वस्तु है।

मानव स्वरूप एवं मानव का राष्ट्रत्व के अतिरिक्त मानव के चरित्र संबंधी माप-दण्ड भी संस्कृति शब्द में निहित है। मानव आत्मा एवं शरीर भेद से दो भाग में सम और कृति की तरह ही विभाजित है और दोनों एक दूसरे के विरोधी है। आत्मा एक स्थानी है तो शरीर अनेक स्थानी है। आत्माभाव दर्शन प्रधान है तो शरीर वर्तन वा आचरण प्रधान है। ऋषियों ने विश्व के पांचों पर्वो को ब्रह्म दिवर्त कहा है, परन्तु ब्रह्म नामक पदार्थ के रूप में मानव को छठवाँ पदार्थ होना बतलाया गया है। अत: पाचों पर्व को जहाँ विश्व कहा गया है, वही मानव का ही द्योतक है। अतएव संस्कृति शब्द विश्व-राष्ट्रत्व को राष्ट्र परिभाषित करती है।

शरीर की अपेक्षा से वर्तनात्मक अभेद से समऽजन भाव उछिन्न हो जायेगा और मानव जीवन अभ्युदय एवं नि:श्रेयस की प्राप्ति के लक्ष्य से वंचित हो जायेगा। चरित्र शिक्षण सबों के लिए एक जैसा संभव नहीं है। देश-काल, पत्रादि के आधार पर व्यक्ति-व्यक्ति की योग्यता एवं क्षमता की बातें निर्भर करती है।

दान, त्याग, उपकार, मददादि करने की भावना सहज रूप में लोगों में पैदा होने लगेगी। कहीं कोई लोभ-लालच करने की जरूरत नहीं समझेंगे। इस प्रकार संस्कृति शब्द अपने निहितार्थ से रहस्यमय बना हुआ है। यह अनुशीलन योग्य तत्व है। भारत का प्राचीन साहित्य "निगमागम" नाम से संस्कृति का प्रतीक ही बना हुआ है।

संपर्क : आनंद इलेक्ट्रोनिक्स, केदराबाद, दरभंगा

क्षणिकायें

❑ रामचन्द्र निर्मोही

देश–प्रेम

उन्होंने
गहरा देश-प्रेम दर्शाया
देश के लिए दुर्लभ
मिट्टी का तेल
बरबाद होने से बचाया
बहु को
सूखा जलाया।

छत्र–छाया

गरीब पर
रहम करते
हमने उन्हें
एक मुद्दत से देखा है
मगर आज भी
गरीबों के ऊपर
केवल गरीबी की रेखा है।

स्वतंत्रता का अर्थ

क्रुद भीड़ ने नेता से कहा
हमें बुद्धू मत बनाइए
स्वतंत्रता का अर्थ बताइए
नेताजी बोले,
स्वतंत्रता का अर्थ
मेरे हाथ अधिक नहीं आया
मैंने केवल
दस लाख कमाया !

कल्याण

नारी कल्याण के
बढ़ते चरण,
दहेज, हत्या,
बलात्कार अपहरण।

वचनामृत

- भारत एक राष्ट्र है हम उसके पते के रूप में है।
- अनुभव अमूल्य कसौटी है।
- सफलता धैर्य की जननी है।
- जीवन केवल विचार है।
- नम्रता मनुष्य का आभूषण है।

उज्जवल भविष्य की ओर बढ़ते कदम ....

विज़न 2000

इंडियन फारमर्स फर्टिलाइजर कोआपरेटिव लिमिटेड (इफको) एशिया की सबसे बड़ी सहकारी तथा देश की विशालतम उर्वरक उत्पादक एवं विपणनकर्ता संस्था है। 135,000 सहकारी समितियों के माध्यम से 5 करोड़ कृषकों के स्वामित्व वाली यह महान सहकारी संस्था अपने कार्यकलापों के लिए सर्वत्र प्रशंसा एवं ख्याति प्राप्त कर रही है।

विजन 2000 : इफको ने कृषि क्षेत्र में विस्तार एव विविधीकरण को ध्यान में रखकर एक भावी योजना विजन-2000 तैयार की है। देश की हरित क्रांति के प्रति अपनी कटिबद्धता को सुनिश्चित करने के लिए इफको अपने आंवला व फूलपुर संयंत्रों में यूरिया उत्पादन की क्षमता को क्रमशः 7.26 से बढ़ाकर 14.52 लाख टन तथा 4.95 से बढ़ाकर 12.21 लाख टन कर रही है। कलोल एवं कांडला संयंत्रों के विस्तार की योजनएं भी प्रगति पर है। दक्षिणी भारत में एक विशाल यूरिया संयंत्र की स्थापना का कार्य भी प्रगति की ओर अग्रसर है।

अपनी महत्वाकांक्षी योजना विजन-2000 के द्वारा इफको देश में हरित क्रान्ति हेतु तारतम्य स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील है।

इफको

इफको

भारत में
हरित क्रान्ति
का उत्प्रेरक

एक सुदृढ़ कटिबद्धता के साथ

इफको

इंडियन फारमर्स फर्टिलाइजर कोआपरेटिव लिमिटेड

34, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली-110019

नालन्दा

❑ हरीन्द्र विद्यार्थी

केवल खण्डहर नहीं है नालन्दा,
अब भी सरस्वती का
अमिट पुँज है नालन्दा ।
कलिंग-युद्ध के बाद
ज्ञान और शान्ति की खोज में
लौट आये हैं घुड़सवार ।
आज भी इसके नाम से
भयभीत है मथुरा,
वह देखो यमुना में हिलोरें उठ रही हैं ।
क्योंकि शेर की बजाय
हंस की सवारी कर रहा है नालन्दा ।
इसके गर्भ में
तपस्वियों के लिए
आलू, प्याज और बादाम के गोदाम भरे हैं ।
केवल सम्राटों के पथरीले किले का अवशेष नहीं है नालन्दा,
मकई की भीनी खुशबू
और गेहूँ के गोटों की जवानी है नालन्दा ।
अपने पूर्वजों के गर्म रक्त का संचार
गर्म झरनों की तरह आज भी हा है इसकी धमनियों में
लेकिन, जंगल नहीं हो सका नालन्दा ।
भेड़िया और राक्षस इसके शब्द-कोष में
आसानी से नहीं मिल सकते
क्योकि धोवा, पंचाने और महाने की शीतलता है इसमें ।
ट्रेन और बस की खिड़कियों से
तुम नहीं समझ सकते इसे ।
आज भी हर गाँव के रेणुवन में बुद्ध साधना में लीन हैं,
तभी तो मंदिर की घंटी और मस्जिद के अजान
साथ-साथ सुनाई पड़ते हैं यहाँ ।
नालन्दा मरा नहीं है,
अब भी जीवित है नालन्दा ।
तुम नहीं लिख सकते
नालन्दा के बिना
हस्तिनापुर का इतिहास ।

संपर्क : खाजेपुरा, बेली रोड, पटना

दलित मानवता

❑ बैद्यनाथ पंडित 'प्रभाकर'

नग्न नृत्य देख दनुता का
हाय आज विकल ये आँखें
रो मत, रोना पाप यहाँ
चुपके आँसू ढरकारी आँखें
आज अचानक कहा किसी ने
कठिन योजना लागू होगी
हर मानव को काम मिलेगा
सुखी आज मानवता होगी
था कि लाल परचे पर सब को
मुफ्त अन्न है मिलने वाला
स्यात शान्त होने वाली है
इनके जठर अनल की ज्वाला
आशाओं के अमृत पीकर
जीना हाय यहाँ से सीखा
इन दलितों के भाग्य, विधाता
ने जाने कैसे लिखा
वर्षा रानी दया तुम्हे भी
आती नहीं आज क्यों इन पर
टूटी ठाट पानी गिरता है
छप्पर से चू इनके तन पर
हाय! नहीं फटता कठोर उर
लेती सुत को क्यों प्रबोध कर
सिसक - सिसक जाते अबोध
सो माता की छाती से लगकर
पुनः सुबह में वही हाल
माँ ! मैं भी हूँ जोरों का भूखा
थोड़ा भी दे दो मुझ को कुछ
खा लूँगा रूखा या सूखा

संपर्क : प्रभा निकेतन, धरनी पटट्री, समस्तीपुर, पिन: 848506,

वात्सल्य

❑ चंद्र मोहन पांडेय

लेकर शिशु को निज आंचल में
उर का मृदु नीर दिया तुमने
कह प्रिय 'मुकेश' निज हाथों से
अंतर का पीर दिया तुमने
वह बिखराया है दुनियां में
स्वर से तेरा ही अमित प्यार
री वाणी तुमको नमस्कार

संपर्क : सैनिक स्कूल, तिलैया

चेतावनी

❑ डा. हीरा लाल सहनी

भ्रष्टाचार के पिशाच को
मसल दो
धर्म और न्याय से
इसे भस्म करो
अन्यथा
यह भस्मासुर
संपूर्ण राष्ट्र के शिव को खा लेगा
आओ जनतंत्र के हाथों से
शासन के घट को माँज लो
स्वार्थान्धों की आँखों में
जनमत का जल आँज दो
अधिनायक शाही के उठते दर्द को
स्तुति के भयभीत सर्प को
कुचल दो!
जला दो!!
ताकि स्वतंत्रता हँस सके
कामनाएँ गा सके
और भाग्योदय की फसल
मानवता के धरातल पर उग सके ।
हर पौधा, हर कली, हर फसल को
अपने प्राकृतिक रूप में
बढ़ने दो, खिलने दो, मुस्कुराने दो,
ताकि
सहज ही निकले जन-जन से गान
वन सके भारत
भारत महान ।

संपर्क : मुहल्ला-सेनापत, दरभंगा-846004

तू मेरी भाषा हो

❑ डॉ. उमेश उत्पल

कविता सी-
कोमलकांत प्रिये
लावण्यमयी-
छंदों सी तुम
उपवन-उर की विश्रांति प्रिये
मनभावन के उद्‌गारों का
अनुपम सिरजनहार प्रिये
तू मेरे हिय की आशा हो
पल-छिन जीवन की
प्रेममयी परिभाषा हो ।
आरक्त अधर
धन केशपाश
चंचल नयना,
ये अमित हास,
मुख सौम्य-सुभग
पुलकन भर दे
वह देहलता
कमनीय छटा
तू ही कला की आशा हो
मैं तेरा हूं शब्द
तू मेरी भाषा हो ।

संपर्क :'वाणी निलय'
हनुमानगंज (मिश्र टोला), दरभंगा-846004

रहस्योद्घाटन

❑ डा० यशवंत

पन्द्रह वर्षों की आराधना के बाद
देवी प्रसन्न हुईं,
डिग्री का वरदान दिया ।
बाद में पता चला डिग्री नकली थी ।
जिस देवी की मैने आराधना की थी,
वह सरस्वती नहीं,
कोई और थी। उनका वाहन भी हंस नहीं,
कोई और (बगुला) था।
अपना रहस्य भी बता दूँ
मेरी आराधना भी नकली थी,
परीक्षार्थी मैं नहीं, कोई और था।
विद्वत् सभा की अध्यक्षता
अनपढ़ से कराने को तैयार हैं।
हम कितने उदार हैं बगुलों को हंस मानने को तैयार हैं।

संपर्क : मसौढ़ी, पटना

रैली

❑ डा. रंजन विकास

परम्परा
चाहे कुछ भी रही हो
रैलियों का
कोई नियम नहीं होता
कोई जाति नहीं होती
कोई धर्म नहीं होता
इसीलिए
किसी बैनर के नीचे
अपने-अपने आकार में
एक दूसरे से
भिन्न होती हैं रैलियाँ
दिन दुना
रात चौगुनी
रैलियों के बढ़ते आकार
आज द्योतक हैं–
भूखे-नंगे-अधनंगे
उस समाज का
जिसका अपना
न तो अस्तित्व है
न विचार है
न सामर्थ्य है
गो कि
खुश है सरकार
अपनी रैली की सफलता पर
अगर चाहे तों
रैलियों का नाम
कुछ भी दे दो मगर
गूँजते नारों के बीच
रोटी की तलाश में
हर रोज
रैली-दर-रैली
भटकते हैं लोग

संपर्क : क्षेत्रीय स्वास्थ्य कार्यालय, भारत सरकार, पटना-3

गज़ल

❑ वसुंधरा दास

कदम-कदम पर शहर है,
नजर-नजर में जंगल,
दोस्त-दोस्त के मशवरें हैं,
निजाम-निजाम के दंगल ।
बात-बात में फरेब है,
चाल-चाल में शांतिरपन,
होंठ-होंठ पर किस्से हैं,
इशारे-इशारे में काईयाँपन,
पल-पल के जख्म पर,
मकान खा गये किरायेदार,
कोर्ट मांगे सनद और फीस,
शाइर-शाइर है दोस्त
बूट्स कोई कम नहीं,
गैर-गोरे को अपनाया,
अपनों से अब खैर नहीं ।

संपर्क : आसन सोल, पश्चिम बंगाल

श्रम की पूजा

❑ नीशिथ पांडेय

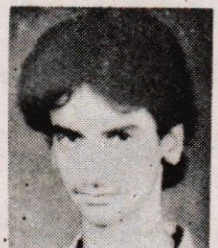

श्रम की पूजा करने वाले,
आगे बढ़ते जाते हैं ।
मेहनत से घबराने वाले,
मंजिल कभी न पाते हैं ।

श्रम से पर्व शीश झुकाते,
तूफां भी रूक जाते ।
श्रम का धन ही सच्चा धन है ।
सभी यही सिखलाते हैं ।

कभी परिश्रम व्यर्थ न जाता,
दुनिया में सम्मान दिलाता ।
जो श्रम से कतराते हैं, वो
जीवन भर पछताते है ।

यादगार

❑ लक्ष्मण सहनी

सिंदूरी शाम
अमर यादगार है
जननी जन्मभूमि की
आन, मान, शान पर
मर मिटने वाले
वीरों की, जवानों की
औ 'अमर शहीदों' की
जिनके नव वधुओं की
मांगों का सब सिंदुर
ले उड़ी सिंदूरी शाम ।

गीत

❑ चन्द्र प्रकाश माया

सुधियों के चुभे रात-रात भर बबूल ।
बिखर गए आस भरे गंधहीन फूल ।
नींद छिपी, स्वप्न लिये सात रंग के,
लौट वासना गयी भवन अनंग के,
सांस-सांस फांस बनी, रोम-रोम शूल ।
सुधियों के चुभे रात-रात भर बबूल ।
सो रहा जहान, मौन रात ढल रही,
और बींधती बुरी घड़ी निकल रही,
दृष्टि जिधर, उधर सिर्फ धूल-धूल-धूल ।
बिखर गए आस भरे गंधहीन फूल ।
अब बदल गया मिजाज शोख पवन का,
रंग आज उतर रहा नील-गगन का,
बार-बार दंड सिर्फ एक बार भूल ।
सुधियों के चुभे रात-रात भर बबूल ।

संपर्क : दैनिक हिन्दुस्तान, पटना-1

नेह टाँगती

❑ विजय "गुंजन"

कैसा-कैसा मन लगता है
थका-थका सा तन लगता है ।
पंक्तिबद्ध हैं अभिलाषाएँ
दृग-विषय न बन रहीं दिशाएँ
भ्रम-विभ्रम के गहन कुहासा में
डूबा हरक्षण लगता है ।
मर्यादा अनुबन्ध मांगती
नयन-नयन में नेह टाँगती
मुखमण्डल पर फेर रहा कोई
अलकों का धन लगता है ।
कहीं उमर-घट रीत न जाये
यह स्वर्णिम पल बीत न जाये
क्षणभंगुर जग में भू के
कण-कण से अपनापन लगता है ।
कैसा-कैसा मन........... ॥

संपर्क : पोस्ट बॉक्स संख्या-24, पटना-800001

गज़ल

❑ डा. रामलखन राय

आप तो नाहक जरा-सी बात पर रोने लगे
जी रहे हैं जिंदगी फिर होश क्यों खोने लगे
चोट खाकर पत्थरों से पेड़ फल ही बाँटता है
सिर्फ इक झटका लगा मुख अश्क से धोने लगे
जिन्दगी तो कर्म का पर्याय है बस जानिए
हो विमुख क्यूं कर्म से यूं चैन से सोने लगे
है सफर जब इम्तहानों का मगर ये देखिये
आजमाना छोड़ कर क्यूं आप डर बोने लगे
है हुनर जीना यहाँ पर मुस्करा कर सीखिए
छोड़कर इसको दूसरी फिर राह क्यों टोने लगे ।

संपर्क : ग्रा.-पत्रा.-मोर दिवा, जिला-समस्तीपुर, दूरभाष-23588

☎ 235683

SAHA TRADERS

15, ABHISEK PLAZA, EXHIBITION ROAD, PATNA

Exclusive Shoppee for GULF Lubricants

Registration No. 13-P of1955-56 Phone : 352480

THE PEOPLE'S CO-OPERATIVE HOUSE CONSTRUCTION SOCIETY LTD, PATNA

KANKARBAGH, PATNA-800 020

THE SOCIETY IS AFFILIATED WITH THE BIHAR STATE HOUSING CO-OPERATIVE FEDERATION LTD.

LALIT BHAWAN, PATNA-800 023

This is the biggest Housing Co-operative Society of the State having1730 members and out of them1722 members have been provided with standard plots.Nearly 1400 residential houses have been completed by the members. Society has provided Rs. 1,78,00,000 House building loan to its members for construction of their houses. Society has purchased Land at village Jaganpura for providing residential plots to its members. Society has already constructed a big Community hall in B-Sector for Common utilities of its members and others.

I.H. Rizvi
President

L.P.K. Rajgrihar
Vice President

Prof. M.P. Sinha
Honorary Secretary

मिथिला की लोक कलाएँ

❑ जितेन्द्र कारजी

मिथिला लोककला वास्तव में ग्राम्य जीवन की संस्कृति से ओत-प्रोत है। इसमें ग्राम्य जीवन के विभिन्न आयामों का सुन्दर एवं सजीव-सा चित्रण देखने को मिलता है। मिथिला लोक-चित्रकला वास्तव में मधुबनी चित्रशैली के नाम से विश्वविख्यात है।

इस शैली के प्रधान केन्द्र मधुबनी जिलान्तर्गत जितवारपुर एवं राँटी ग्राम है। वैसे तो छिट-पुट रूप से सम्पूर्ण मिथिला में इन चित्रों का निर्माण होता है। मधुबनी चित्रकला शैली को चित्रों की बनावट के आधार पर मुख्य रूप से विभक्त किया जा सकता है जितवारपुर चित्रशैली जहाँ रेखा-चित्रों की प्रधानता है।

इन चित्रों में मुख्य रूप से रामायण, महाभारत, दुर्गा, काली, सरस्वती, विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान-मुण्डन, यज्ञोपवित, विवाह आदि से सम्बन्धित विविध दृश्यों एवं विषयों की प्रमुखता रहती है। सभी वर्ग एवं समुदाय की ग्रामीण महिलाएँ गृहकार्य से संचित अपने अवकाश के क्षणों का उपयोग इन चित्रों के निर्माण में करती हैं। इसमें जाति-धर्म का कोई भेद-भाव नहीं होता है। प्राकृतिक वस्तुओं से रंग तैयार कर इन चित्रों में रंग भरा जाता है। इस चित्रकला की सबसे बड़ी विशेषता है कि अशिक्षित महिलाएँ भी इन चित्रों के निर्माण में काफी कुशल होती हैं। मधुबनी चित्रकला में अनुपात का अभाव है।

चित्रकार स्वतंत्र रूप से तूलिका का प्रयोग इन चित्रों के निर्माण में करते हैं। यह चित्रकारिता एक ओर जहाँ चित्रकारों को अपनी भावना व्यक्त करने का सुअवसर प्रदान करती है वहीं दूसरी ओर मनोरंजन के साथ ही आय का साधन भी बनती है। आज देश-विदेश के स्तर पर मधुबनी चित्रकला की मांग बढ़ती जा रही है। फलस्वरूप चित्रकारों का झुकाव इस चित्रशैली के निर्माण की ओर बढ़ता जा रहा है। आज इस शैली के चित्रकार मौजूद हैं जिनकी कृतियों ने राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना प्रभाव स्थापित किया है।

श्रीमती सीतादेवी, महासुन्दरी देवी, जगदम्बा देवी, गोदावरी दत्त आदि मधुबनी चित्रशैली की ऐसी हस्तियाँ हैं जिन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। इस शैली के कलाकार विदेशों में जाकर इन चित्रों का निर्माण करते हैं। विदेशी पर्यटक भी बड़े चाव से जितवारपुर एवं राँटी से इन सुन्दर चित्रों को खरीदकर अपने देश ले जाते हैं और अपने घरों को सजाते हैं।

मिथिला की हस्तकला भी काफी समुन्नत है। घास, सींकी, कागज तथा कपड़े से तरह-तरह की वस्तुओं का निर्माण महिलाएँ करती हैं। गृहकार्य में आनेवाली वस्तुओं से लेकर साज-सज्जा की भी वस्तुएँ बनायी जाती हैं। मोथी, घास से चटाई, सींकी से डलिया, मौनी, पेटी, खिलौने आदि बड़े पैमाने पर बनाए जाते हैं।

पुराने और नये कपड़े से सुजनी का निर्माण, उस पर धागे से भिन्न-भिन्न तरह की फूल-पत्तियाँ, मानव एवं पशु-पक्षी की आकृतियाँ, प्राकृतिक दृश्य आदि का सुन्दर अंकन होता है। मिथिला में खासकर लड़कियों की शादी के अवसर पर उनकी माँ द्वारा विशेष रूप से हस्तकला की वस्तुएँ देने की प्रथा है। फलस्वरूप प्रत्येक परिवार की महिलाएँ हस्तकला की कुछ-न-कुछ वस्तुओं का निर्माण निश्चित रूप से करती हैं। इस प्रकार यह कला एक परिवार से दूसरे परिवार तथा एक गाँव से दूसरे गाँव प्रचारित और प्रसारित होती है।

आवश्यकता है इन कलाओं के जीवन स्तर को उठाने की। उन्हें उचित सम्मान एवं आदर देने की ताकि वे हमारे सांस्कृतिक विरासत को परम्परागत रूप से भविष्य के लिए संजोये रखें। उन्हें उचित प्रोत्साहन मिले ताकि इस कला से सम्बन्धित वस्तुओं, कलाकृतियों का बड़े पैमाने पर निर्माण-कार्य संभव हो और वह जीवकोपार्जन का स्रोत बन सके।

संपर्क : बेगुसराय संग्रहालय, बेगुसराय

शुभकामनाओं सहित :

मे. आनन्द इलेक्ट्रॉनिक्स

केदराबाद, दरभंगा

यहाँ टी.वी., रेडियों का मरम्मत तथा उसके स्पेयर पार्ट्स उचित मूल्य पर उपलब्ध।

परीक्षा प्रार्थनीय

प्रो. जागेश्वर महतो

महिलाओं में नशा प्रवृति

❑ अरविंद कुमार मंडल

महानगरों की फैशनेबुल महिलाओं में सबसे लोकप्रिय नशा शराब ही है क्योंकि यह प्रायः पति या अन्य पीने वालों के साथ 'पीने के अपराधबोध' को कम कर देता है । ऊपर से अब यह 'गंदी दृष्टि' से भी नहीं देखा जा रहा है । इसी कारण मद्यपान अब धीरे-धीरे उच्च वर्ग के शयन कक्ष से मध्यमवर्ग के ड्राईंग रूम तक आने लगा है ।

धूम्रपान तथाकथित आधुनिक युवतियों में ही अधिक लोकप्रिय है । शहरी क्षेत्रों में महिलाओं का अच्छा-खासा वर्ग पान-मसाला उद्योग का संरक्षक बन बैठा है । नशा करने वाली प्रायः प्रत्येक शहरी महिला को नशे के कुप्रभाव का पता होता है । इसके बावजूद तथाकथित आधुनिक महिलाएं सिगरेट पी रही हैं, भले ही एक सिगरेट जीवन के पांच मिनट को कम कर देता है एवं शराब व धूम्रपान का नशा गर्भस्थ शिशु पर कुप्रभावों की काली मुहर लगाकर गर्भपात तक करा देता है ।

भारतीय महिलाओं में नशे की परम्परा प्राचीन काल से ही रही है । मध्य काल में दिल्ली सल्तनत और खासकर मुगल बादशाहों के हरमों एवं महलों में औरतों के नशा करने, खासकर मदिरा सेवन के पर्याप्त उदाहरण हैं । आधुनिकता यूरोपीयकरण का पर्याय बनती जा रही है । जन जातीय, एवं बंजारा वर्ग की महिलाओं में नशे की एक मान्य परंपरा थी और अब भी बहुत हद तक है । परन्तु इस वर्ग की महिलाओं के लिए नशा या तो धार्मिक रीति रिवाजों का एक अंग था या उत्सव के अवसर पर मनोरंजन का साधन ।

नशे की प्रवृति को आज हम मुख्यतः दो वर्ग में रख सकते हैं—अचेत स्थिति एवं सचेत स्थिति । अचेत स्थिति में नशा करने वाली महिला इसके कुप्रभावों से भिन्न नहीं होती है और यहाँ तक कि उसे अपने नशे की गुलामी का अहसास भी नहीं होता । जन जातीय क्षेत्रों जैसे छोटानागपुर में हड़िया, उत्तर-पूर्वी भारत के आदिवासी क्षेत्रों में छौग इत्यादि मादक पेय सेवन की प्रवृति इस स्थिति में रखी जा सकती है । दूसरी स्थिति, सचेत स्थिति सभ्य एवं आधुनिक कहे जा रहे समाज की महिलाओं में विद्यमान है । उन्हें अपने नशे की प्रवृति और इसके कुप्रभावों का पता होता है, परन्तु नशे के स्पप्निल मादक संसार का आकर्षण उन्हें इस दिशा में खींचता जाता है । मजेदार बात यह है कि इस स्थिति में बहुत दूर तक सफर तय कर गई कुलीन महिलायें और अधिक सभ्य एवं आधुनिक समझी जाने लगी ।

महिलाओं में नशा प्रवृति के और भी कारक हैं जो साधारणतया पुरूषों में नशे की प्रवृति के कारकों के समान ही है । अत्याधिक मानसिक तनाव जो आधुनिक जीवन का एक अंग बन चुका है और कटु पारिवारिक माहौल, कई बार स्त्री को नशे की तरफ, प्रायः शराब की तरफ, ले जाता है । बहुत बार मजे के लिए ही लड़कियाँ नशे के स्वप्न महल का दरवाजा खटखटाती हैं । बहुत बार अपने पुरूष मित्रों के कारण या घर में पति की जिद के कारण भी कई महिलाओं को नशा करने पर मजबूर होना पड़ता है ।

एक तरफ जहाँ आधुनिकता एवं उन्मुक्त संस्कृति नये सिरे से जंग का ऐलान कर रहा है वहीं हमारी भारतीय आधुनिकायें सिगरेट के धुयें से भारतीय संस्कृति और समाज की होलिका जलाने का प्रयास कर रही हैं ।

महिलाओं में नशे की प्रवृति यदि इसी तरह अबाध गति से बढ़ती रही तो वह दिन दूर नहीं जब मद्यपान-विरोधी विज्ञापन में हाथ में शराब की बोतल लिए लौटते पति की जगह कोई महिला ले ले । जैसे दोनों मामलों में अंतिम वाक्य एक ही रहेगा कि नशा परिवार एवं समाज का कोढ़ है ।

संपर्क : महासेठ कॉलोनी, लहेरियासराय

सरदार पटेल के 124वें जयन्ती-समारोह
के अवसर पर
हमारी शुभकामनाएँ

मेसर्स-न्यू चोपड़ा अंग्रेजी दवाखाना

न्यू मार्केट, पटना-800 001

स्वतंत्र भारत की न्यायपालिका

❑ कामेश्वर मानव

अपने पचास वर्ष के लोकतंत्र की जलती इमारत में एकाधिकारवादी मनोवृत्ति आग में घी का कामकर रही है । इसी मनोवृति ने व्यक्ति के जन्म के साथ-साथ उसके सारे क्रिया-कलाप को जातिगत चक्रव्यूह में बाँट रखा है । यहाँ की न्यायपालिका पर से जनता की आस्थाएँ टूटने लगी हैं, किन्तु उसे अपने ऊपर बहुत गुमान है भले ही लोक अपेक्षाएँ पूरी हो या न हों पूरा सिस्टम अपने खटारे की चर्मराहट को अच्छी तरह समझ रहा है किन्तु एकाधिकारवादी मनोवृति इसे ढोये जाने की विवशता से ग्रस्त है ।

आजादी की अर्द्धशती में दरिद्रता बड़ी तेजी से बढ़ी है इसका ग्राफ पच्चासी प्रतिशत से अधिक पहुंच गया है । दलित मात्र पिछड़ी जाति और हरिजन आदिवासी ही नहीं वरन् अभिजात्य वर्ग के गरीब भी लाचार और बेबस हैं और यह दलित संघर्ष न्यायालयों का दरवाजा खटखटाने लगा है । अपने हितों की उपेक्षाएँ सहते-सहते न्यायपालिका में अपना हिस्सा खोजने लगा है और सवर्ण सूई की नोक भर जमीन देने के लिए सहज तैयार नहीं है ।

न्यायालयों में व्याप्त विसंगतियों की जानकारी सबों को नीचे से ऊपर तक है । जाति और आभिजात्यता को गुण और प्रतिभा का आधार माना जाता है । व्यक्तित्व के दोगलेपन की दक्षता मानी जाती है । किसी भी कानून का स्वार्थपूर्ण विवेचन एवं तदनुकूल व्याख्या की जाती है समर्थों एवं धनियों के लिए कानून बदल जाते हैं । आमजन को न पेशकारों की पेशी से छुटकारे के आसार नजर आ रहे हैं और न ही उन्हें भ्रष्टाचार से मुक्ति की ही कोई आशा है ।

एक पोस्टकार्ड के रिट्याचिका मानकर न्याय दिलाने की की गयी चेष्टा स्वरूप आरंभ की गयी लोकहित याचिकाओं ने न्यायधीशों की नियुक्ति प्रक्रिया तक को चुनौती दे डाली इसपर लोकहित याचिकाओं की सीमा रेखाएँ संकुचित की गयीं । इसके बावजूद भी राजनीतिज्ञों के खेमे में तहलका मचा है कारण कि पूरे देश में 1996 से अब तक 146 घोटालों से भी अधिक भ्रष्टाचार प्रकरण उभरकर सामने आ गये ।

घोटालों के आँकड़े परीक्षार्थियों को याद होने का नाम नहीं लेते और परीक्षाओं में इसके पूछे जाने की संभावनाएँ अधिक होने लगी है : शायद इसी कारण लोकहित याचिकाओं को राजनेता बन्द करवाने पर तुले हुए हैं । इस पर संसद मे कुछ कानून बनने वाले हैं स्वाभाविक है-पवित्रता के नकाब में भ्रष्टाचार की स्वर्ण जयन्तियाँ कैसे मनेगी ? चुनावी तिकड़म के लिए अतुलित साधन अनैतिक ढंग से जुटाकर भी स्वच्छ छवि प्रदर्शित करने की नियति में बाधक लोकहित याचिकाएँ तो बन्द होनी ही चाहिएँ-राजनीतिज्ञों को सुरक्षित रहना जरूरी है भी ।

विगत पचास वर्षों की आजादी की उपलब्धी है-लाचारीकरण की संस्कृति-जो आमजन को न जीने देती है न मरने वरन् कुत्ते की दुम की प्रतिबद्धता मात्र पैदा करती है । पचासी प्रतिशत लोग रोटी के लिए मुंहताज हैं । जनता से प्राप्त कोष का बन्दर बाँट और घोटाला हो रहा है-लिपा-पोती हो रही है । पचास वर्षों से लगातार योजनाएँ कागजों पर पूरी की जाने की नियति है देश की भ्रष्ट और कर्जखोर संस्कृति में चुनावी खर्च विश्व में एक नवम्बर पर आ गया है । फाइलों में दरिद्रता बड़ी तेजी से खत्म की जा रही है । किन्तु इससे दलित संघर्ष सिथिल नहीं पड़ा है । कहीं सूचना के अधिकार को मौलिक अधिकार में शामिल करने की मांग है तो कहीं काम के अधिकार को, किन्तु दोनों मांगे अधर में लटकी है पारदर्शिता बेईमानों को बेधरंग नंगा कर देगी तो दूसरा मुँहताज से मुक्ति । अपनी इस उपलब्धि के ताने बाने के जाल से राजनीतिज्ञ मुक्ति की राह खोज रहे हैं, उनके कारनामें दबाये दब नहीं रहे हैं । तब न्यायापालिका को अपने इशारे पर नचाना चाह रहे हैं—पुरानी न्यायाधीश नियुक्ति प्रकरण की दुहाई देकर । उधर राजनीतिज्ञों से बचने की खींचतान चल रही है—न्यायिक व्यवस्था की सर्वोच्चता बनाये रखने के नाम पर, किन्तु उस खींचतान में लोक अपेक्षाएँ निराश बन बैठी है । उच्चतर न्यायिक सेवा आयोग के गठन का मामला अर्धशती के बाद भी अस्तित्व में नही आ सका है ।

विचित्र संयोग है कि पूरे देश में मण्डल कमीशन लागू होना है-बिहार शंकर के त्रिशुल पर है । यहाँ मण्डल कमीशन का आरक्षण न्यायपालिका में लागू नहीं है न्यायपालिका का स्तर गिरने का डर है यद्यपि कि सबके द्वारा किये गये फैसले ऊपर के न्यायालयों से टूटते और बदलते हैं—ऐसा नहीं कि सिर्फ पिछड़ी जाति के न्यायिक पदाधिकारियों के साथ ही ऐसी बात है । एकाधिकारवादी मनोवृति की अपनी सोच और संस्कृति है जो दलितों एवं पिछड़ों को सत्ता में भागीदारी कौन कहे-प्रवेश मात्र की भी अनुमति नहीं देती और वरीय अधिवक्ता तक को कहने की जरूरत पड़ गयी है—"कुछ न्यायाधीश-वकीलों के चेहरे देखकर फैसला करते हैं ।"

एक ओर विदेशियों को आमंत्रित कर सभी लाभकारी ईकाइयों में उनकी भागीदारी देते अघा नहीं रहे हैं दूसरी ओर हामरा सम्पूर्ण देश संकुचित जातिगत भावनाओं के कठघरे से ऊपर उठकर दलितों को बराबरी का अवसर देने में भी कतरा रहा है यद्यपि संविधान से प्रमाण-पत्र प्राप्त है बराबरी का । यहाँ तक कि

हमारे न्यायालयों में कभी-कभी समान परिस्थिति में समान आदेश एवं अनुदेश प्राप्त होते भी नहीं देखा गया है और बात यहाँ अटक जाती है कि यह तो माननीय न्यायाधीशों की अपनी-अपनी सोच का मामला है । बात विचित्र किन्तु विश्वसनीय है ।

विगत 12 अप्रैल 1986 को माननीय पूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री एस.एस. संधवालिया साहब ने दो टूक कहा-"बिहार की सम्पूर्ण न्यायिक व्यवस्था पथभ्रष्ट हो चुकी है । इससे आगे बढ़कर विगत 21 जनवरी 1994 को 'हिन्दुस्तान टाइम्स' की एक भेंट में माननीय मुख्य न्यायाधीश श्री बी.सी. बसाक का मानना है कि भ्रष्टाचार जीवन का अभिन्न अंग बन गया है और न्यायपालिका में भी भ्रष्टाचार है न्यायिक पदाधिकारियों को सचेत करते हुए माननीय पूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री डी.पी. वधवा ने 16 मार्च 1996 को कहा कि गरीबों, पिछड़ों एवं सर्वहारा की आस्था न्यायिक व्यवस्था में पूर्णतः बनाये रखने हेतु त्वरित एवं कमखर्ची न्याय लागू करने पर बल देने की जरूरत है ताकि उन्हें आतंकवादी न्यायालयों के प्रति उत्पन्न ललक से बचाया जा सके किन्तु समझ में बात नहीं आ रही है कि न्याय शुल्क में अप्रत्याशित वृद्धि करके गरीबों को सस्ता, न्याय कैसे दिलाया जा सकेगा ।

इन सारी बातों को समझने वाले जागरूक नागरिकों की कमी नहीं है किंतु कुप्रवृतियों से थके कुछ कर सकने में असमर्थ दीख रहे बालस्वरूप राही की ये पंक्तियाँ स्वतः होठों पर आ जाती हैं –

गलत व्यक्ति गलत व्यवस्था
गलत जगह पर होकर !
क्या कर लेगा तू अपनी
हाथों की चुभोकर !!

समय के अंतराल में कमजोर वर्ग को न्याय तो मिलेगा ही इसमें दो मत नहीं । महर्षि विवेकानन्द ने कमजोर वर्ग को आगे बढ़ने में मदद करने की सलाह दी थी तब उसे देवता मानेंगे किंतु वे कमजोर वर्ग जब अपने संघर्ष से आगे बढ़ेंगे तो अपने दुश्मन की प्रतिद्वन्दि समझेंगे ।

सचमुच यदि सम्मान अवसर सबों को मिले तो हम सभी भारतवासी उस स्तर पर जाकर स्वतंत्रता की जयन्ती वर्ष मना सकेंगे-जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अनुभव करेगा कि यह भारतीय द्वारा, उनके बीच और उनके ढंग-ढांचे से मनायी गयी जयन्ती है-अन्यथा यह एक वर्ग विशेष का मात्र बनकर रह जायगा, और तभी सरदार पटेल के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजली भी होगी ।

संपर्क : अधिवक्ता, जयप्रकाश नगर, पटना-1

●●●

With Best Compliments From

YORK BATTERY INDUSTRIES

Manufacturers :
Storage Battery, Battery Plate,
Inverter and Battery Charger.

Deals in : All Battery Parts,
Shanti Sadan, Shanti Marg
Mithapur, Patna-800 001
Phone : 223302

Charak Pharma

Stockist for :
Themis, Wander, Searle, Lupin,
Reptakos, Unichem, Dutt-stevens,
Caldern, Sona Pharma
Lab.,elder,Gluconate,
Amritanjan,Gujarat Lab.,
Orbits, Stadmed

Govind Mitra Road, Patna-800 004
Ph. : 651858

विज्ञान प्रगति

हृदय वाल्व के संकरेपन को दूर करने की नई विधि :

हृदय रोग आधुनिक युग के भयानक अभिशाप बनकर सामने आए हैं तथा विचारणीय है । प्रमुख हृदय रोग चिकित्सक डा. पुरूषोत्तम लाल ने अपने देश में हृदय वाल्व के संकरेपन को बगैर ऑपरेशन दूर करने की एक ऐसी सस्ती और दुष्प्रभाव रहित नई विधि विकसित की है जो 'एक्सरे' आधारित महंगी तथा दुष्प्रभावयुक्त परम्परागत तकनीकों का खर्च यहाँ के लाखों गरीब मरीजों के लिए वरदान साबित हो सकती है । डा. लाल ने चेन्नई स्थित अपोलो अस्पताल, नई दिल्ली के इन्द्र प्रस्थ अपोलो अस्पताल तथा नोएडा के अत्याधुनिक उपकरणों व सुविधाओं से सुसज्ति मेट्रो हॉस्पीटल्स एण्ड हार्ट इंस्टीच्यूट में अल्ट्रासाऊंड (इकोकार्डियो ग्राफी) आधारित अपनी इस विधि के जरिए अनेक मरीजों का हृदय वाल्वों के संकरेपन से निजात दिलाया है । विदित हो कि अपने देश में इस रोग के मरीज इन दिनों तकरीबन एक करोड़ 80 लाख लोग हैं ।

आधुनिक जीवन की व्यस्तता और भाग-दौड़ तनाव तथा रहन-सहन व खान-पान की गलत आदतों के चलते हृदय की बीमारियाँ महामारी बन गई हैं । आज केवल अमीर ही नहीं, बल्कि अधेड़ों और प्रौढ़ों के अलावे कम उम्र के गरीब और मध्यवर्गीय तबकों में भी यह रोग काफी तादाद में होने लगा है । ऐसे समय में हृदय वाल्व के संकरेपन से निजात दिलाने की नयी विधि लोगों के लिए वरदान साबित होगी ।

10 हजार में बाईपास सर्जरी :

मुम्बई के सर जे.जे. अस्पताल के प्रमुख हृदय शल्य चिकित्सक डा. जी.एन. राच माले ने इस नयी तकनीक से पहला ऑपरेशन 24 सितम्बर 97 को किया । इस तकनीक का नाम 'मिनिमल इनवेसिव कोरोनरी सर्जरी' है । संक्षेप में इसे 'मिकास' भी कहा जाता है । यह तकनीक गरीब लोगों के लिए वरदान है । क्योंकि इसमें खर्च 10 हजार होता है । 'मिकास' तकनीक में 'इस्मोलोल' का इंजेक्शन लगाकर दिल की धड़कन प्रति मिनट 40 कर दी जाती है और रक्तचाप को 70-80 के बीच रखा जाता है । उसके बाद मरीज को बेहोश करके दिल के पेरीकाडियम यानि आवरण को खोल दिया जाता है ।शल्य क्रिया में बायीं तरफ की स्तन की धमनी को काटकर प्रत्यारोपण के लिए निकाला जाता है । इस ऑपरेशन में ढ़ाई घन्टे का समय लगता है । पहले ऑपरेशन में डा. राच माले को डा. जी.ए. सराते, डा. भरत शाद्र, डा. आशुतोष हरडीकर और डॉ. उदय जाघव ने सहयोग दिया ।

स्ट्रेण्टोकाइनेज :

स्ट्रेण्टोकाईनेज हृदय के धमनियों में कलॉट को घोलने का कार्य करती है । जो कि 90% दिल के दौरे के कारण होता है । यह दवा इंजेक्शन द्वारा बाँह की वेन से हृदय तक आसानी से पहुँच जाती है और उसे घोल देती है, जो इण्ट्राकोरोनरी तरीके से कहीं ज्यादा बेहतर, सरल, सस्ता और हानि रहित है ।

रॉकसीथ्रोमाइसनि :

रॉक्सीथ्रोमाइसिन एक एण्टिवायोटिक दवा है जो सी. न्यू मोनाई के प्रतिकार (एण्टीजन) के रूप में काम करता है । हृदय के प्रमुख विकारों को रोकने की वर्तमान विधियों को रॉक्सीथ्रोइसिन उपयोग के साथ जोड़कर डाक्टरों ने बार-बार होने वाले हृदयाघात और हृदयरोग से हाने वाली प्रमौतों को रोकने में काफी हद तक सफलता पायी है ।

हृदय रोगों के उपचार में भारत अमेरिका से कहीं आगे

मुम्बई के बालाभाई नानावती अस्पताल के डॉक्टरों ने भाभा अणु शोद्य केन्द्र (BARC) के सहयोग से 'रेडियोएक्टिव स्टेण्ट्स' को हृदय की धमनियों में सफलतापूर्वक प्रत्यारोपित किया है। इसके सफल प्रत्यारोपण से रोगियों में 'एन्जियोप्लास्टी' सर्जरी के बाद होने वाली जटलिता 'रेस्टेनोसिस' (जिसमें हृदय धमनियों में अवरोध पैदा हो जाता है) से मुक्ति मिल गयी । भारत की इस चिकित्सा उपलब्धि ने इसे विश्व स्तर पर प्रतिष्ठित कर दिया है, बल्कि इस क्षेत्र में भारत ने अमेरिका को पीछे छोड़ दिया है ।

एम.सी.ईयर इम्पलाण्ट :

अब बहरे भी सुनेंगे आराम से-युनिवर्सिटी ऑफ नार्थ केरोलिना अस्पताल के विशेषज्ञों ने ऐसे मल्टी चैनल ईयर इम्पलाट विकसित किये है, जिससे बहरे व्यक्ति भी आराम से सुन सकेंगे । पुराने श्रवण यंगों में केवल एक चैनल होता है लेकिन इस आधुनिक इम्पलाण्ट में 3 चैनल या कम्प्युटर प्रोग्राम होते है जो आवाज को तीन अलग-अलग तरीके से प्रोसेस करते हैं ।

हृदय रोग का उपचार बिना सर्जरी के :

वत्रा अस्पताल, नई दिल्ली ने "एऽजाइना" से पीड़ित हृदय रोगियों के उपचार हेतु बिना सर्जरी के परक्यूटेनिअस ट्रांसल्युमिनल शुरुआत की है ।

टेलीप्रेजेन्स : 'टेलीप्रेजेन्स' टैली मेडिसिन का विकसित संस्करण है । इस तकनीक के तहत लाखों मील दूर बैठकर चिकित्सक स्वयं अपने हाथों से ही रोगी की क्रिया कर सकता है । इस चिकित्सा तकनीक का आविष्कार भारतीय मूल के अमेरिकी डा. अजित साह ने किया है ।

एन. बुटिल-2 सायनोक्रिल :

हैदराबाद स्थित भारतीय रसायन प्रौद्योगिकी संस्थान के वैज्ञानिकों ने एन. बुटिल-2 सायनोक्रिल नामक ऐसा रासायनिक पदार्थ ईजाद किया है । इसका इस्तेमाल सर्जन ऑपरेशन के दौरान काटे गए हिस्से को जोड़ने के लिए कर सकेंगे । जर्मनी के बाद भारत दूसरा देश है जिसने यह उत्पाद बनाया है ।

संकलन : संजय कुमार मंगलम्, संवाददाता

सेहत सलाह

शिवाम्बु चिकित्सा

❑ वैद्यराम ब्रत प्रसाद

14 अगस्त, 1997 की आधी रात के बाद से देश-विदेश में भारत की स्वतंत्रता की स्वर्ण शिवाम्बु अर्थात स्वमत्र चिकित्सा पद्धति इधर कई असहाय लोगों के लिए रामवाण सिद्ध हो रही है। मानव के पेशाब में शरीर के लिए लगभग उन्नीस आवश्यक खनीज पदार्थ निर्धारित मात्र में उपलब्ध हैं । शरीर से बाहर आने पर मूत्र में धूप और ऑक्सीजन के संयोग से रसायनिक परिवर्तन होते है इसकी गुणवत्ता बढ़ती है। शास्त्रों एवं अन्य ग्रन्थों में इसे अमृत माना गया है जिसके वाह्य प्रयोग भी हैं। वैद्य रामब्रत प्रसाद जो बिहार सरकार के बपर समाहर्त्ता के पद पर रह चुके है ने दावा किया है कि वे अपने वैयक्तिक अनुभव के आधार पर इस चिकित्सा पद्धति से कई असाहय घाव, फोड़ा फुन्सी, दर्द, कैंसर गलित कुष्ठ, दमा, तपेदिक, गलित सुजाक, शोरलटीस, एक्जिमा, मधुमेट, गढिया, बात गैस्ट्रिक आदि रोगियों का सफल एवं नि:शुल्क चित्सिा करके उन्हे जीवन प्रदान किया है । यहाँ तक कि एड्स के रोगी भी स्वस्थ हो गए हैं ।

वस्तुत: इस पद्धति के द्वारा मिथ्या आधार-विहार से उत्पन्न विषैले पदार्थ को शिवाम्ब पान विधि से तेजी से शरीर के बाहर निकाला जाता है । इस प्राकृतिक गुण की उपलब्धि किसी कृत्रिम दवा में नहीं है । इसी कारण सर्प दशं की यह अचूक दवा है। इससे रोग-निरोधी अमता बढ जाती है । स्वस्थ व्यक्ति इसके सेवन से निरोग और दीर्धाय बना रहता है। इस पद्धति में अभी काफी शोध की आवश्यकता है ।

संपर्क : चाँदपुर-बेला, गया लाईन, पटना-1

रैली-रस्म

❑ गंगा प्र. पूर्वे 'गंगेश'

किसानों की बड़ी रैली,
यहाँ फैली, वहाँ फैली
सभी ने आँख भर देखा-
जहाँ थैली, वहाँ रैली ।

उनका कहना है

❑ भूख और बेरोजगारी के मामले में यह देश अव्वल नंबर है, इस मामले में कोई हमें चुनौती नहीं दे सकता ।

शरद यादव

❑ देश में गरीबी का जो समुद्र है उसमे एक दिन संपन्नता के सारे द्वीप डूब जायेंगे ।

-माधव राव सिंधिया

❑ समाज को ढ़ोना असंभव है ।

-तवलीन सिंह

❑ देश को बनाने के लिए पोथी का ज्ञान जरूरी नहीं है । आम आदमी की आकांक्षा, आवश्यकता और पीड़ा का अहसास होना चाहिए । ऐसा व्यक्ति जो गांवों को जानता हो, वह देश को ठीक से चला सकता है ।

-चन्द्रशेखर (पूर्व प्रधानमंत्री)

❑ कहाँ जायेगा यह देश ? देश की संसद को हमने मछली बाजार बना डाला है ।

- अटल बिहारी बाजपेयी

मंच के क्रिया-कलापों पर एक नजर

□ मनोज कुमार

1. लौहपुरूष सरदार पटेल की 121वीं जयन्ती पर दो दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन :

राष्ट्रीय विचार मंच के तत्वावधान में विगत 31 अक्टुबर 1996 को संध्या6 बजे पटना के वीरचन्द पटेल पथ स्थित 'रवीन्द्र भवन' में लौह पुरूष सरदार वल्लभ भाई पटेल के 121वें जयंती-समारोह का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन बिहार विधान सभा अध्यक्ष माननीय श्री देवनारायण यादव ने किया। उन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में सरदार पटेल के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए देश की राजनीति एवं सार्वजनिक जीवन से जुड़े लोगों में बढ़ते भ्रष्टाचार पर विस्तार से प्रकाश डाला। समारोह के विशिष्ट अतिथि श्री नीतीश कुमार, सांसद ने लौह पुरूष पटेल के प्रति श्रद्धा निवेदित करते हुए देश को बाहरी खतरों से सावधान करने के साथ-साथ भीतरी देश-द्रोहियों एवं समाज विरोधी तत्वों पर भी कड़ी नजर रखने की आवश्यकता पर बल दिया। श्री कुमार ने मंच के क्रिया-कलापों को मुक्त कंठ से सराहा। ले.जे. एस. के. सिन्हा ने सेना में अपनी सेवा अवधि के कई संस्मरण को प्रस्तुत करते हुए सरदार पटेल की राष्ट्रीयता एवं दूरदर्शिता की भूरी-भूरी प्रशंसा की। समारोह को बिहार राज्य आवास बोर्ड के अध्यक्ष तथा विधायक श्री रामधनी सिंह, ने भी संबोधित किया। मंच के अध्यक्ष तथा भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी श्री जियालाल आर्य ने समारोह की अध्यक्षता की तथा मंच के महासचिव श्री सिद्धेश्वर ने मंच का प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए उसके क्रिया-कलापों पर विस्तृत चर्चा की। इस अवसर पर प्रकाशित स्मारिका का लोकार्पण विधानसभा अध्यक्ष ने किया। बिहार के सूचना एवं जन-संपर्क विभाग के सौजन्य से समारोह के अंत में एक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

2. सेमिनार का आयोजन :

इसके एक दिन पूर्व यानी 30 अक्टूबर, 96 को मंच की ओर से पटना के अनुग्रह नारायण सिंह समाज अध्ययन संस्थान के सभागार में एक सेमिनार का आयोजन किया गया जिसका विषय था—"सरदार पटेल यदि भारत के प्रथम प्रधानमंत्री होते तो क्या होता ?" सेमिनार के अपने उद्घाटन भाषण में बिहार अन्तरविश्वविद्यालय बोर्ड के अध्यक्ष तथा सुपरिचित आलोचक **डा. कुमार विमल ने कहा कि सरदार पटेल यदि भारत के प्रथम प्रधानमंत्री होते तो देश की स्थिति आज दूसरी होती तथा देश की गरीबी, भ्रष्टाचार, अत्याचार पर बहुत कुछ नियंत्रण रहता।** सेमिनार में सुप्रसिद्ध इतिहास वेत्ता एवं पटना विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष डा. वी.पी. सिन्हा तथा के.पी. जायसवाल शोध-संशोधन, पटना के निदेशक डा. चितरंजन प्र. सिन्हा ने भी अपने विचार व्यक्त किया। ए..एन. सिंहा इंस्टीच्यूट के निदेशक प्रो. युवराज देव प्रसाद ने सेमिनार की अध्यक्षता की। विषय प्रर्वतन तथा मंच संचालन किये श्री सिद्धेश्वर ने तथा मंच के उपाध्यक्ष डा. एस.एफ.रब ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

3. डा. राजेन्द्र प्रसाद की 112वीं जयंती पर विचार संगोष्ठी का आयोजन :

मंच के द्वारा विगत 3 दिसम्बर 1996 को 11.

संगोष्ठी में आलेख प्रस्तुत करते डा. वी.पी. वर्मा तथा चित्र में बैठे हैं डा. पी. दयाल एवं डा. एस.एन.पी. सिन्हा

30 बजे पूर्वाह्न, पटना ए.एन. सिन्हा के संस्थान में देश के प्रथम राष्ट्रपति देश रत्न डा. राजेन्द्र प्रसाद की 112वीं जयंती के अवसर पर एक विचार संगोष्ठी का आयोजन किया गया। विषय था **'भारतीय राजनीति का अवमूल्यन और डा. राजेन्द्र प्रसाद।'** अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सुप्रसिद्ध राजनीतिज्ञ चिंतक एवं विचारक तथा पटना विश्वविद्यालय कें राजनीति विज्ञान के पूर्व विभागाध्यक्ष डा. विश्वनाथ प्र. वर्मा इस विषय के मुख्य अतिथि वक्ता थे। उन्होंने अपने आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि आज के राजनीतिक दल और उसके नेता जनता और सरकार के बीच सत्ता के दलालों की तरह आचरण करते है और वे अपनी सत्ता पर हर कीमत में बने रहना चाहते है, जिसके परिणामस्वरूप आज सारी सत्ता कुछ मुट्ठी भर हाथों में सिमट कर रह जाती है। उन्होंने पुनः कहा कि डा. राजेन्द्र प्रसाद सरदार पटेल की तरह महात्मा गांधी का सच्चा अनुयायी होना एक स्वतंत्र राजषी राजनीतिज्ञ होने की अपेक्षा अधिक पसन्द करते थे। संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त भूगोलवेत्ता तथा मगध विश्वविद्यालय के पूर्व कूलपति डा. पी. दयाल ने कहा कि राष्ट्र के पुर्निर्माण के लिए मुद्दा के बजाय दृष्टि पर बल देते हुए आज की राजनीति को गलीज कहकर 'श्यापा' करने की मानसिकता को छोड़ना आवश्यक है। पटना विश्वविद्यालय के कुलपति डा. एस.एन.पी. सिन्हा ने जहाँ संगोष्ठी की अध्यक्षता की वहीं भारत सरकार के विभिन्न पदों पर पदस्थापित तथा भा.प्र.से. के वरिष्ठ अधिकारी श्री एल. दयाल तथा इतिहास वेत्ता श्री वी.पी. सिन्हा ने भी विषय पर अपने विचार व्यक्त किये। मंच के महासचिव श्री सिद्धेश्वर ने अपने विषय प्रर्वतन के दौरान कहा कि जातिवादिता और साम्प्रदायिकता देश और समाज के विखंडन का मूल तत्व है। जिसके कारण जनादेश भी विखंडित होता है और यह लोकतंत्र के लिए खतरे की घंटी है। उन्होंने पुनः विषय को और स्पष्ट करते हुए बताया कि राजनेताओं की दूर्नीतियों एवं मतदाताओं की अपरिवक्ता के कारण एक से एक चरित्रवान, त्यागी तथा राष्ट्र समर्पित लोगों को लोकतांत्रिक संरचना में जन प्रतिनिधित्व नहीं मिल पा रहा है। फलतः बाहुबलियों, जातिबलियों, धनपशुओं तथा अपराधी तत्वों का एकाधिकार बढ़ता जा रहा है। आज का लोकतंत्र इनके विनाशकारी खेल से वैचैन तथा बेहाल है जिससे छुटकारा पाने के उपायों पर विचार करने के लिए आज की यह संगोष्ठी आयोजित है।

4. "रेणु" की 76वीं जयंती पर साहित्यिक-संगोष्ठी

मंच की ओर से विगत 4 मार्च 1997 को पटना के बुद्धमार्ग स्थित भारतीय व्यापार प्रबंधन संस्थान के सभागार में कथा-शिल्पी एवं समाजवादी आंदोलन के प्रणेता फणीनश्वर नाथ 'रेणु' की 76वीं जयंती के अवसर पर एक साहित्यिक संगोष्ठी आयोजित हुई। जिसका उद्घाटन किया अन्तरविश्वविद्यालय बोर्ड के अध्यक्ष डा. कुमार विमल ने। उन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि आज हम उसी रेणु की जयंती मना रहे हैं जिसने हिन्दी के माध्यम से भारतीय साहित्य को समृद्ध किया और उसी रेणु की जिसने अपने अस्तित्व को जरूरत पड़ने पर सृजन की बलिवेदी पर चढ़ा दिया। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि डा. श्यामनंदन शास्त्री, हिन्दी विभागाध्यक्ष, पटना कॉलेज ने कहा कि अपनी जिंदादिली के लिए, अपनी क्रांतिकारी विचारों के लिए तथा तानाशाही संघर्ष के लिए, अपनी जिवीषा के लिए 'रेणु' आज भी जिन्दा है। संगोष्ठी को बिहार के महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पटना श्री अरूण कुमार सिंह ने आज की संगोष्ठी की सार्थकता को उचित बताते हुए कहा कि औराहीं हिंगना गांव के एक साधारण किसान परिवार में जन्में 'रेणु' ने अपनी कथाओं में शोषित, पीड़ित, दलित तथा प्रताड़ित आमजनों को वाणी दी। इसके पूर्व डा. भीमराव अंबेदकर बिहार विश्वविद्यालय के जैतपुर स्थित श्री रा.प्र. सिंह महाविद्यालय में हिन्दी विभाग के रीडर डा. रवींद्र उपाध्याय ने 'रेणु' की कथाओं में आतंरिक लयात्मकता और गेयता विषय पर एक मार्मिक एवं विद्वतापूर्ण आलेख प्रस्तुत किया जिसे इस पत्रिका में अलग से प्रस्तुत किया गया है। इसके पूर्व मंच के महासचिव श्री सिद्धेश्वर वे संगोष्ठी के विषय को प्रस्तुत करते हुए कहा कि 4 मार्च 1921 को पूर्णिया जिले के एक पिछड़े गांव में जन्में फणीश्वर नाथ 'रेणु' की हम 76वीं जयंती मनाने जा रहे हैं जिसने पूर्णियां की हथेली पर भारतीय किसानों की नियति रेखा को उजागर किया। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए कवि सत्यनारायण, डा. रवीन्द्र राजहंस, श्री ब्रजनंदन सहाय मोहन प्रेमयोगी' चिंतक विद्यानंदन सहाय तथा नवोदित कवि मनोज कुमार ने भी रेणु के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। संगोष्ठी के प्रारंभ में बी.एन. कॉलेज, पटना के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. राम बुझावन सिंह ने संगोष्ठी में उपस्थित सुधी श्रोंताओं एवं साहित्यानुरागियों के साथ-साथ मान्य अतिथियों का स्वागत किया। मंच के अध्यक्ष श्री जियालाल आर्य ने संगोष्ठी की अध्यक्षता की तथा मंच के उपाध्यक्ष डा. एस. एफ रब ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

5. विचार संगोष्ठी का आयोजन :

मंच के तत्वावधान में गत 30 मार्च 1997 को संध्या 5 बजे ए.एन. सिंहा संस्थान के सेमिनार हॉल में "चुनाव की चुनौतियाँ" विषय पर एक विचार संगोष्ठी का आयोजन हुआ। जिसका उद्घाटन किया बिहार के पूर्व लोकायुक्त माननीय न्यायाधीश श्री सरवर अली ने तथा श्री जियालाल आर्य ने अध्यक्षता की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पटना उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री धर्मपाल सिंह तथा विशिष्ट अतिथि प्रो. युवराजदेव प्रसाद, निदेशक ए.एन. सिंहा संस्थान ने चुनाव की विभिन्न विसंगतियों पर विस्तार से चर्चा की। भाजपा के महासचिव एवं प्रवक्ता श्री सरयु राय तथा समता पार्टी के प्रवक्ता श्री पी.के. सिंहा जो संगोष्ठी के विशिष्ठि अतिथि वक्ता थे, ने अपने अनुभव एवं चुनाव के दौरान सच्चाइयों, उसकी त्रुटियों एवं भारत की संसदीय लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में चुनावी प्रक्रिया पर अपने-अपने दृष्टिकोण रखें। संगोष्ठी के अंत में उपस्थित प्रबुद्धजनों ने भी संगोष्ठी के विषय पर

अपने-अपने विचारों का आदान-प्रदान किया । इस अवसर पर बिहार के राज्यपाल के शिक्षा सलाहकार तथा पटना विश्विविद्यालय के पूर्व कुलपति डा. एस.एन. दास ने भी विषय की गहराई में जाकर उपस्थित प्रबुद्धजनों को एक अच्छी-खासी मानसिक खुराक प्रदान की । विषय के अनुरूप श्री विपिन विप्लवी की पुस्तक 'चुनाव की गंभीर चुनौतियां' का इस अवसर पर लोकार्पण भी हुआ । प्रारंभ में डा. एस.एफ. रब ने मान्य अतिथियों एवं संगोष्ठी में भाग लेने वाले सभी श्रोताओं का स्वागत किया और श्री मनोज कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन किया ।

6. अम्बेदकर जयंती के अवसर पर एक काव्य-संध्या का आयोजन :

भारतीय संविधान के निर्माता डा. भीमराव अंबेदकर के 105वें जयंती-समारोह के अवसर पर राष्ट्रीय विचार मंच के नव निर्मित केन्द्रीय कार्यालय प्रांगण में विगत 14 अप्रैल 1997 को संध्या5 बजे एक सुरूचिपूर्ण काव्य-संध्या का आयोजन किया गया जिसमें नगर के प्रतिष्ठित कवियों ने अपने काव्य-सुधा-रस का पान श्रोताओं को कराया । इस काव्य-संध्या के ज्योति-पर्व का उद्‌घाटन सुप्रसिद्ध साहित्यकार प्रो. रामबुझावन सिंह ने किया । मुख्य अतिथि आकाशवाणी, पटना के पूर्व केन्द्र निदेशक श्री बांकेनंदन प्र. सिंहा भी इस अवसर पर उपस्थित थे । डा. अम्बेदकर के जयंती-समारोह की अध्यक्षता मंच के संपोषक सदस्य डा. साधुशरण ने की । उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि बदलते परिवेश में प्रबुद्ध एवं आम सुधीजनों को अपनी मानसिकता में भी बदलाव लाने की आज आवश्यकता आ पड़ी है । समारोह के द्वितीय चरण में आयोजित लालित्यपूर्ण काव्य-संध्या में जिन कवियों ने अपने काव्य-पाठ से श्रोताओं को सराबोर किया उनमें कविवर राम संजीवन शर्मा, मृत्युंजय मिश्र 'करूणेश', दारोगा शर्मा 'शैलशिखर', रामविनय सिंह 'विनय' जर्नादन मिश्र 'जलज', सिद्धेश्वर, अरूण कुमार गौतम, सुरेश कुमार लाल, आदित्य प्रकाश सिंह, हरीन्द्र विद्यार्थी, विजय गुंजन, मंजु मल्लिक 'मनु', कामेश्वर मानव, नृपेन्द्र नाथ गुप्त तथा चन्द्र प्रकाश माया का नाम उल्लेखनीय है । आयोजन के प्रारंभ में मंच के महासचिव श्री सिद्धेश्वर ने मान्य अतिथि एवं कवि बंधुओं का स्वागत किया तथा मंच के संयुक्त सचिव श्री शिवकुमार सिह ने मंच की ओर से सभी श्रोताओं एवं कवि बंधुओं के प्रति आभार व्यक्त किया ।

7. मंच के द्वारा प्रकाशित काव्य संग्रह "यादें" का लोकार्पण समारोह

मंच के निष्ठावान सदस्य कविवर स्व. डा. भोला प्र. सिंह तोमर की प्रथम पुण्य तिथि के अवसर पर राष्ट्रीय विचार मंच के द्वारा उनकी स्मृति में सहकारिता के आधार पर प्रकाशित काव्य-संग्रह "यादें" का लोकार्पण समारोह विगत 27 अप्रैल, 1997 को संध्या 4 बजे पटना के बुद्धमार्ग स्थित आई.बी.बी.एम. के सभागार में हुआ । समारोह के उद्‌घाटनकर्ता बिहार के राष्ट्रीय बचत एवं वाणिज्यकर मंत्री श्री उपेन्द्र प्र. वर्मा ने काव्य संग्रह "यादें" का लोकार्पण करते हुए कहा कि बिहार के एक सच्चे साहित्यकार एवं कवि स्व. तोमर के प्रति एक सच्ची श्रद्धांजलि कर मंच ने अपनी रचनाधर्मिता तथा क्रियाशीलता का परिचय दिया है । मुख्य अतिथि तथा एक सुपरिचित उपन्यासकार डा. भगवतीशरण मिश्र ने कवि तोमर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला । बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् के पूर्व निदेशक तथा विद्यालय सेवा बोर्ड के अध्यक्ष प्रो. महेन्द्र प्र. यादव ने तोमर के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उन्हें एक सजग साहित्यकार बताया । 'निर्माता-निदेश' के संपादक श्री हृषीकेष पाठक एवं डा. शिवनारायण ने भी मंच के द्वारा स्व. तोमर की यादगार ताजा रखने हेतु प्रकाशित इस काव्य-संगह **यादें** की मुक्त कंठ से सराहना की । मंच के अध्यक्ष श्री जियालाल आर्य ने अपने अध्यक्षीय भाषण के वक्त स्व. तोमर के बड़े सुपुत्र श्री संजय कुमार सिंह तोमर को पथ निर्माण विभाग में तृतीय श्रेणी की नौकरी अनुकम्पा के आधार पर दिलाने का आश्वासन दिया । विदित हो कि श्री संजय ने कुछ ही

'यादें' का लोकार्पण करते हुए श्री उमेन्द्र प्र. वर्मा तथा उनकी बायीं ओर खड़े हैं श्री जियालाल आर्य तथा डा. भगवतीशरण मिश्र और बायीं ओर श्री सिद्धेश्वर तथा प्रो. महेन्द्र प्र. यादव

निधन/श्रद्धांजलि

अनजान : मशहूर फिल्म गीतकार अनजान का 4 सितम्बर को दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया । वे 6 वर्ष के थे । उनकी मृत्यु पक्षाघात के कारण हुई । कई हिट फिल्मों के लोकप्रिय गीत लिखने वाले अनजान मूलतः वाराणसी के निवासी थे । उन्होंने 'डॉन' और 'मुकद्दर का सिकन्दर' जैसी लोकप्रिय फिल्मों की गीत-रचना की 14 सितम्बर 97 ।

गुलशन कुमार : प्रसिद्ध फिल्म निर्माता और टी. सीरिज ग्रुप ऑफ कम्पनीज के मालिक गुलशन कुमार का मुम्बई स्थित उनके निवास स्थान के समीप अज्ञात अपराधियों के हमले में निधन हो गया । 12 अगस्त 97 ।

मदर टेरेसा : करूणामय एवं ममतामय लोक सेविका थी । 13 मार्च 1997 को अपने संघ के प्रमुख पद से हट गयी । 5 सितम्बर 97 को चिर निद्रा में लीन हो गयी । सेंट मेरीज कन्वेंट कलकत्ता में मदर टेरेसा शिक्षिका के रूप में अपना कर्मजीवन शुरू की थी । 17 साल उस के बाद वे 1946 ई. में पीड़ितों की सेवा के लिए कूद पड़ी थी । 50 वर्ष बाद उस शिक्षिका की जीवन ज्योति शिक्षक दिवस दिन ही बुझ गयी । दया की प्रतिमूर्ति, गरीबों की मसीहा मदर टेरेसा अंत्येष्टि पूरे राजकीय सम्मान एवं कैथोलिक ईसाई विधि से कलकत्ता के जगदीश चंद्र बसु मार्ग स्थित 'मदर हाऊस' में दफन के साथ संपन्न हो गयी । अंत्येष्टि में भारत के राष्ट्रपति के. आर. नारायणन, प्रधानमंत्री इन्द्र कुमार गुजराल व अमेरिका की प्रथम महिला हिलेरी क्लिंटन सहित 70 देशों की रानियां, राष्ट्रपतियों की पत्निया, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, पोप जान पाल द्वितीय के विशेष प्रतिनिधि आर्क विशप, बिशप सहित अनेक वर्गों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया । तिरंगे में लिपटे मदर टेरेसा के शव के उस तोप गाड़ी में रखा गया जिस पर महात्मा गाँधी और पं. जवाहर लाल नेहरू का शव रखा गया था ।

डा. धर्मवीर भारती : वरिष्ठ हिन्दी साहित्यकार और अपने समय के अत्यंत लोकप्रिय साप्ताहिक 'धर्मयुग' के पूर्व संपादक डा. धर्मवीर भारती का गत 4 सितम्बर 97 को निधन हो गया । वे 72 वर्ष के थे । संवदेनशील मन और प्रयोगधर्मी स्वभाव वाले डाक्टर भारती ने हिन्दी कविता और पत्रकारिता को नयी दिशा दी । 'सूरज का सातवाँ घोड़ा, गुनाहों का देवता, अंधा युग, कनुप्रिया' आदि उनकी सुप्रसिद्ध बहुचर्चित कृतियाँ है ।

दीप गंगा

- सभी आधुनिक सुविधा युक्त ब्लाक A तथा B में 1,2,3 एवं 4 बेड रूम का फ्लैट्स तथा विभिन्न साइजों में दुकान, कार्यालय, इंस्टीच्यूट, गोदाम इत्यादि उपलब्ध है ।
- 2 लिफ्ट सहित 24 घंटे पानी, बिजली की अपनी सुविधा ।
- S.B.I होम फाइनान्स द्वारा ऋण सुविधा ।
- दीप राज कम्पलेक्स, आर्य कुमार रोड, पटना-4, में सभी आधुनिक सुविधाओं के साथ कुछ फ्लैट एवं दुकान उपलब्ध हैं ।
- बुकिंग प्रारम्भ है ।

सम्पर्क करें :

गणपति बिल्डर

द्वारा-सुन्दरराज एजेन्सी

लंगर टोली, पटना-4, फोन-654908 (ऑफिस), 661522 (आवास)

(व्यवसायिक सह अवासीय कम्पलेक्स)

चौहट्टा (पटना कॉलेज के नजदीक) अशोक राज पथ, पटना

स्वभाव के निश्छल कवि तोमर

❑ सिद्धेश्वर

कविवर स्व. डा. भोला प्र. सिंह तोमर आज हमारे बीच नहीं हैं। विगत 27 अप्रैल, 1996 को विधाता के क्रुर हाथों ने उन्हें हमसे छिन लिया। **मृत्यु न केवल जिन्दगी में एक दर्दनाक घटना है बल्कि हमारे भीतर की बहुत सारी वस्तुएं मृत्यु हो जाती हैं। जबतक हम जीवित रहते हैं, मात्र यादें ही रह जाती हैं।** आज हम उनकी बातों को याद कर स्फूर्ति से भर जाते हैं। किसी लेखक का मानवीय दायित्व और चिंता यही होती है कि वह मनुष्य को बेहतर जीवन की ओर बढ़ने की प्रेरणा दे। इसलिए निरंतर जटिल होते हुए भी यथार्थ को पकड़ना रचनाकार का महत्वपूर्ण काम होता है। आखिर इसीलिए तो कवि तोमर ने "आओ पूजा करें, देश की उज्जवल माटी है" शीर्षक कविता में इन पंक्तियों से हमें प्रेरित करने का प्रयास किया है–

जीवन में मत घबराना सुख-दुख की घाटी है।
आओ पूजा करें, देश की उज्जवल माटी है।
इस माटी में जन्म जिया जो, शेर हो गया।
टकराने आया दुश्मन वह ढेर हो गया।

पिछले दो दशक में तोमर ने हिन्दी कविता में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। पाटलीपुत्र शहर के साहित्यिक- सांस्कृतिक परिवेश को बनाने में तोमर की विशेष भूमिका थी। वर्ष 1994-96 के दौरान साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधियों और दोस्तों के उठने-बैठने का केन्द्र अमरनाथ पथ का या तो अवर अभियन्ता संघ का कार्यालय था या फिर बेली रोड, स्थित जाकिर हुसैन संस्थान। पिछले दो-तीन वर्ष से 'बसेरा', पुरन्दरपुर स्थित राष्ट्रीय विचार मंच का केन्द्रीय कार्यालय भी साहित्यानुरागियों के लिए एक अच्छी खासी जगह बन गई है जहाँ साहित्यिक संगोष्ठी के बाद तोमर जी के साथ हमलोग या तो चाय की चुस्की लेते तथा देर रात तक राजकुमार प्रेमी, अनिमेश झा, बलभद्र कल्याण, विशुद्धानन्द, डा. मेहता नगेन्द्र सिंह, आनन्द किशोर शास्त्री, विजय गुंजन,

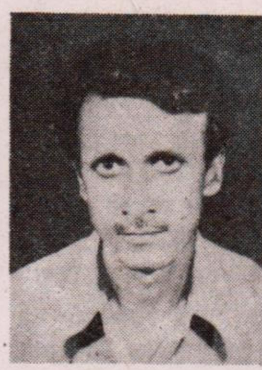

चन्द्र प्रकाश माया, प्रो. अभिमन्यु प्र. मौर्य, अरूण कुमार गौतम, मनोज कुमार तथा राकेश प्रियदर्शी के साथ गप्पे लड़ाते रहते थे। तोमर जी से मेरी मित्रता सीधी, सपाट और सरल थी। जबकि उनके स्वभाव से, जिन्दगी जीने के उनके ढंग से और जीवन शैली की कोई समानता नहीं थी, तो भी उनके प्रति मेरे लगाव और आकर्षण में कोई कमी नहीं थी। हो सकता है इसका एक कारण यह रहा हो कि हम दोनों लगभग हम उम्र थे। वे एक जनवरी, 1942 में पैदा हुए और मैं 18 मई, 1941 में। आज जब मैं उन्हें याद करता हूँ तो पाता हूँ कि उनमें खरापन और साफगोई हर सूरत में रहती थी। तोमर अपने प्रति, अपनी कविताओं के प्रकाशन के प्रति लापरवाह थे। कविताओं को संभाल-सहेजकर रखना उनके बस की बात नहीं थी। वह एक चलता फिरता कविता-संग्रह थे। यह तो कहिए कि राष्ट्रीय विचार मंच ने कवि भोला प्र. सिंह तोमर की स्मृति में गत 27 अप्रैल, 1997 को उनकी प्रथम पुण्य तिथि के अवसर पर **"यादें"** नामक एक काव्य संकलन प्रकाशित कर आम आदमी की चेतना को उत्प्रेरित किया गया जो हमारे आज के साहित्य संसार को जरूरत है।

कवि तोमर की काव्याभिव्यक्ति में मिथक और यथार्थ घुले-मिले रूप में उपस्थित हैं और पीड़ा अन्तः सूत्र कई स्तरों पर खुलता जाता है। मैं सचमुच बीमार हो गई" शीर्षक कविता में कवि तोमर कहते हैं–

पोर-पोर में दर्द हो रहा, पीड़ा से बेजार हो गई।
कुछ तो रहम करो अब प्रियतम मैं सचमुच बीमार हो गई।

उनकी कविता भीतर से फूटी है तभी तो वे कहते हैं–" चूभती है रह रहकर संध्या वसंत की,

वंध्या-सी आकांक्षा परती से भाव हैं

पोर-पोर सिहरन है, अंग अंग घाव है "

कवि तोमर हमारे समाज के एक ऐसे वर्ग से थे, जिसे आर्थिक दृष्टि से मध्यवर्ग कहते हैं। यह वह वर्ग है जो अभावों की चक्की में हमेशा पीसता रहता है और खुशहाली के सपने देखता है, जो कभी पूरे नहीं होते। गरीबी की तकलीफ और तनावों को उन्होंने बहुत करीब से अनुभव किया था। जीवन के अन्तिम वर्ष में लंबी बीमारी को झेलता हुआ और तपेदिक की एक छोटी-सी लड़ाई लड़ता हुआ तोमर उसी उदासी और हताशा के, पीड़ा और अन्तर्वेदना के अंधेरे दौर से गुजरे थे। लगातार इलायज के बाद बहुत कुछ वह ठीक हो हो गए, लेकिन मायुषी और टूटन से मुक्ति न पा सके। खैर, उन दिनों जब भी मैं उनसे मिला, एक छिन्न-सी मुस्कुराहट चुप्पी। वह चाहते थे कि चुप्पी की चट्टान को खिसका दें। लेकिन एक लाचार हकलाहट के सिवा वह कुछ भी नहीं कर पाते थे।

बहुत कम उम्र में तोमर जी का जाना एक बड़ी त्रासदी है। वे तमाम उम्र दोस्तों में रहे और उन्हीं की बाहों में अलविदा भी कहकर गए। मैं कह नहीं सकता तोमर के शेष दोस्त पटना में उस गर्मजोशी और स्निग्धता को कबतक और कितना बचाए रखेंगे जो पटना को उन्होंने अपनी कविताओं और जिन्दादिली से प्रदान की थी। पर इतना जरूर है कि तोमर की याद और उनकी कविताएं उस गर्मजोशी, स्निग्धता और उनके स्वभाव की निश्छलता की जरूरत को अपनी शिद्दत से रेखांकित करती रहेगी।

संपर्क : 'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1, दूरभाष : 228519

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम की उपादेयता

सुधीर रंजन

भारत वर्ष में उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 1986 द्वारा उपभोक्ताओं के हितों को संरक्षण प्रदान किया गया है । कोई भी व्यक्ति जो कहीं से अपने लिए सेवा लेता है और उस सेवा के बदले वह मूल्य अदा करता है तो वह व्यक्ति उपभोक्ता की श्रेणी में आ जाता है । बिजली, डाक, टेलिफोन से लेकर दवाइयाँ रोजमर्रे की चीज जैसे धनियां, नमक, तेल, हॉरलिक्स, चाय या दूसरी चीजों की आवश्यकता प्रतिदिन प्रतिव्यक्ति को रहती है तथा पैसे चुकाकर वह उपभोक्ता बनता रहता है । उपभोक्ता नहीं रहे तो उपभोग की वस्तुओं की बिक्री नहीं हो, कारखाने बंद पड़ जाय और न जाने कितनी दूकाने बंद हो जाय तथा विभिन्न सेवा प्रदान करने वाली संस्थाओं में कार्यरत कर्मचारी एवं पदाधिकारी की रोटियाँ छीन जाय । उपभोक्ताओं की इस महान भूमिका को अधिनियम ने स्वीकार किया और यह प्रावधान किया कि उन्हें घटिया माल, स्वास्थ्य को हानि पहुँचाने वाली सामग्री एवं घटिया सेवा नहीं दी जाय । यदि ऐसा होता है तो उपभोक्ताओं को ठगने वाले व्यक्ति को दंडित किया जाय । राज्य में दो स्तरों पर न्याय दिलाने की व्यवस्था की गई है–(1) जिला उपभोक्ता फोरम द्वारा और (2) राज्य आयोग द्वारा ।

पैसा या फीस लेकर चिकित्सा की सुविधा प्रदान करना भी उपभोक्ता अधिनियम के घरे में है । पटना के एक अधिवक्ता के.एन. लाल ने अपनी दायीं आँख का इलाज पटना के ही एक नेत्र चिकित्सक डा.आर.के. अखौरी से शुल्क देकर कराया । 14 अक्टूबर 1993 को उक्त चिकित्सक द्वारा ऑपरेशन किया गया । ऑपरेशन से 'इन्ट्रा आकुलर लेंस' फिट करना था । यह लैंस चिकित्सक द्वारा फिट नहीं किया जा सका, डा. ने बताया कि आँख की रोशनी धीरे-धीरे वापस लौट जायेगी । कोई सुधार नहीं पाने से उक्त अधिवक्ता मद्रास के शंकर नेत्रालय में जाकर जाँच करायी, तबतक उनकी दायीं आँख की रोशनी खत्म हो चुकी थी । मद्रास के चिकित्सकों ने बताया कि उनका ऑपरेशन नहीं होना चाहिए था । पटना के चिकित्सक की लापरवाही के कारण अधिवक्ता की आँख की रोशनी चली गई ।

अधिवक्ता ने बिहार राज्य उपभोक्ता फोरम में मुकदमा किया एवं फोरम ने चिकित्सक को पाँच लाख पचपन हजार रूपए मुआवजे के रूप में अधिवक्ता को देने का निर्णय सुनाया ।

अब शेयर से संबंधित मामलों की सुनवाई भी उपभोक्ता फोरम कर सकेगा ।

With Best Wishes From

televista®

Televista India Private Limited

8 & 10 Ashiana Galaxy, Ground Floor, Exhibition Road, Patna-800 001, Ph. : 664103
H.O. : 206, Ocean Plaza, Sector-18, Noida-201301 (U.P.) Phone : 8591193, 8591194

1. प्रहरी-8 (1997)

प्रधान संपादक-मनीष कुमार

संपादक-आनन्द मोहन झा

प्रकाशक-महालेखाकार (लेखा परीक्षा), बिहार, पटना-1

साहित्य संसार में विभागीय पत्रिका **'प्रहरी'** की भूमिका सरकारी कामकाज में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग की दिशा में उल्लेखनीय है। पत्रिका के इस आठवें अंक में एक साथ 'घोटाले की लेखा परीक्षा', लेखा परीक्षा का नया दौर, तथा 'कविता और मनुष्य की मुक्ति का कवि निराला' क्रमशः पी.के. मुखोपाध्याय, सिद्धेश्वर प्रसाद तथा खगेन्द्र ठाकर ये तीन पठनीय आलेख हैं। देश के बदलते परिवेश में लेखा परीक्षा की कार्य प्रणाली में परिवर्तन न केवल महत्वपूर्ण होगा बल्कि बदली हुई अपेक्षाओं के अनुकूल भी। राजनीतिक अस्थिरता के इस दौर में आए दिन हो रहे घोटाले-दर-घोटाले की लेखा परीक्षा तबतक कारगर और आँख खोलने वाली नहीं होगी जबतक उसकी कार्यशैली एवं प्रक्रिया की रूपरेखा को फिर से तय नहीं किया जाय। आज जिस प्रकार सारे देश में सस्ती लोकप्रियता हासिल करने तथा मतदाताओं को लुभाने वाली योजनाएं विभिन्न राज्य सरकारों के द्वारा लागू की जा रही हैं इस पृष्ठ भूमि में लेखा परीक्षा की भूमिका अहम हो जाती है। इस दृष्टि से श्री प्रसाद के लेख न केवल प्रासंगिक हैं बल्कि विचारोत्तेजक भी। वे बधाई के पात्र हैं।

अ.भा. प्रगतिशील लेखक संघ के महासचिव तथा जाने-माने समीक्षक डा. खगेन्द्र ठाकुर का निराला जी पर संस्मरण आत्मीय भी है और उनके रचनाकार को खोलने वाला भी है। वे एक जगह लिखते हैं –"निराला का ऐतिहासिक महत्व यह है कि वे क्रिया-काल आने का संकेत देते हैं और लोभ का उपक्रम करते हैं। यही भूमिका है जिसके कारण निराला के काव्य ने ऐसा विविधतापूर्ण, विराट और गतिशील स्वरूप प्राप्त किया था कि वह हिन्दी कविता के आगामी विकास को भी प्रभावित कर सका।" बिना किसी कविता पर टिप्पणी किए हुए इसकी कविताएं पठनीय है। पत्रिका की और सामग्री रोचक है फिर भी सुधार की काफी गुंजाइश है।

वर्तमान स्वरूप में पत्रिका समकालीन सृजन के साहित्यिक सरोकारों से गहराई से जुड़ी हुई है। सरकारी लेखा-जोखा एवं निरस लेखा परीक्षा के बीच रहकर भी वहाँ के अधिकारी एवं लेखा परीक्षकों ने अपनी रचनाओं से इसे सरस बनाने का प्रयास किया है जो स्तुत्य है।

2. भाषा भारती पत्रिका का प्रवेशांक (1997)

संपादक मंडल : **'मोहन प्रेमयोगी' नृपेन्द्र, 'आरवी' 'डा. शांति ओझा एवं एस. कृष्णन।**

प्रकाशक : अ.भा. भाषा साहित्य सम्मेलन, बिहार, वरनवाल श्री उदित आयतन,शेखपुरा, पटना, दूरभाष : 287587

पृष्ठ-122 : सहयोग राशि : पच्चीस रूपये।

बहुराष्ट्रीय कम्पनी के आगमन से हमारी संस्कृति तो प्रभावित है ही साहित्य और भाषा भी कम मार नहीं खा रही है। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक हो जाता है कि भाषा और साहित्य पर इस नई गुलामी के असर का आकलन सही वक्त पर किया जाय। अ.भा. भाषा साहित्य सम्मेलन की बिहार शाखा ने अर्द्धवार्षिक **'भाषा-भारती'** पत्रिका का प्रकाशन कर सम्भवतः उस ओर एक कदम बढ़ाया है जो निःसन्देह सराहनीय है।

राष्ट्रीय चेतना के संचार के लिए यह जरूरी है कि हमारी भाषा ग्राह्य हो जिसके लिए हिन्दी ही सक्षम है। पर इस हिन्दी भाषा के जिस विकृत रूप को प्रोत्साहित किया जा रहा है उससे हिन्दी भाषा की अस्मिता को खतरे में पड़ने की आशंका है। इसलिए इसे दोगली संस्कृति से बचाने का हर संभव प्रयास करना साहित्यिक संगठन का दायित्व हो जाता है। साहित्य और भाषा की समृद्धि के लिए सम्मेलन का यह प्रयास प्रशंसनीय है।

राष्ट्रीय भाषाओं को राष्ट्रीय जीवन में समुचित स्थान दिलाने तथा विदेशी भाषा की दासता से राष्ट्र को मुक्ति दिलाने के लिए संकल्पित इस पत्रिका में कविवर रघुनाथ प्र. विकल, पोद्दार रामावतार 'अरूण', ब्रजनन्दन सहाय 'मोहन प्रेमयोगी', कृष्ण कुमार विद्यार्थी 'नूर' 'साविर आरवी', डा. तेज नारायण कुशवाहा, डा. परमेश्वर गोयल, दारोगा शर्मा 'शैल शिखर', डा. भ्रमर चौधरी तथा डा. बालकृष्ण वर्मा जैसे साहित्य जगत के सुपरिचित हस्ताक्षरों की कविताएं न केवल मन पर एक अमिट छाप छोड़ती हैं बल्कि पाश्चात्य संस्कृति से हमें सचेत करने के साथ-साथ अपनी अस्मिता के प्रति जागरूक रहने की ओर इंगित करती हैं। सबों में बड़ी बात सरल तथा बोध गम्य भाषा में कही गयी है।

'प्रेमयोगी जी' की इन पंक्तियों को देखें –

प्राण मन से एक हो एक संस्कृति के पुजारी,
एक भारत वर्ष के हम इन्द्रधनुषी ज्योतिधारी।

इसी प्रकार कविवर विकल जी के भाव पर नजर डालें–

प्यार की वृतिका, जो जली, जल रही,
स्नेह सूखा नहीं, नेह टूटा नहीं।

कृष्ण कुमार विद्यार्थी की कविता तो भावों की डोली, भावनाओं की प्रतिभा है–

मैं लुटाता रहा केवल प्यार;
गीत की मधुमय सरस झंकार;
आंसुओं को भी बनाया गीत ।
शूल को भी किया अंगीकार ।

साहित्य समाज की बात भली प्रकार तभी कह सकता है जब जिनके बारे में साहित्य सृजन होना है उनके साथ उठना-बैठना भी हो । यदि ऐसा संभव हो तब ही साहित्य की भाषा लोक भाषा और उसका ध्येय लोकहित होता है । इसी का निर्वाह पत्रिका के स्तम्भ **भाषा** के अन्तर्गत प्रस्तुत डा. चन्द्रप्रकाश वर्मा, शम्भुनाथ जायसवाल, नृपेन्द्र नाथ गुप्त तथा प्रो. सिद्धेश्वर धारी सिन्हा के आलेखों में किया गया है ।

उमेश मोहन गुप्ता, आनन्द किशोर शास्त्री, डा. अरूणेन्द्र भारती की अंगिका कविताएं सुन्दर छन्दों में गढ़ी, नपे-तुले शब्दों में मढ़ी भावों के साथ-साथ विषय वस्तु को भी सहजता से संजोए है ।

प्रुफ सम्बन्धी अशुद्धियों से यह पत्रिका नहीं बच पायी है जिसकी ओर संपादक-मंडल का ध्यान अगले अंक में अवश्य जाएगा ।

3. "यादें" (कविता संग्रह)

संपादक	:	**सिद्धेश्वर**
प्रकाशक	:	राष्ट्रीय विचार मंच 'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना
पृष्ठ	:	96
मूल्य	:	पचीस रूपये ।

राष्ट्रीय विचार मंच की ओर से मंच के महासचिव श्री सिद्धेश्वर द्वारा संपादित काव्य-संग्रह **'यादें'** एक उल्लेखनीय संग्रह है । संकलन की कविताएं धारदार हैं । प्रायः अधिकतर कवियों ने ईमानदारी से अपनी रचनाओं में देश और समाज की उन विसंगतियों का उल्लेख किया है जिसका शिकार हमारा समाज सदियों से रहा है ।

आज की नारी की त्रासदी देखें-सरिता त्यागी' की इन पंक्तियों में–

मैं नारी हूँ क्षमा की प्रतिमूर्ति
मेरी जमी पर आने से
मेरे अपनों को ही दुःख हुआ
मेरी किलकारियों पर
अपनों की आँखें छलक आईं
मेरे फूल बनने पर
मेरे अपने मुर्झाने लगे
मुझे बार-बार
भविष्य की काँटों की याद दिलाने लगे ।

प्रस्तुत संग्रह में कोई इक्कीस कवियों की कुल छोटी-बड़ी 77 कविताएं एवं गजल हैं । संग्रह में नारी समस्या से संबंधित सरिता त्यागी एवं स्व. तोमर की अनेक कविताएं काफी सराहनीय हैं । हालाँकि यह भी सत्य है कि संग्रह की कुछ रचनाएं सतही हैं जो विरोध की ताकत के द्योतक हैं । संग्रह की यह विशेषता कही जाएगी कि इसमें उदीयमान नई प्रतिभाओं को प्रोत्साहन के ख्याल से स्थान दिया गया है । नारी आज रचना के हर क्षेत्र में मुखर है । डा. शशि की भी रचना औरतों की हर क्षेत्र में सक्रियता को रेखांकित करती है । इन कविताओं में जहाँ एक ओर आम आदमी की पीड़ा है वहीं कवि ने बड़े ही संवेदनशील ढंग से संवेदनहीनता की स्थिति का पर्दाफाश किया है । **'आज के लोग'** शीर्षक कविता में कवि कहता है –

यहाँ के लोग
जिन्हें हम इंसान कहते हैं
सहानुभूति जताने के लिए
हर पल मौके की तलाश में रहते हैं ।

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि सिद्धेश्वर के अनुभवों की नंगी पीठ संवेदनशील पाठकों की चेतना को झकझोरती है ।

आज हमारे समाज पर नैतिक संकट के काले बादल मंडरा रहे हैं । प्रति दिन उफनते घोटालों की बाढ़ में शासन-व्यवस्था भी चरमरा रही है, भ्रष्टाचार की आँधी में सारी मूल्य-मर्यादाएं छिन्न-भिन्न होती जा रही हैं । तभी कवि नृपेन्द्र नाथ गुप्त कहते हैं –

क्रांति की कोख से जन्मी तुम्हारी शासन-व्यवस्था
जिसकी तुम कभी निन्दा किया करते थे
तुमने अपने हाथ रंगे हैं
उन निर्दोष जनों के खून से
जिसकी रक्षा का
कभी तुम हम भरा करते थे !

इस संग्रह की एक विशेषता यह देखने में आई कि **राष्ट्रीय विचार मंच** के द्वारा इससे जुड़े एक ऐसे साहित्यकार, समीक्षक एवं कवि **स्व. डा. भोला प्र. सिंह तोमर** की यादगार को ताजा रखने हेतु उनकी स्मृति में प्रकाशित की गई है जिसका व्यक्तित्व बहुआयामी था और जो साहित्यकारों के बीच एक सेतु का काम करता था। स्मृतियाँ कहीं मानस-पटल से खिसक न जायं, इसलिए कवि तोमर की चुनी हुई रचनाओं का समावेश भी इस संग्रह में किया गया है जिसकी जितनी सराहना की जाय कम होगी । मंच ने इस संग्रह को प्रकाशित कर इस दिवंगत साहित्यकार के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की है । अन्य रचनाकारों ने श्रद्धांजलि स्वरूप कवि स्व. तोमर के आदर्शों को मूर्तरूप देने का प्रयास किया है जो अत्यन्त प्रशंसनीय है । ऐसा करके राष्ट्रीय विचार मंच ने नगर के और सभी साहित्यिक-संगठनों के समक्ष एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है ।

4. साठी मगही कविता संकलन

संपादक : **प्रो. दिलीप कुमार, प्रो. सुखित वर्मा**
प्रकाशक : मौर्य प्रकाशन, राम लखन महतो रोड पुराना जक्कनपुर, पटना-800 00
पृष्ठ : 66, मूल्य : 30 रूपए

कोई भी देश और समाज अपनी भाषा और बोली के माध्यम से ही उन्नति कर सकता है, इतिहास इसका साक्षी है । भावनात्मक दृष्टि से मातृभाषा का अपना महत्व होता है । आर्थिक-राजनीतिक जागरण के साथ-साथ मातृभाषा के प्रति भी जागरूकता पैदा होती है जिसे दबाने का प्रयास आत्मघाती होता है । जल और भाषा की प्रकृति एक है । फर्क सिर्फ यह है कि जल के स्रोत प्रकृति के भीतर है और भाषा के स्रोत आदमी के । भाषा के बिना कोई समाज या राष्ट्र लोथ है । इसलिए जब बोलने की गुंजाइश नहीं रहे, इशारा करता है–आदमी । उसे पता है कि इशारा भी आवाज उत्पन्न करता है । आदमी एक चलता-फिरता शब्द है । जब वह बोलता नहीं तब भी वह शब्दमय है ।

लोक भाषाओं में मगही का अपना महत्व है । यह न सिर्फ मगध क्षेत्र की भाषा है, बल्कि दक्षिणी बिहार के जनजातीय क्षेत्रों में भी बोली जाती है । इसको संस्कृति के संवाहक के रूप में देखना आज जरूरी हो गया है । इस दृष्टि से साठ कवियों के सौजन्य से **'साठी'**-मगही कविता संग्रह का प्रकाशन प्रशंसनीय है क्योंकि इससे इंकार नहीं किया जा सकता कि मगही भाषी क्षेत्र के लोग अभी भी मगही बोलने अथवा लिखने में संकोच का अनुभव करते हैं । इसलिए उसकी आज तक उपेक्षा की जाती रही है । अपेक्षा की जाती है कि मगही भाषी लोग अपने कथ्य को बिना हिचकिचाहट के पारदर्शी ढंग से पेश करें ताकि उसे समझने में कोई बाधा न आए ।

दरअसल हर भाषा की अपनी एक प्रकृति होती है और उसका अपना परिवेश होता है । चूकि मगही मूलतः मध्य एवं दक्षिण बिहार की भाषा है, जहाँ अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा आधार कृषि है । इसलिए जो भी पत्रिका मगही भाषा की हो, उसमें महत्वपूर्ण आर्थिक आधार पर ज्यादा से ज्यादा सामग्री दे ताकि उस क्षेत्र के लोग उसे पढ़ने में रूचि ले सकें ।

साठी काव्य संग्रह में एक से एक उत्साही तथा अनुभवी मगही कवियों के हृदय के उदगार के साथ-साथ भाव-चित्र भी देखने को मिलते हैं । कवियों में **प्रो. श्यामनन्दन शास्त्री** की **'मौसम फगुनाएल हे, डा. स्वर्ण किरण** की **'छितरायल अनुभूति', प्रो. रामप्रसाद सिंह पुण्डरीक** की **'रितुराज'**, विश्वनाथ मिश्र पंचानन की 'मत बांटऽभइया', प्रो. अभिमन्यु प्र. मौर्य की 'पिया के नामे पाती', प्रो. दिलीप कुमार के 'गीत', राजकुमार प्रेमी के 'परदूषण', राजेन्द्र कुमार योधेय की 'उरवा', रामगोपाल पाण्डेय की 'उहे असली नेता हथ' और प्रो. सच्चिदानन्द प्रसाद की 'भारत देश महान हे' रचनाएं पाठकीय संवेदना से जुड़कर कविता क्षेत्र का विस्तृत परिचय कराती हैं ।

सरल, सहज अभिव्यक्ति से जुड़ी संकलन की कविताओं में हरीन्द्र विद्यार्थी की 'कटनी', सिद्धेश्वर की 'जिनगी के सच', प. हरिदास जवाल की 'मगही के महिमा', सरिता कुमारी की 'बाल मजूर' तथा शिवप्रसादी लोहानी की 'ढनमनाहट' न केवल एक नया प्रभाव पैदा करती हैं बल्कि खुलकर यथार्थ को सामने रखती हैं जो वस्तुतः संकलन योग्य है ।

•••

Govt. Regd. 301/4-85 ☎35 3958

पाठक इंस्टीच्यूट

ऑफ इलेक्ट्रॉनिक्स एण्ड टेक्नोलॉजी

(भूतपूर्व वायु-सेना इलेक्ट्रॉनिक्स इंजिनीयर द्वारा संचालित संस्थान)

सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त I.T.I. के विभिन्न ट्रेड्स तथा SECT भोपाल द्वारा संचालित National Open School (Govt. of India) का Computer Radio, Tape, T.V., VCR, House Wiring, Home Appliances, ट्रॉसफॉर्मर, पंखा एवं मोटरवाइंडिंग के वोकेशनल (Vocational) कोर्स का प्रशिक्षण केन्द्र ।

पुरानी स्टेट बैंक बिल्डिंग, कंकड़बाग मेन रोड, पटना-800 020

The Photo Makers
AUTOMATIC COLOUR LAB

6-7, Sheohar Sadan, Fraser Road, Patna-800 001 INDIA
PHONE : 224868, 222955, Pgr. : 962571952

PRIME TUTORIAL

For I.I.T. (JEE) & C.B.S.E. (MED)
Opp. YOUNG MEN'S INSTITUTE, ASHOK RAJ PATH, PATNA-800 004

PHYSICS	CHEMISTRY
Conducted By	*Conducted By*
Prof. D.K. VERMA	**Dr. MANOJ RANJAN**

MATHEMATICS *Conducted By*
Prof. RAJIV RANJAN & Prof. C. PATHAK

For DETAIL CONTACT :
Mr. MUNNA
PREMIER COACHING, B.M. DAS ROAD, PATNA-800 004

भारतीय सिनेमा पथ भ्रष्ट

❑ कपिलदेव राय 'प्रभाकर'

फिल्मी कलाकारों के व्यक्तिगत जीवन में झांकने वाली फिल्मी पत्रिकाओं ने फिल्मों से कहीं अधिक अश्लीलता और उन्माद परोसा है ।

आजादी के समय तथा बाद में भी जब राजनेताओं को बड़ी श्रद्धा के साथ देखा जाता था और उनके नायकत्व का चित्रण फिल्मों में हिंसाधारी, भ्रष्टाचारी, बलात्कारी और अनैतिक तथा राष्ट्रद्रोही कृत्यों के सबसे बड़े खलनायक के रूप में दिखायी पड़ने लगे । समाज में व्याप्त आंशिक हिंसा व अनैतिकता का बड़े परदे पर वीभत्स चित्रण करके इन फिल्मों ने इन बुराइयों को और ज्यादा बढ़ावा दिया है । *संगीत का प्रभाव सीधा अर्न्तमन पर पड़ता है । इससे मनुष्य की अंतर्निहित शक्ति एव अन्तर्भूत भावना प्रगाढ़ होती है । वन्देमातरम् गीत से मिलने वाली ऊर्जा एवं 'ऐ वतन-ऐ वतन हमको तेरी कसम' से मिलने वाल संदेश ने जहाँ राष्ट्र भक्त की भावना को पुष्ट किया वहीं 'तू जहाँ-जहाँ चलेगा मेरा साया साथ चलेगा- जैसे गीतों ने प्रेम की उपमा को हृदयस्पर्शी ढंग से व्यक्त किया ।*

सत्तर के दशक के प्रारंभ से ही फिल्मों का मिजाज बदलना शुरू हो गया और वे राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक मूल्यों व भावनाओं से दूर होती गयी । शुद्ध रूप से व्यावसायिक फिल्मों की दौड़ में वीरता के स्थान पर हिंसा, सौंदर्य के स्थान पर नग्नता, हास्य के स्थान पर अश्लील संवाद और प्रेम के स्थान पर वासनापूर्ण दृश्यावली का प्रदर्शन होने लगा । फिल्मों की पटकथा में भी चोरों, डकैतों, भ्रष्टाचारियों के साथ-साथ राजनेताओं का दोगला चरित्र-चित्रण होने लगा ।

अस्सी के दशक में तो ऐसी फिल्मों की भरमार हो गयी और मनोरंजन के नाम पर हिंसा, नग्नता, फूहड़पन द्विअर्थी अश्लील संवादों की चासनी में लिपटी हुई घटिया फिल्मों का प्रदर्शन होने लगा । अश्लील फिल्मों और बेहूदे गानों की ऐसी आंधी चली कि 'चंदन सा बदन चंचल चितवन' (सरस्वती चंद्र) लिखने वाले इन्दीवर मेरी पैन्ट भी सेक्सी, (दुलारा) जैसा गीत लिखने लगे ।

अस्सी के बाद के काल खण्ड में भी राष्ट्रभक्ति पर आधारित अनेक फिल्में प्रदर्शित हुई हैं । आज की फिल्मों में कोई अच्छाई नहीं होती, कोई शिक्षा नहीं होती, कोई जन जागरण की बात नहीं होती या कोई संदेश नहीं होता ।

भारतीय समाज में आदिकाल से असत्य पर सत्य की, बुराई पर अच्छाई की विजय का वर्णन रहा है ।

संपर्क : मोगलपुरा, दरभंगा-846004

लौह पुरूष सरदार वल्लभ भाई पटेल के 122वें जयंती-समारोह के अवसर पर शुभकामनाओं के साथ :-

नालन्दा मेडिकल्स

मखनियाँ कुआँ, पटना-800 004

न्यू नालन्दा मेडिकल्स

खजांची रोड, पटना-800 004

"आकाश" कोच

पटना-हजारीबाग सर्विस

शुभ कामनाओं सहित

आपके विश्वास का रक्षक

कैमूर कम्पनी समूह

- ☆ कैमूर फाइनेन्स लिमिटेड
- ☆ कैमूर हाउसिंग (प्राइवेट) लिमिटेड
- ☆ कैमेक्स इण्डिया लिमिटेड

रजिस्टर्ड एवं कारपोरेट कार्यालय :

तीसरी मंजिल, कुमार टावर, बोरिंग रोड, पटना-1

फोन नं. 238615, 238640, 238961

अनेजा ग्रुप

(विभिन्न कम्पनियों का एक समूह)

ESTD.1984 ESTD.1984

के बढ़ते कदम

सम्पूर्ण देश में अपने ७ जोनल, ३६ रीजनल एवं ३०० शाखा कार्यालयों के सफल संचालन के साथ जनसाधारण की आस्था और विश्वास को शेयर मार्केट, फाइनेन्शियल सर्विसेज, ट्रेवल, एडवरटाइजिंग, पर्ल्स ज्वेलरी, निर्माण, प्लाण्टेशन्स, प्रकाशन, चेन स्टोर्स, इण्डस्ट्रीज, एग्रो फॉर्म, ऐडवेन्चर स्पोर्टस के क्षेत्रों में अर्जित कर :

अब
बुद्ध के प्रदेश
बिहार
में कार्यरत

अपनी विशेषताओं के साथ

ग्रुप की कम्पनियों में कार्यरत अधिकांश उच्चाधिकारी - सेना के अवकाश प्राप्त वरिष्ठ अधिकारी ।

वर्तमान व्यवसाय रू. ३०० करोड़ से बढ़ाकर रू. १००० करोड़ करने का लक्ष्य वित्तीय वर्ष सन् १९९९ के अंत तक ।

ग्रुप के अन्तर्गत पहले से कार्यरत १२ कम्पनियों का पब्लिक लिमिटेड में परिवर्तन एवं अन्य १० कार्यरत कम्पनियों का निकट भविष्य में पब्लिक लिमिटेड करना ।

प्रधान कार्यालय : मॉडल हाऊस के पीछे, पंजा गुट्टा, हैदराबाद - ५०००८२
फोन : २१७४९१, ३३१४३२६, ३३१९३९१, ३३२६३०, २१६३२५, २१७०८२
फैक्स : (०४०) - ३६४४२८

सब-जोनल ऑफिस (बिहार सब-जोन) :
७०१, जगत ट्रेड सेन्टर, फ्रेजर रोडं, पटना - ८०० ००१
फोनः २३९८५९ फैक्स ०६१२- ६७३००६

जन- जन की आस्था और विश्वास का प्रतीक

राष्ट्रीय विचार मंच : एक परिचय

प्रस्तावना (Preamble) : राष्ट्रीय विचार मंच जनहित एवं राष्ट्र हित से संबंधित सामाजिक, आर्थिक, साहित्यक एवं वैज्ञानिक विकासात्मक विचारों को मंच प्रदान करने का एक सशक्त माध्यम होगा तथा समाज के प्रबुद्ध और सक्रिय अंगों को राष्ट्र की मुख्य धारा से जोड़कर स्वस्थ, सामाजिक सांस्कृतिक एवं साहित्यक मानदण्डों के निर्माण में योगदान देगा तथा संवेदनशीलता एवं गत्यात्मकता प्रदान कर ऐसे स्वस्थ एवं नैतिक वातावरण को तैयार करेगा, जिससे समाज में धारक मूल्यों के प्रति आस्था एवं प्रतिबद्धता बढ़े तथा राष्ट्रीयता की भावना जागृत हो। मंच देश के विशाल किन्तु संकीर्ण दायरों और मान्यताओं के कारण विभाजित जन–समुदाय को भेद–भाव एवं पूर्वाग्रह से मुक्त कर एक साथ खड़ा करने का प्रयास करेगा, जिससे कि सामाजिक न्याय, सहयोग एवं सौहार्द्र पर आधारित एक नई राष्ट्रीय चेतना का निर्माण हो सके।

मंच वैचारिक अभिव्यक्ति का एक ऐसा सार्थक मंच है जिसके द्वारा सामाजिक, अर्थिक एवं राजनीतिक गोष्ठी, परिसंवाद, परिचर्चा एवं काव्य संध्या का आयोजन कर देश एवं समाज की ज्वलंत समस्याओं को निर्भीकता से विश्लेषण करता है। इस प्रकार विगत वर्षों से राजनीतिक एवं सार्वजनिक जीवन में बढ़ते भ्रष्टाचार, सामाजिक विभाजन, अपसंस्कृति के शोर–शराबे तथा अनेक परिवर्तनों को मंच ने रेखांकित किया तथा आम जन–मानस को कुरेदकर उनमें राष्ट्रीय चेतना जागृत करने का प्रयास किया है। तो आइए आप भी मंच के द्वारा चलाए जा रहे आन्दोलन का एक हिस्सा बनें :

1. **संपोषक सदस्य - 2000 रूपये**
2. **संरक्षक सदस्य - 1000 रूपये**
3. **आजीवन सदस्य - 500 रूपये**
4. **साधारण सदस्य - 25 रूपये वार्षिक**